04 - महाराष्ट्र हो या मिर्जापुर, कहानी सब जगह एक जैसी

05 - लोक मान्य विक्रम संवत् ही राष्ट्रीय पंचांग हो

06 - कुबेरेश्वरधाम पर उमड़ा आस्था का सैलाब, अंतिम दिन...

07 - जन अभियान परिषद जन-जन का अभियान बन रही...

A Daily News Magazine

भोपाल

मंगलवार, 04 मार्च, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 176, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

ट्रंप और पुतिनः क्या ये उदारवादी विश्व व्यवस्था का अंत है?

ग्रिगोर अतानेसियन

यूक्रेन पर हमले के बाद तीन साल तक, अमेरिका और उसके सहयोगियों ने रूस का बहिष्कार किया और उसे अंतरराष्ट्रीय कानून के उल्लंघन का दोषी माना। अब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अलग रुख अपनाया है। ट्रंप रूस के साथ अमेरिका के संबंधों को फिर से स्थापित कर रहे हैं। वो रूस को हमलावर कहने या यूक्रेन को युद्ध में पीड़ित घोषित करने से इनकार कर रहे हैं। शुक्रवार को डोनाल्ड ट्रंप और यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमीर ज़ेलेंस्की की बैठक हुई। इस दौरान यूक्रेन में युद्ध और इसे समाप्त करने के तरीके के बारे में खुलकर बहस हुई।

व्हाइट हाउस में ट्रंप और ज़ेलेंस्की के बीच हुई तीखी नोकझोंक के बाद कुछ लोगों को ऐसा लगता है कि अब 'उदार विश्व व्यवस्था' खत्म होने वाली है। इस बड़े दावे में कितनी वास्तविकता है? 'लिबरल वर्ल्ड ऑर्डर' (उदारवादी विश्व व्यवस्था) प्रतिबद्धताओं, सिद्धांतों और मानदंडों पर बनाए गए अंतरराष्ट्रीय संबंधों की व्यवस्था है। इसके मूल में अंतरराष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र की महासभा और सुरक्षा परिषद जैसी संस्थाएं हैं। 'उदार विश्व व्यवस्था' मुक्त व्यापार जैसे मूल्यों का भी प्रतिनिधित्व करती है, जिसे विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ), अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी संस्थाएं बरकरार रखती हैं।

इसमें सबसे बड़ी धारणा ये वैचारिक मान्यता है कि पश्चिमी उदार लोकतंत्र, सरकार के सर्वश्रेष्ठ मॉडल का प्रतिनिधित्व करता है। अंतरराष्ट्रीय क़ानून के उल्लंघन को संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्तावों या अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के फैसलों के ज़रिए आधिकारिक रूप से उठाया जा सकता है। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद आर्थिक प्रतिबंध लगा सकती है या चरम मामलों में सैन्य कार्रवाई को अधिकृत कर सकती है।

हालांकि, अक्सर प्रतिबंध और सैन्य हस्तक्षेप संयुक्त राष्ट्र की मंज़ूरी के बिना अमल में लाए जाते हैं। रूस इसकी लंबे समय से आलोचना करता रहा है। साल 2007 के म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में बोलते हुए, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने घोषणा की थी, 'बल का इस्तेमाल केवल तभी वैध माना जा सकता है, जब संयुक्त राष्ट्र द्वारा इसे मंज़ूरी दी गई हो। और हमें नेटो या यूरोपीय संघ को यूएन जैसी अहमियत देने की ज़रूरत नहीं है।'

यूक्रेन पर आक्रमण करके, रूस ने न केवल कई देशों की नज़र में अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन किया, बल्कि वैश्विक मामलों के संचालन के तरीके को भी चुनौती दी। साल 2014 से पुतिन ने खुद संयुक्त राष्ट्र की मंज़ूरी के बिना सैन्य बल का इस्तेमाल किया है। प्रिंसटन विश्वविद्यालय में राजनीति और अंतरराष्ट्रीय मामलों के प्रोफेसर जी. जॉन इकेनबेरी के अनुसार 'हमने इस व्यवस्था के तीन प्रकार के कट्टर सिद्धांतों का उल्लंघन देखा है। पहला यह कि आप क्षेत्रीय सीमाओं को बदलने के लिए बल का इस्तेमाल नहीं कर सकते। दूसरा, आप युद्ध में नागरिकों के खिलाफ हिंसा नहीं कर सकते। तीसरा, आप परमाणु हथियारों का उपयोग करने की धमकी नहीं दे सकते। पुतिन ने पहले दो काम किए हैं और तीसरे की धमकी दी है। इसलिए यह नियम-आधारित व्यवस्था के लिए एक वास्तविक संकट है।'

जवाब में, रूस के विदेश मंत्री, सर्गेई लावरोव ने तर्क दिया है कि पश्चिमी दृष्टिकोण में अंतरराष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र संस्थाओं के प्रति कोई सम्मान नहीं है। रूस का तर्क है कि इस तरह की कार्रवाई संयुक्त राष्ट्र चार्टर में निहित सिद्धांतों का उल्लंघन है।

उदार विश्व व्यवस्था सबसे महत्वपूर्ण आज़माइशों में एक इसराइल-हमास पर अमेरिका का एक अलग रुख था। कई देशों ने इसराइल को सैन्य समर्थन देने के लिए बाइडन प्रशासन की तीखी आलोचना की। अमेरिका पर हज़ारों फ़लस्तीनियों की मौत के प्रति उदासीन होने का आरोप लगाया गया।

प्रोफेसर इकेनबेरी मानते हैं कि 'उदार विश्व व्यवस्था' संयुक्त राज्य अमेरिका, अमेरिकी डॉलर, अमेरिकी अर्थव्यवस्था से बहुत अधिक जुड़ी हुई थी। इसे अमेरिका के 'उदार आधिपत्य' के रूप में भी समझा जा सकता है।

मौजूदा अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को चुनौती देने की कोशिश करने वाले देशों को पारंपरिक रूप से 'संशोधनवादी शक्तियां' कहा जाता है। अमेरिकी विश्लेषक और नीति निर्माता चीन और रूस को इस शब्द से जोड़कर देखते हैं. वह मानते हैं कि यह दोनों देश अमेरिका के वैश्विक प्रभाव को कम करना चाहते हैं। प्रोफेसर इकेनबेरी कहते हैं कि हाल के महीनों में अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा संशोधनवादी शक्ति बन गया है। ट्रंप प्रशासन व्यापार, मानवाधिकार सुरक्षा और गठबंधन से लेकर लोकतांत्रिक एकजुटता तक 'उदार विश्व व्यवस्था के लगभग हर पहलू' को नष्ट करने का काम कर रहा है। ट्रंप ने हाल ही में कहा था, 'मेरा प्रशासन पिछले प्रशासन की विदेश नीति की विफलताओं और अतीत की विफलताओं को निर्णायक रूप से तोड़ रहा है।'

ट्रंप टीम के इन आमूल-चूल बदलावों को रोकना कांग्रेस और न्यायपालिका के लिए कठिन होगा। विदेश नीति पूरी तरह से राष्ट्रपति के अधिकार क्षेत्र में आती है। इसे अमेरिकी हितों के अनुसार तैयार करके ही ट्रंप प्रशासन ने रूस के साथ मेल-मिलाप की दिशा में उठाए गए कदम को उचित ठहराया है।

हालांकि, ट्रंप की कूटनीतिक क्रांति अमेरिकियों को रास नहीं आई है। हाल ही में हुए एक सर्वेक्षण से पता चला है कि अमेरिकी उनकी आप्रवासन नीतियों का सबसे अधिक समर्थन करते हैं। वहीं रूस-यूक्रेन युद्ध और इसराइल-फ़लस्तीन संघर्ष पर ट्रंप के रुख़ को सबसे कम समर्थन मिला।

ऑक्सफ़र्ड विश्वविद्यालय में रूस और यूरेशियाई मामलों की रिसर्च फेलो डॉ. जूली न्यूटन कहती हैं, 'फरवरी 2025 तक, यह अमेरिका ही है जो इस नियम-आधारित व्यवस्था को खत्म करने की धमकी दे रहा है।'

24 फरवरी को यूक्रेन पर रूसी हमले की तीसरी वर्षगांठ थी। इस मौके पर अमेरिका ने रूसी आक्रामकता और यूक्रेनी क्षेत्र पर उसके कब्जे की निंदा करने वाले संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव के खिलाफ मतदान किया। इस बीच ट्रंप ने घोषणा कर दी कि वह वॉशिंगटन और मॉस्को के बीच आर्थिक संबंधों को बहाल करने के लिए पुतिन के साथ बातचीत कर रहे हैं।

डॉ. जूली न्यूटन कहती हैं, 'ट्रंप की कूटनीतिक क्रांति हेलसिंकी चार्टर के सिद्धांतों को तार-तार कर रही है और अमेरिका को अपने ही सहयोगियों की नज़र में प्रतिद्वंद्वी बना रही है।' हेलसिंकी समझौता अमेरिका, सोवियत संघ और यूरोप के देशों के बीच हुआ था। इसका उद्देश्य क्षेत्रीय अखंडता, सीमाई हिंसा को रोकना और एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में गैर-हस्तक्षेप के सिद्धांतों को मजबूत करना था।

जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी में रूस मामलों के विशेषज्ञ सर्गेई रैडचेंको कहते हें, 'ट्रंप पुतिन की तरह सोचते हैं, 19वीं सदी के साम्राज्यवादी शासक की तरह।' अटलांटिक काउंसिल के यूरेशिया सेंटर के शेल्बी मैगिड के अनुसार, 'उदार विश्व व्यवस्था' के अंत की घोषणा करना जल्दबाजी होगी।'

(बीबीसी हिन्दी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

वाह! | **राजकोट में कई परियोजनाओं का किया उद्घाटन**

पीएम मोदी ने देखे गिर के शेर, फोटोग्राफी भी की

अहमदाबाद (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तीन दिन के गुजरात दौरे पर थे। वर्ल्ड वाइल्डलाइफ डे के मौके पर सोमवार सुबह वे गिर नेशनल पार्क में एशियाटिक शेरों को देखने पहुंचे। उन्होंने फोटोग्राफी भी की। पीएम के गिर पहुंचते ही वहां मोदी-मोदी के नारे लगे। मोदी रात में सासण में रुके थे। गिर के सिंह सदन से लौटने के बाद मोदी नेशनल बोर्ड ऑफ वाइल्ड लाइफ बैठक की अध्यक्षता की। इस बैठक में वन्यजीवों से संबंधित राष्ट्रीय स्तर के मुद्दों पर चर्चा हुई। इसके बाद राजकोट में कई प्रोजेक्ट्स का उद्घाटन करने के बाद दिल्ली रवाना हो गए। मोदी ने रविवार को सोमनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना की थी। इससे पहले वे वनतारा गए थे। जामनगर स्थित वनतारा पशु बचाव और पुनर्वास केंद्र है। इसकी देखरेख मुकेश अंबानी के बेटे

अनंत करते हैं। गिर के जंगलों में पाए जाने वाले एशियाटिक शेरों के संरक्षण और उनके बाहरी इलाकों में प्रवास की संभावना को लेकर चर्चा की गई। इसके अलावा, वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन से जुड़े विभिन्न बिंदुओं पर भी विचार किया गया। इस बैठक के लिए विभिन्न एनजीओ को आमंत्रित किया गया था। बैठक का मकसद वन्यजीव संरक्षण के बेहतर उपायों पर चर्चा करना रहा। इसमें 47 सदस्य हैं, जिनमें सेना प्रमुख, विभिन्न राज्यों के सदस्य, इस क्षेत्र में काम करने वाले गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि, मुख्य वन्यजीव वार्डन और विभिन्न राज्यों के सचिव शामिल हैं।

8 मार्च को नवसारी जाएंगे प्रधानमंत्री मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 8 मार्च को एक बार फिर गुजरात दौरे पर रहेंगे। विश्व महिला दिवस पर नवसारी के जलालपोर तालुका के वांसी-बोरसी में विशाल नारी शक्ति सम्मेलन का आयोजन किया गया है। सम्मेलन में दक्षिण गुजरात की महिलाएं बड़ी संख्या में हिस्सा लेगी। सरकार की विभिन्न योजनाओं के लाभार्थी आत्मनिर्भर हुई नवसारी, डांग और वलसाड जिले के लखपति दीदियों के साथ प्रधानमंत्री का संवाद भी होगा।

बिहार में नीतिश सरकार ने वित्त वर्ष 2025-26 पेश किया बजट

स्वास्थ्य से तीन गुना शिक्षा पर खर्च कर रही नीतिश सरकार

पटना (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार के कभी घोर विरोधी रहे सम्राट चौधरी के राज्य के वित्त मंत्री के तौर बजट पेश किये जाने के बाद उनके बगल में बैठे जेडीयू सुप्रीमो और मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने अपनी सीट से खड़े होकर उनको शाबाशी दी। उपमुख्यमंत्री सह वित्त मंत्री सम्राट चौधरी ने विधानसभा में अगले वित्तीय वर्ष 2025-26 का बजट पेश किया। बजट पेश करते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि बिहार लगातार विकास के पथ पर अग्रसर है। इस बजट का आकार 3 लाख 17 हजार करोड़ होगा। बजट का

बिहार में करीब 3.17 लाख करोड़ रुपये का बजट पेश किया गया

आकार 3 लाख 16 हजार 895 करोड़ रुपए है, जो पिछले वित्तीय वर्ष के बजट आकार से करीब 38,169 करोड़ रुपए ज्यादा है। वित्त मंत्री ने कहाकि शिक्षा विभाग को 60,964 करोड़, स्वास्थ्य विभाग को 20,335 करोड़ दिए जाएंगे।

पीओके में ऐक्टिव तीन आतंकवादियों पर ऐक्शन

जम्मू-कश्मीर के पुंछ में थीं कई संपत्तियां, अब कुर्क

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में पुलिस ने तीन आतंकवादियों की 14.8 कनाल जमीन कुर्क की, जिसकी कीमत 28 लाख रुपये से अधिक है। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आतंकवादी वर्तमान में पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) से सक्रिय हैं और उनकी संपत्तियों की कुर्की केंद्र शासित प्रदेश में आतंकी पारिस्थितिकी तंत्र को खत्म करने के प्रयासों के तहत की गई है। अधिकारी ने बताया कि किरनी गांव के नजब दीन और मोहम्मद लतीफ तथा कस्बा के मोहम्मद बशीर उर्फ टिक्का खान पहले ही सीमा पार भाग चुके थे।

2024 में रेप व छेड़छाड़ के मामले घटे, बाल आयोग की वर्कशॉप में सीएम बोले-

समाज में बच्चे, किशोर, बालिकाओं की सुरक्षा से ही भारत का भविष्य

भोपाल। भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में आयोजित मध्य प्रदेश बाल अधिकार संरक्षण आयोग की राज्य स्तरीय कार्यशाला में सोमवार को सीएम डॉ मोहन यादव ने कहा कि 2024 में महिलाओं-बच्चों से रेप, छेड़छाड़ के मामले घटे हैं।

एमपी ही वो राज्य था जिसने महिलाओं खासकर बच्चों के प्रति इस प्रकार के अपराधों में मृत्युदंड का प्रावधान किया है। 2018 से 2024 के बीच देखें तो सरकार की सख्ती दिखाई देती है। यही कारण है कि लगभग 48 मामलों में कोर्ट ने मृत्युदंड का निर्णय दिया। सीएम ने कहा जिस समाज में बच्चे, किशोर, बालिकाएं अगर सुरक्षित हैं तभी भारत का भविष्य है। सीएम की बात पर एमपी कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने ट्विट कर महिलाओं को असली सुरक्षा देने की बात कही।

कार्यशाला में महिला बाल विकास मंत्री निर्मला भूरिया, बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष द्रविंद्र मोरे, शिक्षा विभाग के डीईओ, डीपीसी, महिला बाल विकास विभाग के डीपीओ, ट्राइबल विभाग के एसी और बाल कल्याण समितियों के अध्यक्ष और सदस्य, जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड के सदस्य मौजूद रहे।

बच्चे सुरक्षित तभी भारत का भविष्य है

सीएम ने कहा जिस समाज में बच्चे, किशोर, बालिकाएं अगर सुरक्षित हैं तभी भारत का भविष्य है। कई बार मेरे मन में प्रश्न आता है कि भगवान श्री राम को जब विश्वामित्र जी राम लक्ष्मण को मांगने आए थे। उस समय उनकी आयु 11 साल थी। उस समय विश्वामित्र जी ने दशरथ जी की सेना क्यों नहीं मांगी, बच्चों को ही क्यों लिया? उनका ये निर्णय हम सबके लिए रहस्य है। लेकिन, सच्चे अर्थों में रामायण बनने की शुरुआत ही वहीं से होती है। जब वे राम-लक्ष्मण को ले जाते हैं तो बाल मन जिज्ञासु होकर पूछता है कि ये क्या है तो विश्वामित्र जी बताते हैं कि ये ऋषि मुनियों की हड्डियों के ढेर हैं। उनके ऊपर तमाम अत्याचार करके हड्डियों का ढ़ेर बना दिए गए। जैसे ही उनको पता चलता जाता वैसे ही सच्चे अर्थों में यथार्थ के जीवन से उनका परिचय होता जाता है।

उज्जैन में विक्रमोत्सव

वर्तमान न्याय व्यवस्था फैसला करती है, न्याय नहीं : प्रो. व्यास

विक्रमोत्सव के अंतर्गत विक्रम का न्याय वैचारिक समागम के तीन दिवसीय कार्यक्रम में तीसरे दिन के प्रथम सत्र में वर्तमान परिपेक्ष में विक्रमादित्य की न्याय व्यवस्था की प्रासंगिकता पर विधि मर्मज्ञ विद्वानों ने अपने विचार रखे । वर्तमान न्याय व्यवस्था में सुधार के अनेक सुझाव प्रस्तुत किये। महाराणा प्रताप विधि महाविद्यालय चित्तौड़गढ़ के प्राचार्य प्रो. एसडी व्यास ने विक्रमादित्य की न्याय व्यवस्था और वर्तमान में न्याय व्यवस्था की तुलना करते हुए कहा कि वर्तमान न्याय व्यवस्था अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त है। यह दास बनाने की न्याय व्यवस्था है। हमें अध्यापन करते हुए लगता है कि यह कानून सही नहीं है। लेकिन संसद ने जो कानून बना दिए हैं, हमें उन्हें पढ़ाना पड़ता है। वर्तमान न्याय व्यवस्था सबूतों के आधार पर चलती है। विक्रमादित्य कभी पक्षकारों पर निर्भर नहीं थे । वे स्वयं धरातल पर जाकर न्याय करते थे। वर्तमान न्यायपालिका फैसला करती है, विक्रमादित्य न्याय करते थे। वर्तमान व्यवस्था में लोक अदालतों के पक्षकारों से जाकर पूछिये। असलियत सामने आ जाएगी । वास्तव में लोक अदालतों में न्याय नहीं मिलता है। समय की लंबाई के कारण लोक अदालत में पक्षकार हामी भरते हैं। अदालतों में सबूत के आधार पर निर्णय होते हैं। सत्य निष्ठ न्याय करने वाले बहुत जल्द बदले जाते हैं। हमारे संविधान में लिखा है, स्वतंत्र और निष्पक्ष न्याय व्यवस्था हो ।लेकिन असल में स्वतंत्र और निष्पक्ष न्याय नहीं मिल पा रहा है। वर्तमान न्याय व्यवस्था में कक्ष में निर्णय होते हैं। विक्रमादित्य कक्ष में न्याय नहीं करते थे। वर्तमान न्याय समय की लंबाई के कारण न्याय नहीं दिखता है। भारतीय न्यायपालिका विक्रमादित्य की तरह न्याय करे इसके लिए हमें पहला करना चाहिए।

उज्जैन से डॉ. जफर महमूद

सत्र के मुख्य अतिथि पूर्व जिला एवं सत्र न्यायाधीश रघुवीर सिंह चुडावत ने कहा कि विक्रमादित्य ने अपने नाम की तरह पराक्रम और शौर्य के साथ न्याय व्यवस्था संभाली थी। विक्रमादित्य की न्याय व्यवस्था उत्कृष्ट थी। विक्रमादित्य के न्याय की गूंज इंद्रलोक तक थी। विक्रमादित्य ने अपनी गलती पर अपने आप को भी दंडित किया था। हमारे न्यायाधीशों को न्याय के क्षेत्र में गलती होने पर प्रायश्चित करना चाहिये। भारत में न्याय व्यवस्था मातृभाषा में होना चाहिए। विक्रमादित्य के समय न्याय गुरुकुल पद्धति से होता था। वर्तमान न्याय व्यवस्था ठीक नहीं है। त्वरित न्याय की व्यवस्था को लागू किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डॉ कैलाश व्यास ने विक्रमादित्य की न्याय पद्धति और वर्तमान न्याय व्यवस्था की तुलना करते हुए कहा कि विक्रमादित्य की न्याय व्यवस्था आज भी प्रासंगिक है। पहले सत्र में संचित वर्मा ,रितिका निर्वाण, सुश्री परीधि गिरी, दुर्गेश पंवार, राहुल बंसल, प्रतीक मिश्रा, सुश्री आशु नरेश, एंजेल खंडारिया, अधिवक्ता रवि शर्मा, राजदीप सिंह अरोरा, सुश्री नंदिनी शर्मा, श्रीमती प्रियंका झा, मोहनीश वर्मा, अनंत चौरे, प्रो हर्षवर्धन यादव, ऋतु डेहरया, शीतल लखन वर्मा, डॉ राजेश कुशवाह, सुश्री निधि त्यागी ने संबोधित किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए शासकीय विधि महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ अरुणा सेठी ने कहा कि विक्रमादित्य का न्याय आज भी प्रासंगिक है। वह हमारी न्याय व्यवस्था में सदा पथ प्रदर्शक बना रहेगा। मुख्य वक्ता अधिवक्ता शेखर श्रीवास्तव ने बताया कि विक्रमादित्य ने समाज में समरसता लाने के लिए न्याय व्यवस्था को अपनाया था। डॉ अनुराधा तिवारी ने कहा कि हमारे न्याय की अवधारणा प्राचीन है। बिना न्याय के सभ्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। मुख्य अतिथि न्यायामूर्ति देवेन्द्र सिंह सोलंकी ने न्याय व्यवस्था के भविष्य में नवीन विषयों पर उद्बोधन दिया और कहा कामन सिविल कोड लागू किया जाना चाहिए। संचालन जिला विधिक सलाहकार समिति के चन्द्रेश मंडलोई ने किया।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजेश कुमार गुप्ता ने की। विशेष अतिथि विधि विशेषज्ञ डॉ एस एन शर्मा, उज्जैन बार काउंसिल के अध्यक्ष अशोक यादव थे। शारदा विश्वविद्यालय नोएडा की स्कूल आफ लॉ की प्राध्यापक डॉ उर्मिला यादव एवं विक्रम विश्वविद्यालय के कुलसचिव अनिल कुमार शर्मा ने इस सत्र में संबोधित किया।

इस अवसर पर संयोजक रविन्द्रसिंह कुशवाह, उज्जैन बार काउंसिल के पूर्व अध्यक्ष योगेश व्यास, हेमचंद नाईक, राजेश जोशी, संतोष सिसौदिया, चन्द्रपाल कुशवाह, त्रिभुवन कुलमी, अर्चना गहलोत, मिथिलेश वैष्णव, मंजू पथरोड, सौमित्र सिंहा सहित विधि प्राध्यापक, शोधार्थी उपस्थित थे।

मंत्री बोलीं- अनाथ बच्चों के पुनर्वास की जिम्मेदारी आपकी

कार्यक्रम में महिला बाल विकास मंत्री निर्मला भूरिया ने कहा- बच्चों को न्याय दिलाने के लिए जिन्हें जिम्मेदारी दी गई है। मैं उनसे कहना चाहती हूं कि समाजसेवा का अवसर बार-बार नहीं मिलता। अपनी पूरी सजगता से बच्चों का संरक्षण हो ये ध्यान रखें। अनाथ बच्चा कहां जाएगा उसका पुनर्वास कहां होगा? ये अधिकार आप लोगों के पास है इस अधिकार से बच्चों के अधिकार संरक्षण का काम करें। जरूरतमंद बच्चे जो आप तक नहीं आ पाए उन तक आप पहुंचें। बच्चे ईश्वर का रूप होते हैं। वह देश का भविष्य हैं यदि हमें प्रधानमंत्री मोदी जी के अनुरुप देश का भविष्य स्वर्णिम बनाना है तो आज के बच्चों के वर्तमान और भविष्य को भी संवारना होगा।

सुप्रभात

एक आदमी अपने जीवन में
कितनी कहानियां ढोता है
हर आदमी का जीवन एक उपन्यास होता है
आलोचना इस संसार की
सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है
(आलोचना जीवन की भाषा है)
जिसने आज तक किसी की आलोचना नहीं की
वह मनुष्य योनि में गधा है
संस्मरणों की किताबों पर
धूल जमी हुई है
जो विधाएं विलुप्त हुईं
उनकी याद जाती नहीं है दिल से
उसी की याद आती है
जो उठ कर चला गया महफ़िल से
मैं हवाओं में
मनुष्य को बेसुध कर देने वाली
केवड़े की गंध लिखना चाहता हूं
जब हर कोई लिख रहा है कविता
मैं तुम्हारे लिए
एक निबंध लिखना चाहता हूं !

- कृष्ण कल्पित

भोपाल का तापमान

अधिकतम 22 °c | न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार,04 मार्च 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

राष्ट्र निर्माण में संतों और गुरुओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण

मुख्यमंत्री, सीहोर के कुबेरेश्वर में रुद्राक्ष महोत्सव में हुए शामिल

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि जीवन-मृत्यु व्यक्ति के हाथ में नहीं है, लेकिन संत लोगों को धर्म की राह दिखाकर सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर उनके जीवन को सार्थक बनाते हैं। सांस्कृतिक, धार्मिक मूल्यों की स्थापना तथा समाज और राष्ट्र के निर्माण में संतों और गुरुओं की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज कुबेरेश्वर धाम सीहोर में आयोजित रुद्राक्ष महोत्सव में शामिल होकर श्रद्धालुओं को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पं. प्रदीप मिश्रा जी लोगों में ईश्वर के प्रति आस्था और भक्ति जागृत कर लोगों का धार्मिक, आध्यात्मिक उत्थान कर रहे है। उन्होंने कहा कि पं. मिश्रा ने भोपाल के निकट सीहोर में

कुबेरेश्वर धाम की स्थापना कर इस क्षेत्र को एक नई धार्मिक पहचान दी है। उन्होंने कहा कि दुनिया के दो सौ से अधिक देशों में भारत सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और सबसे बड़े देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रयागराज कुंभ में गगा स्नान कर देश की सनातन संस्कृति के प्रति देशवासियों की अटूट आस्था का संदेश दिया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश सरकार को सभी संतो का मार्गदर्शन मिला है। समय-समय पर हम और हमारी सरकार उनसे कई अवसरों पर विचार-विमर्श भी करती है। संतो से हमें सरकार चलाने का नैतिक बल मिलता है जिससे हम अधिक मजबूती के साथ प्रदेश के विकास और लोगों के कल्याण के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमने संपूर्ण प्रदेश में गौ-शालाओं का निर्माण किया है और गौ-शालाओं में गौ-माता के लिए बेहतर परिवेश उपलब्ध करा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गौ-माता परमात्मा की हम पर असीम कृपा है।

सीएम बोले-शराब नहीं दूध की दुकानें खुलनी चाहिए

कुबेरेश्वर धाम में सात दिवसीय रुद्राक्ष महोत्सव का आज समापन हुआ। शुरुआत 25 फरवरी को हुई थी। समापन में सीएम डॉ. मोहन यादव भी पहुंचे। उन्होंने मंच पर पहुंचकर पंडित प्रदीप मिश्रा से आशीर्वाद लिया। फिर श्रद्धालुओं को संबोधित किया। मुख्यमंत्री ने कहा- मैं कहना चाहता हूं कि कुपोषण महिला बाल विकास विभाग की योजनाओं से नहीं बल्कि गाय पालन से दूर होगा। मेरा मानना है कि शराब की दुकानों की जगह दूध की दुकानें खोली जानी चाहिए। उन्होंने कहा, यह दुर्भाग्य की बात है कि शिप्रा नदी बरसाती नदी है और मार्च के महीने में ही सूख जाती है। लेकिन मैं आश्वस्त करना चाहता हूं कि अगला सिंहस्थ जब होगा, तो हम ऐसी व्यवस्था कर रहे हैं कि लोग शिप्रा के पानी में ही स्नान करेंगे।

बॉस नहीं, 'एआई' तय करेगी सैलरी बढ़ेगी या नहीं!

60 फीसदी कंपनियां वेतन और सेंटिव तय करने में चाहती हैं भूमिका

नई दिल्ली (एजेंसी)। कॉरपोरेट सेक्टर में आपका बॉस तय करता है कि आपकी सैलरी कितनी बढ़ेगी लेकिन अब कर्मचारियों के सैलेरी स्ट्रक्चर में बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है। दो-तीन साल के बाद सैलरी तय करने में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की भूमिका तय मानी जा रही है। यानी कंपनियां एआई बेस्ड प्रिडिक्टर मॉडल को अपनाकर आपकी सैलरी तय करेंगी। एक रिपोर्ट के मुताबिक 60 फीसदी कंपनियां वेतन और इंसेंटिव तय करने में एआई का इस्तेमाल

करना चाहती हैं। वहीं रियल टाइम पेइक्विटी एनालिसिस और कस्टमाइज्ड बेनिफिट्स के लिए भी कंपनियां एआई का इस्तेमाल करना चाहती हैं। यानी आने वाले समय में फिक्स्ड सैलेरी स्ट्रक्चर सिस्टम खत्म जाएगा और एआई बेस्ड प्रिडिक्टर मॉडल से आपकी सैलरी तय होगी। कंपनियों का मानना है कि इससे सैलरी तय करने के तरीकों को ज्यादा पारदर्शी बनाया जाएगा। रिपोर्ट के अनुसार एआई का सैलरी तय करने में यह तरीका 2028 तक अपनाया जा सकता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 2025 में औसत वेतन बढ़ोतरी 9.4 फ़ीसदी रहने का अनुमान जताया गया है।

लोकसभा सीटें बढ़ानी है तो... जल्दी-जल्दी बच्चे पैदा करो

● तमिलनाडु सीएम स्टालिन ने की राज्य के लोगों से मार्मिक अपील ● लोकसभा परिसीमन को तमिलनाडु के लिए बताया गंभीर चुनौती

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने लोगों से ज्यादा बच्चे पैदा करने की अपील की है। यह अपील उन्होंने सोमवार को परिसीमन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मुद्दे पर की। स्टालिन का मानना है कि जनसंख्या आधारित परिसीमन से तमिलनाडु की संसदीय सीटें कम हो सकती हैं। इसलिए उन्होंने लोगों से अपनी व्यक्तिगत राय को दरकिनार कर इस अपील पर गंभीरता से विचार करने का आग्रह किया। दरअसल एमके स्टालिन नागई जिले के पार्टी सचिव की

शादी में शामिल हुए थे। वहां उन्होंने जनसंख्या और परिसीमन के मुद्दे पर बात की। स्टालिन ने कहा कि पहले हम कहते थे, सोच समझकर बच्चा पैदा करो। अब हालात बदल गए हैं। अब हमें कहना होगा कि जल्दी बच्चा पैदा करो। हमने परिवार नियोजन को सफलतापूर्वक लागू किया। अब उसी

की वजह से हम इस स्थिति का सामना कर रहे हैं।

● **जनसंख्या आंकड़ों के आधार पर होगा सीटों का आवंटन**- यह प्रक्रिया भारतीय संविधान के अनुच्छेद 82 और 170 के तहत विशिष्ट संवैधानिक प्रावधानों की ओर से निर्देशित होती है। अनुच्छेद 82 के अनुसार, प्रत्येक राष्ट्रीय जनगणना के बाद संसद को लोकसभा क्षेत्रों की सीमाओं और संख्या को फिर से परिभाषित करने के लिए एक परिसीमन अधिनियम बनाना होगा। अनुच्छेद 170 राज्य परिसीमन के लिए दिशानिर्देश स्थापित करता है, जो जनसंख्या आंकड़ों के आधार पर होता है।

● **सफल परिवार नियोजन पहल की सराहना भी की**- स्टालिन ने राज्य की सफल परिवार नियोजन पहल की सराहना भी की। लेकिन साथ ही उन्होंने इसके वर्तमान परिणामों के बारे में चिंता भी व्यक्त की। दरअसल परिसीमन भारत में एक संवैधानिक प्रक्रिया है। इसमें संसदीय और विधानसभा क्षेत्रों की सीमाओं को फिर से निर्धारित किया जाता है। इसका मकसद सभी चुनावी क्षेत्रों में समान जनसंख्या प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना होता है। यह प्रक्रिया तय करती है कि प्रत्येक राज्य को जनसंख्या के आधार पर संसद में कितने प्रतिनिधि मिलेंगे।

सुप्रीम कोर्ट की अलाहबादिया को शो शुरू करने की इजाजत

● कहा-सभ्यता और नैतिकता बनाए रखें ताकि हर उम्र के लोग इसे देख सकें

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को यूट्यूबर रणवीर अलाहबादिया को अपने पॉडकास्ट 'द रणवीर शो' को जारी रखने की अनुमति दे दी। हालांकि कोर्ट ने शर्त रखी कि वो अपने शो में कुछ भी अश्लील नहीं दिखाएंगे। यूट्यूबर ने कोर्ट में एक आवेदन दायर कर आदेश के एक हिस्से को हटाने की मांग की थी, जिसमें उसे अपने शो प्रसारित करने से रोक दिया गया था। दरअसल, समय रैना के शो 'इंडियाज गॉट लैटेंट' में माता-पिता पर अभद्र टिप्पणी के विवाद के बाद देश के कई शहरों में

उन पर एफआईआर हुई थीं।

इसके बाद अलाहबादिया के पॉडकास्ट 'द रणवीर शो' में सेलिब्रिटीज ने आने से इनकार कर दिया था। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस एन कोटेश्वर सिंह ने कहा, शो के दौरान अलाहबादिया कोर्ट में चल रहे इस केस के बारे में कोई टिप्पणी नहीं करेंगे। फिलहाल वे देश छोड़कर नहीं जा सकेंगे। जांच में शामिल होने के बाद ही अनुमति दी जा सकती है। सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए शो बनाएंगे। इसके लिए उन्हें अंडरटेकिंग देनी होगी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा, मौलिक अधिकारों के साथ कर्तव्य भी जुड़े हैं।

स्टूडेंट्स को स्कूल में स्मार्टफोन लाने से आप नहीं रोक सकते

● दिल्ली एचसी ने कहा-गाइडलाइन फॉलों करें, पॉलिसी बनाएं

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा कि स्कूलों में स्टूडेंट्स के स्मार्टफोन ले जाने

बैन नहीं लगा सकते हैं लेकिन स्कूल स्मार्टफोन को लेकर पॉलिसी बनाए और उसकी निगरानी करे। इसके साथ ही हाईकोर्ट ने स्टूडेंट्स के स्मार्टफोन ले जाने पर नियम तय किए। जज अनूप जयराम भंभानी ने कहा- वर्तमान में एजुकेशन के लिए टेक्नोलॉजी जरूरी हिस्सा बन गई है। स्मार्टफोन पर पूरी तरह से पाबंदी लगाना सही नहीं है। स्मार्टफोन से बच्चे अपने माता-पिता से जुड़े रहते हैं, जिससे उनकी सुरक्षा भी बनी रहती है। हाईकोर्ट ने यह भी कहा है कि स्कूलों में स्मार्टफोन यूज के नियमों को तोड़ने पर सजा तय हो, लेकिन यह बहुत सख्त भी नहीं होनी चाहिए। कोर्ट ने सुझाव दिया कि स्कूल जरूरत पड़ने पर सजा के तौर पर स्मार्टफोन जब्त कर सकते हैं।

ट्रम्प से विवाद के बावजूद डील को तैयार जेलेंस्की

● कहा-अमेरिका बुलाएगा तो दोबारा जाऊंगा वाशिंगटन

लंदन (एजेंसी)। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने कहा है कि वे अमेरिका-यूक्रेन मिनरल्स डील पर दस्तखत करने के लिए तैयार हैं। जेलेंस्की ने लंदन में एक प्रेस ब्रीफिंग के दौरान कहा कि वे पिछले हफ्ते अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के साथ बहस के बाद भी अमेरिका के साथ बातचीत करने को इच्छुक हैं। जेलेंस्की ने कहा कि व्हाइट हाउस में हुई उस घटना का अमेरिका या यूक्रेन को नहीं, बल्कि सिर्फ रूसी राष्ट्रपति पुतिन को फायदा पहुंचा है। उन्होंने कहा कि अगर

मुझे मिनरल डील के लिए बुलाया जाता है तो मैं व्हाइट हाउस वापस जाऊंगा। जेलेंस्की ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि यूक्रेन की सुरक्षा गारंटी सुनी जाएगी।

डीके शिवकुमार दिसंबर में बनेंगे कर्नाटक के सीएम

कांग्रेस एमएलए का दावा-7.5 साल पद पर रहेंगे

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक कांग्रेस में नेतृत्व परिवर्तन की अटकलें तेज हो गई है। कांग्रेस विधायक बसवराजू वी शिवगंगा ने रविवार को दावा किया कि डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार आने वाले दिसंबर महीने में मुख्यमंत्री बनेंगे। कम से कम अगले 7.5 साल तक सीएम बने रहेंगे। शिवगंगा की बात का समर्थन करते हुए कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री वीरप्पा मोइली ने कहा- डीके शिवकुमार को राज्य का मुख्यमंत्री बनना चाहिए। साथ ही दावा किया कि शिवकुमार का मुख्यमंत्री बनना पहले से ही

तय है। कोई उन्हें मुख्यमंत्री बनने से रोक नहीं सकता। इतिहास पहले ही लिख दिया गया है। आज या कल, यह हो जाएगा। उदुपी में एक कार्यक्रम के दौरान मोइली ने कहा कि शिवकुमार ने मजबूत नेतृत्व प्रदान किया है। हमेशा पार्टी को प्राथमिकता दी। कुछ लोग व्यक्तिगत कारणों से उनकी आलोचना कर सकते हैं, लेकिन इससे कुछ नहीं बदलेगा। मुख्यमंत्री पद उन्हें दिया गया उपहार नहीं है, उन्होंने इसे उन्होंने अर्जित किया है। शिवागंगा बोले- अगर चाहो तो मैं इसे खून से लिखकर दे सकता हूं। शिवकुमार दिसंबर में मुख्यमंत्री बनेंगे।

भाजपा से गठबंधन संभव ही नहीं हमारा नजरिया बिल्कुल अलग

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने भाजपा और नेशनल कॉन्फ्रेंस के बीच गठबंधन की संभावनाओं से इनकार किया। उन्होंने कहा- भाजपा के साथ गठबंधन का सवाल ही नहीं उठता। मारी राजनीतिक विचारधारा और प्राथमिकताएं बिल्कुल अलग हैं, विशेषकर जम्मू-कश्मीर को लेकर। साझेदारी की न कोई संभावना है और न ही जरूरत। विधानसभा के बजट सत्र में शामिल होने के लिए पहुंचे अब्दुल्ला ने एक सवाल के जवाब में यह बात कही। दरअसल भाजपा विधायक आरएस पठानिया ने जम्मू-कश्मीर गठबंधन के संकेत दिए थे। उन्होंने कहा था कि हम जम्मू-कश्मीर के हितों और विकास के लिए नेशनल कॉन्फ्रेंस के साथ हाथ मिलाने को तैयार हैं।

महायुति में सब ठीक, शिंदे से विवाद की खबरें गलत

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे से विवाद की खबरों से इनकार किया है। उन्होंने कहा कि डिप्टी सीएम ने अमित शाह से मेरी कोई शिकायत नहीं की है। सांसद संजय राउत कहानी लिखने में बॉलीवुड के मशहूर लेखक सलीम-जावेद से कंपटीशन कर रहे हैं। फडणवीस सोमवार से शुरू हो रहे बजट सत्र से पहले डिप्टी सीएम शिंदे और अजित पवार के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस कर रहे थे। उन्होंने कहा- कोई युद्ध नहीं है। जो लोग हम दोनों को जानते हैं, वे जानते होंगे कि जब हम साथ होते हैं तो क्या करते हैं।

अखिल भारतीय पूर्ण कालिक कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग का शुभारंभ

सहकारिता मंत्री ने किया प्रदर्शनी का उद्घाटन

भोपाल। विद्या भारती के 5 दिवसीय अखिल भारतीय पूर्णकालिक अभ्यास वर्ग के महाकुम्भ में आज विभिन्न प्रदर्शनी का सोमवार को शारदा विहार भोपाल मे उद्घाटन किया गया। उद्घाटन के अवसर पर मुख्य रूप से उपस्थित रहे श्री विश्वास कैलाश सारंग खेल एवं युवा कल्याण, सहकारिता मंत्री मध्यप्रदेश शासन, श्री दूसि रामकृष्ण राव विद्या भारती के अखिल भारतीय अध्यक्ष, श्री गोविंदचंद महंत विद्या भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री, श्री यतीन्द्र शर्मा, श्री श्रीराम आरावकर विद्या भारती के अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री, श्री निखिलेश महेश्वरी विद्या भारती मध्यरभारत प्रांत के संगठन मंत्री व विद्या भारती के अन्य पदाधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

तीन विशेष प्रदर्शनियाँ-संस्कृति, डिजिटल उपलब्धियाँ और शिशु वाटिका- संस्कृति प्रदर्शनी - लोकमाता अहिल्याबाई होल्कटर की 300वी जयंती के अवसर पर उनके व्यक्तित्वा एवं कृतित्वत पर आधारित है। मध्यकप्रदेश की गौरव वीरांगना रानी दुर्गावती की 500वी जयंती के अवसर पर उनके शौर्य को दर्शाते हुए प्रदर्शनी है साथ ही मध्यप्रदेश की ऐतिहासिक, धार्मिक व दार्शनिक धरोहरों की महत्ता को दर्शाती हुई मनमोहक प्रदर्शनी लगाई गई हैं।

डिजिटल उपलब्धियाँ प्रदर्शनी- डिजिटल प्रदर्शनी मे विद्या भारती द्वारा वर्षभर बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु की जाने वाली गतिविधियाँ व अन्यप सामाजिक सरोकार एवं शैक्षिक कार्यक्रमों की जानकारी इस प्रदतर्शनी में दी गई है।

शिशु वाटिका प्रदर्शनी-विद्या भारती की शिशु शिक्षा की 12 शैक्षिक व्यवस्थाओं को प्रदर्शित किया गया, जिससे 12 शैक्षिक व्यवस्थाओं के माध्यम से शिशु को खेल-खेल में शिक्षा के माध्य म से सर्वांगीण विकास की अवधारणा को प्रदर्शित करती है।

प्रदर्शनियों के अवलोकन के पश्चात मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने मीडिया से चर्चा करते हुए विद्या भारती के योगदान की सराहना की।

उद्घाटन आज - 5 दिन चलने वाले विद्या भारती के मार्गदर्शन में अखिल भारतीय पूर्णकालिक कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग का आज प्रातः 09:00 बजे राष्ट्रीय स्वययंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत करेंगे। इस कार्यक्रम में देशभर से 700 से अधिक कार्यकर्ता सम्मिलित हो रहे हैं।

खेल में सियासत | कांग्रेस प्रवक्ता के बयान को भाजपा ने एक सेल्फमेड चैंपियन (रोहित) का अपमान बताया

रोहित शर्मा मोटे, सबसे ज्यादा बेअसर कप्तान

● कांग्रेस प्रवक्ता बोलीं, पार्टी के कहने पर डिलीट की पोस्ट ● भाजपा ने कसा तंज-राहुल की कप्तानी में कई चुनाव हारे

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी में न्यूजीलैंड के खिलाफ भारत की शानदार जीत के बाद कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता शमा मोहम्मद ने भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा की फिटनेस और कप्तानी पर सवाल उठाए। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा- एक खिलाड़ी के तौर पर रोहित शर्मा मोटे हैं, उन्हें अपना वजन कम करना चाहिए। शमा मोहम्मद ने यह भी कहा कि रोहित भारत के सबसे निराश करने वाले कप्तान हैं। कांग्रेस प्रवक्ता के बयान को भाजपा ने एक सेल्फमेड चैंपियन (रोहित) का अपमान और बॉडी शेमिंग बताया। हालांकि बाद में कांग्रेस ने कहा कि हमारी पार्टी खेल हस्तियों का सम्मान करती है। पार्टी ने शमा से सोशल मीडिया पोस्ट डिलीट करने को कहा। इसके बाद शमा ने पोस्ट हटा लीं। शमा ने कहा, एक

खिलाड़ी के तौर पर रोहित शर्मा काफी मोटे हैं, उन्हें वजन घटाने की जरूरत है। शमा मोहम्मद ने रोहित शर्मा की तुलना भारत के पूर्व क्रिकेट दिग्गजों से की।

कांग्रेस ने कहा-

भविष्य में सावधानी बरतें- शमा मोहम्मद के दिए गए बयान पर कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. शमा मोहम्मद ने एक क्रिकेट के दिग्गज के बारे में कुछ ऐसे बयान दिए हैं, जो पार्टी की विचारधारा के खिलाफ थे। उन्हें इन पोस्टों को एक्स से हटाने को कहा गया है और भविष्य में ज्यादा सावधानी बरतने की सलाह दी गई है। आलोचना के बाद शमा की सफाई- तुलना की थी आलोचना होने पर शमा मोहम्मद ने कहा, मैंने किसी का अपमान करने के लिए ट्वीट नहीं किया था। उस ट्वीट में मैंने कहा कि एक खिलाड़ी होने के नाते उनका वजन ज्यादा है। ये बॉडी शेमिंग नहीं है।

भाजपा ने कहा-

राहुल की कप्तानी में हारे 90 चुनाव

कांग्रेस प्रवक्ता के इन बयानों पर भाजपा नेता शहजाद पूनावाला ने कहा- जो लोग राहुल गांधी की कप्तानी में 90 चुनाव हार चुके हैं, वे रोहित शर्मा की कप्तानी को बेकार बता रहे हैं। पूनावाला ने रोहित के ट्रैक रिकॉर्ड की भी तारीफ की और उनकी टी 20 वर्ल्ड कप जीत का जिक्र किया। कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में शामिल हुई नेता राधिका खेड़ा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने दशकों तक खिलाड़ियों का अपमान किया है और अब एक क्रिकेट के दिग्गज का मजाक उड़ा रही है। यह वही कांग्रेस है, जिसने दशकों तक खिलाड़ियों का अपमान किया, उन्हें पहचान नहीं दी और अब एक सेल्फमेड चैंपियन का मजाक उड़ा रही है।

शब्द, वाणी और विचार का आदर्श थे श्याम साकल्ले

भोपाल। प्रतिभा ईश्वर का उपहार होती है लेकिन कामयाबी कर्म के पसीने से ही लिखी जाती है। श्याम साकल्ले एक छोटे से क़स्बे से उभरी ऐसी ही अनूठी शख्सियत प्रतिभा थे। वक्ता और अधिवक्ता ही नहीं, कवि-गद्यकार और खिलाड़ी के रूप में भी उनकी पहचान तथा प्रसिद्धि देश भर में फैली थी। वे बहुआयामी विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। नई पीढ़ी के लिए वे शब्द, वाणी, विचार और व्यक्तित्व का आदर्श थे।

ऐसे अनेक भावभीनी उदगारों के बीच साहित्य, संस्कृति और समाज सेवा में समान रूप से सक्रिय रहे स्वर्गीय श्याम साकल्ले को याद किया गया। तुलसी नगर स्थित नर्मदा मंदिर सभागार में आयोजित 'सुमिरन' प्रसंग में प्रफुल्ल निलोसे, आलोक बिल्लोरे, हरिओम शर्मा, लता अग्रवाल, विजय जोशी, निशांत जोशी, हरिओम सराफ आदि ने अपने संस्मरण साझा किये। इस अवसर पर स्व. साकल्ले की जीवन संगिनी शैलमणि साकल्ले सहित अनेक गणमान्य विभूतियाँ तथा मित्र-स्वजन उपस्थित थे। श्री नर्मदा सेवा समाज भोपाल की ओर से स्मृति शेष श्याम साकल्ले को समर्पित सम्मान अध्यक्ष-समाजसेवी सुशील बिल्लोरे तथा महिला इकाई की अध्यक्ष संगीता पाराशर ने भेंट किया। समारोह का संचालन तथा प्रशस्ति पाठ कला समीक्षक विनय उपाध्याय ने किया। इस मौके पर श्याम साकल्ले के कर्मयोगी जीवन तथा उपलब्धियों पर केन्द्रित एक फ़िल्म का प्रदर्शन तथा उनके द्वारा रचित भुवाणा गीत की प्रस्तुति ने माहौल को भावुक कर दिया। इस अनूठे प्रसंग के शिल्पी-मुख्य संयोजक सुशील बिल्लोरे ने कहा कि महान विभूतियाँ हमारे लिए बहुमूल्य विरासत का आदर्श प्रस्तुत करती रही हैं। उनकी स्मृतियों का संरक्षण हमारा दायित्व है।

16वें वित्त आयोग की बैठक आज से

भोपाल। 16वें वित्त आयोग के अध्यक्ष डॉ. अरविंद पनगिढ़या के नेतृत्व में पांच सदस्यीय दल 4 मार्च को महत्वपूर्ण बैठकों के लिए भोपाल पहुंच रहा है। वित्त आयोग इस अवधि में भोपाल के अलावा राज्य के अन्य जगहों पर दौरे करेगा। वित्त आयोग के दौरे का मुख्य उद्देश्य केंद्र और राज्यों के बीच करों के वितरण, अनुदान सहायता (ग्रांट्स-इन-ऐड) के निर्धारण और राज्यों के बीच संसाधनों के उचित आवंटन से संबंधित विषयों पर विचार-विमर्श करना है। वित्त आयोग की अनुशंसा एक अप्रैल 2026 से 31 मार्च 2031 तक पाँच वर्ष के लिए होगी। राज्य में राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों, स्थानीय निकायों, पंचायत एवं नगरीय निकायों और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बैठकें करेंगे। बैठकों में बढ़ी हुई कर हस्तांतरण (डेवोल्युशन) की दर के राज्य की वित्तीय स्थिति पर प्रभाव और राज्य के व्यय स्वरूप में हुए परिवर्तन पर चर्चा की जाएगी। वित्त आयोग मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा भी करेगा और राज्य में चल रही वित्तीय योजनाओं, विकास कार्यों और नीतियों के प्रभाव का प्रत्यक्ष आकलन करेगा। इस दौरान आयोग विभागीय अधिकारियों से विभिन्न विकास परियोजनाओं की प्रगति पर जानकारी लेगा और उनसे सुझाव भी मांगेगा। 16वें वित्त आयोग की यह बैठक मध्यप्रदेश की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने और राज्य की विकास योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान करने में सहायक होगी। इसके माध्यम से राज्य को भविष्य में मिलने वाले वित्तीय संसाधनों की रूपरेखा तय की जाएगी, जिससे प्रदेश के समग्र विकास को गति मिलेगी। भोपाल में होने वाली इस महत्वपूर्ण बैठक से राज्य सरकार को अपनी वित्तीय आवश्यकताओं और विकास योजनाओं के लिए केंद्र सरकार से अधिक सहयोग प्राप्त करने का अवसर मिलेगा।

मंत्री कृष्णा गौर ने विकास कार्यों का किया भूमिपूजन

एक करोड़ 50 लाख की लागत से गोविंदपुरा में होगा विकास

भोपाल। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि सड़क निर्माण से समृद्धि आती है। राज्यमंत्री श्रीमती गौर सोमवार को गोविंदपुरा विधानसभा के विभिन्न वार्ड में लगभग एक करोड़ 50 लाख की लागत से होने वाले विकास कार्यों के भूमि-पूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रही थी। राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि नागरिक सुविधाओं को सुदृढ़ करने के लिए हमारी सरकार कृत संकल्पित है। ये सड़कें न केवल आवागमन को सुगम बनाएंगी, बल्कि क्षेत्र के विकास में भी सहायक सिद्ध होंगी। राज्य मंत्री श्रीमती गौर वार्ड 68 में अयोध्या नगर फेस-5 में 35 लाख रुपए की लागत से बनने वाले सामूहिक भवन के निर्माण कार्य का भूमि-पूजन

किया। इस दौरान नगर निगम के अधिकारियों को क्षेत्र में साफ-सफाई के निर्देश दिए। वार्ड-68 अयोध्या नगर में सरयू सरोवर के पास 25 लाख रुपए की लागत से बनने वाले शेड एवं चबूतरे के निर्माण कार्य का भूमि-पूजन किया। वार्ड 68 के ही जोन 16 में एसपीईबी कार्यालय के पीछे जी सेक्टर सेंट थॉमस स्कूल के पीछे 25 लाख की लागत से बनने वाली सीमेंट कांक्रीट सड़क के निर्माण कार्य का भूमि-पूजन किया और रहवासियों की अन्य समस्याओं को सुनने के बाद उसके तुरंत निराकरण के निर्देश भी अधिकारियों को दिए। वार्ड 68 में एमपीईडी सर्विस स्टेशन एफ सेक्टर अयोध्या नगर में चौराहे से अरहेड़ी पुलिया तक 22 लाख की लागत से बनने वाली सीसी रोड निर्माण कार्य का भूमि-पूजन किया।अयोध्या नगर की सी आई यूनिट के पास सरस्वती स्कूल से इसरो एम सेक्टर तक 87 लाख रुपए की लागत से सेंट्रल वर्ज निर्माण कार्य का भूमि-पूजन किया और निर्माणधीन सड़क का निरीक्षण किया। वार्ड 68 के संतोषी बिहार के पार्क में 21 लाख की लागत से शेड एवं चबूतरे के निर्माण कार्य का भूमि-पूजन किया।

सड़कों को प्रदूषण मुक्त बनाने वाहन पोर्टल पर ग्रीन सर्विस शुरू

7 लाख पुराने वाहनों पर लगाई गई हाई सिक्यूरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट

भोपाल। प्रदेश में सड़कों को प्रदूषण मुक्त बनाये रखने के लिये नेशनल इन्फॉर्मेशन सेंटर (एनआईसी) के वाहन पोर्टल पर हरित सेवा (ग्रीन सर्विस) शुरू की गई है। जिसके माध्यम से वाहनों के रेट्रोफिटमेंट कराये जाने वाली सीएनजी किट के प्रमाणित होने की पुष्टि रहती है। वाहन पोर्टल का संचालन परिवहन विभाग द्वारा किया जा रहा है। राज्य में वाहनों से उत्सर्जित होने वाली हानिकारक गैसों पर नियंत्रण के लिये प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण-पत्र प्राप्त करना अनिवार्य किया गया है। प्रदेश में समस्त वाहन प्रदूषण जांच केन्द्रों को एनआईसी के पीयूसीसी पोर्टल के साथ इंटीग्रेट किया जाकर पारदर्शी रूप से ऑनलाइन प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण-पत्र जारी किया जाना सुनिश्चित किया जा रहा है। ऑनलाइन पीयूसीसी (पॉल्यूशन अंडर कंट्रोल सर्टिफिकेट) जारी होने से उनका डेटा वाहन पोर्टल पर प्रदर्शित होने लगा है। इस सुविधा से चेकिंग अधिकारी द्वारा प्रमाण पत्र मांगे जाने पर वाहन स्वामी द्वारा ऑनलाइन अथवा इलेक्ट्रॉनिक रूप में दिखाया जा सकता है। प्रदेश में वाहनों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए परिवहन विभाग द्वारा वाहनों में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट (एचएसआरपी) लगाने का कार्य वाहन डीलर के

माध्यम से किया जा रहा है। प्रदेश में अब तक करीब 7 लाख पुराने रजिस्टर्ड वाहनों में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट लगवाई जा चुकी है। हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट लगने से वाहन चोरी की दशा में इसे ट्रेस किया जाना सरल हो जाता है। सड़क सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अनफिट वाहनों के संचालन पर प्रभावी रोक लगाये के प्रयास परिवहन विभाग द्वारा किये जा रहे हैं। इस उद्देश्य से केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा वाहनों के स्वचलित परीक्षण (ऑटोमेटेड टेस्टिंग) के बाद ही फिटनेस प्रमाण-पत्र जारी किया जाना अनिवार्य किया गया है। वाहनों की मानव हस्तक्षेप रहित पारदर्शी तरीके से फिटनेस जाँच करने के लिये ग्वालियर, इंदौर और भोपाल में ऑटोमेटेड टेस्टिंग स्टेशन (एटीएस) क्रियाशील हो गये हैं। इसी के साथ प्रदेश के 22 जिलों में ऑटोमेटेड टेस्टिंग स्टेशन बनाये जाने के लिये प्राथमिक पंजीयन प्रमाण-पत्र जारीकिये गये हैं। प्रदेश में प्रतिवर्ष होने वाली औसतन 50 हजार सड़क दुर्घटनाओं में 78 प्रतिशत सड़क दुर्घटना वाहन चालक की गलती के कारण होती है। सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के उद्देश्य से वाहन चालकों को प्रशिक्षण देने के लिये 3 स्तर प्रादेशिक, संभागीय और जिला स्तर पर प्रशिक्षण केन्द्रो की स्थापना करने का निणर्य लिया गया है। केन्द्र सरकार द्वारा प्रदेश के इंदौर और छिंदवाड़ा में इंस्टीट्यूट ऑफ ड्राइविंग ट्रेनिंग एण्ड रिसर्च सेंटर संचालित किये जा रहे है। इसके अलावा छतरपुर और 10 अन्य स्थानों पर ड्राइविंग इंस्टीट्यूट शुरू किये जाने के प्रयास किये जा रहे है।

समुदायों में चेतना जगाने वाले गीतों का लोकार्पण

भोपाल। रवीद्र भवन में आयोजित 'धरती के बोल' कार्यक्रम में तीन राज्यों के दस जन संगठनों ने संघर्ष और चेतना के गीतों का लोकार्पण किया।

मध्य प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र में जमीनी स्तर पर समुदायों के हक़ हुकूक सुनिश्चित करने की दिशा में काम कर रहे करीब दस जन संगठनों ने ऐसे गीतों का लोकार्पण किया जो संगठनों के कार्यकर्ताओं ने रचे और गाये हैं। इन गीतों ने समुदायों के अंदर चेतना जगाई है, उन्हें शक्ति दी है और अपने हक़-हुकूकोन के लिए एकजुट होने के पैगाम दिये हैं। यह आयोजन नई दिल्ली की एक संस्था 'श्रुति' के 40 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में किया गया। उल्लेखनीय है कि श्रुति देश के 15 राज्यों में ऐसे जमीनी काम को सहयोग करती है जिससे लोगों में सांवैधानिक मूल्यों का शिक्षण हो और वो जागरूक नागरिक बनें।

कार्यक्रम की शुरुआत एक परिचर्चा से हुए जिसमें देश दुनिया के सांस्कृतिक हस्तक्षेपों पर गंभीरता से चर्चा हुई। सांस्कृतिक चेतना के प्रसार के लिए गाँव-मोहल्लों में होने वाले तमाम पक्षों पर बात हुई। इस परिचर्चा में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय भोपाल के प्रोफेसर अमन मदान, आधारशिला स्कूल के साथी अमित भाई, सर्वहारा जन आंदोलन, महाराष्ट्र की साथी उल्का महाजन, विभिन्न जन संगठनों के साथी और पत्रकार राकेश दीवान शामिल हुए। इस परिचर्चा का संचालन हम किसान संगठन, झालावाड़ (राजस्थान) के साथी देवेंद्र भाई ने किया। परिचर्चा में जहां प्रतिरोध और हक़ अधिकारों के लिए अपनी सरकारों से बात

करने के सशक्त माध्यम के तौर पर जनगीतों, स्थानीय सांकृतिक अभिव्यक्तियों को ज़रूरी माना गया वहीं इसे संवाद के भी एक सशक्त माध्यम के तौर पर देखा गया।

एक सशक्त जनतंत्र की बुनियादी ज़रूरतें होती हैं जो उसे जीवित रखती हैं जो क्रमशः आलोचना और संवाद के रूप में हमारे सामने आती हैं। एक लोकतन्त्र में कोई किसी से झगड़ा नहीं करता बल्कि सभी लोग मिलकर अपनी अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं।

परिचर्चा के बाद, जिन गीतों को रिकॉर्ड किया गया है, उनका लोकार्पण किया गया और साथ ही संगठनों के साथियों ने अपने गीतों की प्रस्तुति भी दी।

इन गीतों में आदिवासियों, दलितों और महिलाओं की स्थिति और उन्हें बदलने की जद्दोजहद दिखी तो अपनी स्थिति को बदलने की चाह के साथ साथ पूरे समाज में बेहतरी के लिए ललक भी स्पष्ट दिखलाई दी। हमारा समाज कैसे एक शीशनमुक्त समाज बने, भेदभाव मुक्त समाज बने और कैसे इसमें मानवीय और सांवैधानिक मूल्य निहित हों इसे लेकर बहुत बेबाकी से इन गीतों के जरिये उभारा गया। इन गीतों में जहां विस्थापन का दर्द था तो महिलाओं के शोषण की व्यथा भी थी। अगर इनमें सत्ता की हंसी उड़ाई गयी तो उसे चेतावनी के स्वर भी मुखर हुए।

कार्यक्रम के समापन में, मजदूर किसान शक्ति संगठन के जाने माने कार्यकर्ता शंकर सिंह ने अपने गीतों से पूरे ऑडिटोरियम को झूमने पर विवश कर दिया।

समग्र कार्यक्रम का संचालन आशा रविन्द्रण, ज़ेबा, तेजस्विता और जयश्री ने किया।

अभी नहीं टूटेंगे मोती नगर बस्ती के 384 मकान

हाईकोर्ट ने 4 सप्ताह का स्टे दिया,1 अप्रैल को होगी सुनवाई

भोपाल। भोपाल की मोतीनगर बस्ती के 384 मकान अभी नहीं टूटेंगे। जबलपुर हाईकोर्ट ने 4 सप्ताह का स्टे दिया है। अब 1 अप्रैल को सुनवाई होगी। हाईकोर्ट के आदेश के बाद सोमवार को प्रशासनिक अफसर मंथन में जुटे रहे। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने अफसरों को भी तलब किया। बता दें कि बस्ती वालों ने विस्थापन का लाभ दिए जाने के संबंध में जबलपुर हाईकोर्ट में याचिका लगाई गई थी। इसके

बाद हाईकोर्ट ने शासन से जवाब मांगा है। 4 हफ्ते बाद अगली सुनवाई होगी। कांग्रेस नेता मनोज शुक्ला ने बताया, मोती नगर बस्ती वालों का विस्थापन किया जाना चाहिए। याचिका पर हाईकोर्ट ने मोती नगर के मकानों को तोड़ने पर फिलहाल यथास्थिति बनाए रखने के निर्देश दिए हैं। सरकार विस्थापन कर दें तो गरीबों के लिए अच्छी बात रहेगी। सुभाषनगर ब्रिज की थर्ड लेन और रेलवे की थर्ड लाइन के लिए यहां के 384 मकान और 110 दुकानों को तोड़ा जाना है। 9 फरवरी को दुकानें हटा दी गई थी। प्रशासन ने करीब 5 घंटे में दुकानें हटा दी थी। वहीं, 24-25 फरवरी को ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट होने के बाद मकानों को भी तोड़ा जाना था, लेकिन इससे पहले ही 4 सप्ताह का स्टे दे दिया गया है। ऐसे में अब मकानों को हटाने की कार्रवाई आगे बढ़ जाएगी। स्टे मिलने के बाद सोमवार को कलेक्टर समेत अन्य अधिकारियों ने बैठक की। टीएल मीटिंग में बस्ती के संबंध में चर्चा भी हुई।

सौरभ शर्मा को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा

ईडी ने वीसी से किया पेश, एक सप्ताह में आयकर ने 6 बार की है पूछताछ

भोपाल। आरटीओ के पूर्व कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने सोमवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से भोपाल की कोर्ट में पेश किया है। कोर्ट ने उसे फिर 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। इससे पहले ईडी ने सौरभ को 17 फरवरी को कोर्ट में पेश किया था। तब भी 3 मार्च तक न्यायिक अभिरक्षा में भेजने के आदेश दिए गए थे। सौरभ से ईडी और लोकायुक्त के बाद आयकर विभाग के अफसरों ने पूछताछ की है। एक सप्ताह में आईटी की टीम ने 6 बार सौरभ

और उसके सहयोगी शरद और चेतन से पूछताछ की है। जेल सूत्रों की माने तो सौरभ लगातार आयकर विभाग की टीम को गुमराह करता रहा। सोमवार से शनिवार के बीच आईटी की टीम ने लगातार 6 दिनों तक तीनों आरोपियों से पूछताछ की। लेकिन कैश और सोने से भरी कार से तीनों ने किसी भी तरह का लेना देना होने से साफ इनकार किया है। इससे पहले, लोकायुक्त और ईडी की टीम ने भी उनसे पूछताछ की, इन दोनों एजेंसियों को भी इन सवालों का जवाब नहीं मिला है। आयकर विभाग के आवेदन पर 13 फरवरी को न्यायाधीश आरपी मिश्रा की कोर्ट में सुनवाई हुई थी। कोर्ट ने अफसरों से पूछा था कि सौरभ से पूछताछ करने कौन-कौन जाएगा? इसके बाद कोर्ट ने आदेश सुरक्षित रख लिया था। 15 फरवरी को कोर्ट ने बगैर लिस्ट के पूछताछ की मंजूरी दे दी थी।

रेडक्रॉस के सेवा संकल्प को पीड़ित मानवता की सेवा में करें साकार

राज्यपाल की अध्यक्षता में मप्र शाखा की वार्षिक साधारण सभा संपन्न

सराहनीय कार्यों के लिए रेडक्रॉस की विभिन्न इकाइयां की गईं पुरस्कृत

भोपाल। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि रेडक्रॉस मानव सेवा का सशक्त प्रकल्प है। सदस्य, रेडक्रॉस के सेवा संकल्पों को पीड़ित मानवता की सेवा कार्यों में साकार करे। राज्यपाल श्री पटेल रेडक्रॉस की मध्यप्रदेश शाखा की वार्षिक साधारण सभा की बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने रेडक्रॉस की विभिन्न इकाइयों को पुरस्कृत किया। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि जिला इकाइयाँ रेडक्रॉस शाखा की पुरस्कृत इकाइयों से पीड़ितों की सेवा के बेहतर कार्यों को आगे बढ़ाने की प्रेरणा ले। इकाइयों से सकारात्मकता के साथ परस्पर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा करे। सेवा कार्यों का आदर्श प्रस्तुत करे। राज्य शाखा द्वारा प्राप्त निर्देशों और लक्ष्यों का एकनिष्ठता के साथ समय सीमा में पालन करे। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि सिकल सेल उन्मूलन प्रयासों को आगे बढ़ाने में रेडक्रॉस की भूमिका महत्वपूर्ण है। सिकल सेल की जागरूकता, जांच और उपचार के

कार्यक्रमों को ग्रामीण और दूरस्थ अंचलों तक आयोजित करे। चिन्हित मरीजों का इलाज संवेदनशीलता के साथ करे। उन्होंने उपस्थित जनों से अपील की है कि सिकल सेल से प्रभावित बच्चों और परिवारों की मदद के व्यक्तिगत प्रयास जरूर करें। राज्यपाल श्री पटेल का पुष्प-गुच्छ से स्वागत और स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया गया। रेडक्रॉस राज्य शाखा के चेयरमेन डॉ. गगन कोल्हे ने स्वागत उद्बोधन और मध्यप्रदेश रेडक्रॉस शाखा की 2023-24 का प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। राज्य शाखा के महासचिव श्री रामेन्द्र सिंह ने आगामी कार्य योजना प्रस्तुत की। कोषाध्यक्ष श्री शशांक श्रीवास्तव ने बैठक की कार्यवाही का संचालन किया। आभार उपाध्यक्ष श्री भरत झंवर ने माना। बैठक में राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव श्री के. सी. गुप्ता, रेडक्रॉस सोसायटी की राज्य और जिला शाखा के पदाधिकारी और सदस्य उपस्थित रहे।

प्रहलाद बोले-जनता के खिलाफ बोलने का सवाल ही नहीं

भीख वाले बयान पर मंत्री ने कहा-ऐसा आगे भी कहता रहूंगा

भोपाल। राजगढ़ के सुठालिया में दिए पंचायत मंत्री प्रहलाद पटेल के 'लोगों को भीख मांगने की आदत' वाले बयान ने तूल पकड़ लिया है। इस बीच पटेल ने सफाई दी है। जबलपुर में उन्होंने कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी से माफी की मांग की। उन्होंने कहा- बयान को तोड़-मरोड़कर पेश किया जा रहा है और इसे राजनीतिक रंग दिया गया है। मैंने अपने स्वजातीय लोगों के बीच यह बात कही थी, जिसे मैं वर्षों से कहता आ रहा हूं और आगे भी कहूंगा। वहीं, इस बयान पर नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने मंत्री पटेल

की तुलना रावण से करते हुए कहा कि एक वरिष्ठ मंत्री को इस तरह की भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। कांग्रेस ने मंत्री पटेल के बयान के विरोध में 5 मार्च को प्रदेशभर में जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शन का ऐलान किया है। कांग्रेस मंत्री पटेल से इस्तीफे की मांग कर रही है। प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा- जिस कार्यक्रम की बात की जा रही है, वह पूरी तरह से सामाजिक था, कोई राजनीतिक मंच नहीं था। उस कार्यक्रम में मेरे अलावा कांग्रेस के भी नेता मौजूद थे। जीतू पटवारी को अगर कार्रवाई करनी है, तो पहले उन कांग्रेसी नेताओं पर करें, जो मेरे साथ मंच पर थे। मंत्री पटेल ने कहा कि उनके खिलाफ दुराग्रह आज नहीं तो कल सामने आ ही जाएगा। जिस तरह से मीडिया में बातें सामने आ रही हैं, पहले मेरा पूरा बयान सुना जाए, उसके बाद ही इस पर टिप्पणी करना ठीक होगा।

जीतू ने कहा था- पीएम क्या यही ट्रेनिंग देकर गए ?

प्रहलाद पटेल ने जीतू पटवारी के बयान को लेकर कहा कि अगर आपको पूरी जानकारी नहीं है, तो फिर इस तरह का बयान देकर मेरे नेतृत्व और मेरी पार्टी को कटघरे में खड़ा नहीं किया जा सकता। अपने बयान पर अडिग रहते हुए पटेल ने दोहराया- यह सवाल ही नहीं उठता कि मैं जनता के खिलाफ बोलूं। पहले मेरा पूरा बयान सुना जाए, फिर सवाल उठाए जाएं। जबलपुर में मंत्री प्रहलाद पटेल की प्रेस कॉन्फ्रेंस का वीडियो शेयर कर जीतू पटवारी ने लिखा- प्रदेशवासियों, दंभ अपनी बात दोहरा रहा है और इस बार भी बहुत साफ तौर पर कह रहा है कि 'मैंने पहले भी कहा है और भविष्य में कहता रहूंगा। मतलब यह है कि अपने हक और न्याय की मांग को लेकर भाजपा के मंत्रियों के पास जाने वाली मप्र की जनता भिखारी थी, भिखारी है और भिखारी ही बनी रहेगी। पटवारी ने लिखा कि यदि यह सच है तो सीएम हेल्पलाइन और जन सुनवाई जैसी नौटंकी को भी बंद कर देना चाहिए। क्योंकि, वहां भी भाजपा को आवेदन के साथ जनता भिखारी ही दिखती होगी। मोहन सरकार के साथ नरेन्द्र मोदी सत्ता के खिलाफ हम पूरे प्रदेश में चरणबद्ध आंदोलन करेंगे और भाजपा के अहंकार को जमीन पर लाएंगे।

संपादकीय

बहनजी की मनमर्जी !

बसपा सुप्रीमो मायावती ने जिस तरह ताबड़तोड़ तरीके से अपने भतीजे आकाश आनंद को सारे पदों से हटाया फिर पार्टी से ही निकाल दिया, साथ ही अपने भाई तथा आकाश के पिता को नेशनल को?आर्डिनेटर बना दिया, उसका बाकी लोगों के लिए यही संदेश है कि बसपा में मायावती के अलावा किसी का भी राजनीतिक भविष्य सुरक्षित नहीं है। खुद को हटाए जाने पर आकाश आनंद ने संयत प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि बहनजी का आदेश सरकार आंखों पर, लेकिन मेरे लिए बड़ी चुनौती आगे है। इसे एक तरह से आकाश के राजनीतिक कॅरियर पर पूर्ण विराम माना जा रहा है। आकाश को हटाने के पीछे मायावती ने आकाश और उनके ससुर अशोक सिद्धार्थ की मनमानी को बताया है। लेकिन जिस तरह दोनो को दूध में मक्खी की तरह से निकाल फेंका गया, वह भी पार्टी का हित कम मायावती की मनमानी ज्यादा है। जानकारों का कहना है कि आकाश और सिद्धार्थ बसपा को दो फाड़ करने की फिराक में थे, इसकी भनक मायावती को लग गई और उन्होंने पार्टी को बचाने दोनो को चलता कर ?दया। साथ में यह घोषणा भी कर दी कि आखिरी सांस तक उनका कोई राजनीतिक उत्तराधिकारी नहीं होगा। यह भी कहा जा रहा है कि पार्टी संगठन को फिर से खड़ा करने और उसे मजबूती देने के लिए यह कदम उठाया गया है। दोनो को हटाने के बाद बसपा में बड़े पैमाने पर बदलाव संभावित हैं। मायावती की यह चिंता समझी जा सकती है कि दलितों की मुख्य पार्टी समझी जाने वाली बसपा का बीते एक दशक में वोट शेयर लगातार गिरता जा रहा है। 2024 के लोकसभा चुनाव में भी उसका वोट शेयर घटकर 2 फीसदी रह गया। बसपा 13 सीटों पर लड़ी थी और केवल 1 सीट पर जीत पाई। इसका मुख्य कारण बसपा की गलत रणनीति और संगठन का तार-तार होना है। मायावती के बाद पार्टी में कौन है, इसका जवाब दुनिया के सबसे कठिन सवालों में हो सकता है। यूपी में मायावती का भाजपा के साथ अघोषित ताल मेल भी पार्टी के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहा है। कार्यकर्ताओं को न तो यह पता है ?कि उन्हें करना क्या है और यह भी कि बसपा सत्ता के पक्ष में है या विपक्ष में, कोई नहीं जानता। कुल मिलाकर पार्टी मायावती की समझ, सनक और विवेक पर चलती है। पार्टी में कब कौन पदाधिकारी बना दिया जाए और कब चलता कर दिया जाए, यह कोई नहीं जानता। अब कहा जा रहा है कि पार्टी सुप्रीमो मायावती ने सिक्स मंथ प्लान लागू कर अगले छह महीने तक सभी काम रोककर पार्टी को मजबूत बनाने के निर्देश दिए हैं। यह सारी तैयारी यूपी में 2027 के विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखकर की जा रही है। नए प्लान के तहत हर मंडल में 4 4 कोऑर्डिनेटर बनाए जा रहे हैं। इसके अलावा, दो जिला प्रभारी और दो विधानसभा प्रभारी भी बनाए गए हैं। रविवार को हुई राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में अगले छह महीने में पार्टी को मजबूत बनाने के निर्देश दिए हैं। पार्टी की कोशिश है कि बसपा के साथ अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ा वर्ग के साथ ही मुस्लिमों को जोड़ा जाए। यह कितना हो पाएगा, कहना मुश्किल है। क्योंकि बसपा का कोर वोटर दलित भी पार्टी से दूर जा रहा है। किसी भी पार्टी को संजीवनी उसके सत्ता में होने से मिलती है। बसपा 15 सालों से सत्ता से दूर है और उसकी ताकत लगातार घटती ही जा रही है। आकाश आनंद को हटाने के पक्ष में मायावती ने तर्क दिया? कि उनके लिए परिवार से पहले पार्टी है। इसे सही भी मान लें तो बहनजी गैरपरिवार के किसी सदस्य को भी आगे नहीं बढ़ने देतीं।

नजरिया

अशोक भाटिया

लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

महाराष्ट्र हो या मिर्जापुर, कहानी सब जगह एक जैसी

पुणे के स्वारगेट एसटी स्टेशन पर 26 वर्षीय महिला पर हमले की घटना ने महाराष्ट्र के हर कोने में हलचल मचा दी है। अभी कल ही मिर्जापुर में न्यायालय ने षड्यंत्र के तहत किशोरी बहला फुसलाकर भगाने व सामूहिक दुष्कर्म के मामले में दो दोषी को 20-20 वर्ष व एक महिला दोषी को पांच वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई है। कोर्ट ने तीनों दोषियों पर अर्थदंड भी लगाया है। देहात कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी महिला ने 17 जून 2016 को नामजद अभियुक्तों के विरूद्ध नाबालिग पुत्री को षड्यंत्र के तहत बहला फुसलाकर भगाने व सामूहिक दुष्कर्म करने की तहरीर दी। तहरीर के आधार पर पुलिस अभियुक्तों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

हालाँकि पुणे रेप का आरोपी महाराष्ट्र के शिरूर तहसील के केगुनाट गांव से गुरुवार देर रात गिरफ्तार कर लिया गया। अब भले ही आरोपी पकड़ा गया । यक्ष प्रश्न अब भी वही है कि सुबह 5.30 बजे एसटी स्टेशन परिसर में खड़ी बस में जब यह घटना हुई तो सुरक्षा एजेंसियां क्या कर रही थीं? इस पर भी अब सवाल उठने लगा है कि क्या 26 साल की महिला सुबह एसटी को पकड़ने एसटी स्टेशन आती है, क्या कोई उसे बंद बस में ले जाता है? क्या पुरुष बस में चढ़ते ही महिला को प्रताड़ित करता है और क्षेत्र को बिना किसी बाधा के छोड़ देता है? ये सभी घटनाएं अविश्वसनीय और परेशान करने वाली हैं। इससे भी ज्यादा परेशान करने वाली बात यह है कि क्षेत्र के राजनीतिक नेता वसंत मोरे ने एसटी स्टेशन परिसर में बसों में तोड़फोड़ करने के बाद निरीक्षण किया और उनमें कंडोम और अन्य सामग्री पड़ी देखी। यह घटना इसलिए सामने आई है क्योंकि युवती ने पुलिस से शिकायत करने की हिम्मत की। उन महिलाओं, युवतियों, स्कूली छात्राओं को कौन नहीं बताता जिनके साथ दुर्व्यवहार किया गया है, इस डर से कि समाज क्या कहेगा और समाज उन्हें कैसे देखेगा? इसी से ऐसी अमानवीय घटनाओं पर से पर्दा उठता है और उनकी हिम्मत बढ़ती है।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री और गृह मंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इस घटना को गंभीरता से लिया है और जांच के आदेश दिए हैं। इस घटना की सच्चाई जल्द ही सामने आएगी। दोषियों का पता लगाया जाएगा, दोषियों को सजा भी मिलेगी। लेकिन क्या कोई जवाब दे सकता है कि समय बीत जाएगा? पीड़िता जीवन भर सदमे से उबर नहीं पाएगी। राज्य के कोने-कोने में अब संदेश पहुंच गया है कि राज्य सरकार के एसटी स्टेशन में अब महिलाएं, लड़कियां और लड़कियां सुरक्षित नहीं हैं। इससे राज्य सरकार की छवि और राज्य की छवि भी धूमिल हुई है। यह पता चला है कि निगम द्वारा नियुक्त निजी सुरक्षा तंत्र विफल हो गया है।

जांच के दौरान पता चला कि पुलिस ने घटना के दिन दोपहर 12 बजे से सुबह 6 बजे के बीच बस स्टैंड पर दो बार गश्त की थी। रात 1:30 बजे और फिर 3 बजे सीसीटीवी फुटेज में यह सब साफ दिखाई दे रहा है, इसलिए पुलिस ने अपनी ड्यूटी ठीक से निभाई है।

एसटी निगम ने एक निजी सुरक्षा एजेंसी को यह काम सौंपा था; लेकिन एजेंसी के सुरक्षा गार्डों ने अपने कर्तव्यों का ठीक से पालन नहीं किया और अगर उन्होंने जागरूकता दिखाई होती तो घटना से बचा जा सकता था; लेकिन जो कुछ हुआ उसके लिए राज्य सरकार निजी एजेंसी को दोषी ठहराकर अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकती क्योंकि डिपो प्रबंधक यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार था कि निजी सुरक्षा प्रणाली ठीक से काम कर रही थी। लेकिन उसने काम ठीक से नहीं देखा। इसीलिए घटना हुई। मौके पर 10-15 लोग मौजूद थे।लेकिन किसी को शक नहीं हुआ। इसी वजह से आरोपियों ने वारदात को अंजाम दिया। पुलिस ने घटना को नजरअंदाज नहीं किया है। पुलिस की जिम्मेदारी अलग है और एसटी स्टेंड क्षेत्र की सुरक्षा एसटी निगम और निजी सुरक्षा एजेंसियों पर निर्भर करती है। सरकार इस घटना को लेकर पुलिस का पक्ष ले रही है, जबकि डिपो के कर्मचारी राज्य सरकार के दायरे में हैं। हालांकि घटना के बाद राज्य सरकार और घरेलू एजेंसियां अत्यधिक सतर्क थीं, लेकिन अगर यह अलर्ट पहले दिखाया गया होता, तो दोषियों में इस तरह की अमानवीय हरकत करने की हिम्मत नहीं होती। एसटी स्टेशन पर खड़ा शिवशाही का आरोपी एक आदतन अपराधी था, उसके खिलाफ अतीत में कई मामले दर्ज हैं और वर्तमान में जमानत पर बाहर है। पुणे पुलिस ने उसकी तलाशी के लिए 1 लाख रुपये के इनाम की घोषणा की है और स्वारगेट स्टेशन पर उसके परिवार की जांच शुरू कर दी है। तैनात 23 सुरक्षाकर्मियों को निलंबित कर दिया गया है।

इस घटना ने एक ऐसी तस्वीर बना दी है कि एसटी स्टेशन महिलाओं, लड़कियों के लिए रात में, आधी सुबह में सुरक्षित नहीं हैं। दोषियों को सबक सिखाना होगा। आम लोगों को भी चौकीदार की भूमिका छोड़ देनी चाहिए और घटनाओं के बारे में जागरूकता दिखानी चाहिए। यहां तक कि अगर स्टेशन पर मौजूद 10-15 लोग लड़की के साथ जाते तो भी लड़की के साथ इस बात को लेकर उत्सुकता से चले जाते कि लड़की बंद ट्रेन में क्यों जा रही है। शायद आज हमने एक अलग तस्वीर देखी होगी। घटना होने पर अगर घटना होने से पहले बिना गुस्सा या गुस्सा जाहिर किए जागरूकता दिखाई जाए तो आने वाले दिनों में किसी के पास गुस्सा जाहिर करने की फुर्सत नहीं होगी।

इस घटना से स्पष्ट है कि कोई भी क्षेत्र, राज्य या देश अपराध-मुक्त नहीं हो सकता। ऐसे लोग हैं जिनके पास अपराध है। पुलिस से उनमें से प्रत्येक की रक्षा करने की उम्मीद करना भी अनुचित है। इस तथ्य को स्वीकार करते हुए, सरकार पुणे के स्वारगेट बस स्टेशन पर बलात्कार के बारे में बात नहीं कर सकती। इस राज्य में अपराधियों के लिए अभयारण्य जैसा वातावरण बनाने के लिए सरकार को दोषी ठहराया जाना चाहिए। वे सुझाव देते हैं। अगर हमारे क्षेत्र को बीड में तब्दील होने से बचाने का आह्वान पुणे जैसे शहर के नागरिकों को एक आह्वान देना है, जिसे कभी 'पूर्व का ऑक्सफोर्ड' कहा जाता था, जो अपने ज्ञान-संचालित ज्ञान-उन्मुख उद्योगों के लिए जाना जाता है, तो यह अभयारण्य को एक स्वाद देगा। और यह सब पुणे में। मराठवाड़ा में जो हो रहा है उसका अभी भी कोई अंत नहीं है। उत्तरी महाराष्ट्र के नासिक के उन सभी की तुलना में बुद्धिमान हैं। उन्होंने राजनेता बनना पसंद किया और की भाषा को राजनीति में लाया। विदर्भ की स्थिति भी इससे अलग नहीं है। कोंकण में पूरे महाराष्ट्र में जो लोग कल के महाराष्ट्र के 'हिंदू हृदय सम्राट' बनना चाहते हैं, वे आजाद हैं। यह कहना मुश्किल है कि मालवन में हाल ही में भारत-पाकिस्तान क्रिकेट मैच के बाद कथित देशविरोधी नारे लगाने वाले 15 वर्षीय लड़के की शिकायत पर जो हुआ वह कानून के शासन की अवधारणा के विपरीत नहीं है। यह सब क्या दर्शाता है?

अराजकता की ओर राज्य की प्रगति। अकेले पुणे में पिछले कुछ दिनों की घटनाओं की समीक्षा से इस तथ्य का पता चल जाएगा। इस नवीनतम बलात्कार की घटना के बाद, उस जिले के अभिभावक मंत्री अजीत पवार बड़े मुंह से कहते हैं कि दोषियों को फांसी दी जानी चाहिए। आरोपी को अभी-अभी पुलिस ने खोजा है परन्तु सवाल यह है कि अपराध को हल करने में 24 घंटे क्यों लगने चाहिए? बलात्कार जैसे अपराध को साबित करने के लिए न्यूनतम समय की आवश्यकता होती है। यहां, अपराध की रिपोर्ट होने में 24 घंटे लगते हैं। फिर भी, जब प्रशासनिक अनुभव रखने वाले अजितदादा आरोपी को फांसी देने की मांग करते हैं, तो वह अपनी पार्टी की सबसे पठनीय महिला प्रवक्ता के स्तर पर आते हैं। यह आरोपी एक राजनीतिक कार्यकर्ता बताया जाता है और उसके खिलाफ कुछ अन्य अपराध भी प्रतीत होते हैं। राजनीति बदमाशों की पहली शरणस्थली बन गई है। देश का कोई भी हिस्सा अपवाद नहीं है।

सेहत

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

महिलाओं में तेजी से बढ़ती कैंसर मृत्यु दर

कैंसर आज भारत सहित पूरी दुनिया में एक गंभीर स्वास्थ्य संकट बन चुका है। यह रोग केवल शरीर को नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज को गहरे तक प्रभावित करता है। भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR) द्वारा किए गए हालिया विश्लेषण में यह खुलासा हुआ है कि भारत में कैंसर से होने वाली मौतों की दर चिंताजनक रूप से बढ़ रही है, विशेष रूप से महिलाओं में यह दर पुरुषों की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ी है। ग्लोबोकैन (GLOBOCAN) 2022 के आंकड़ों के अनुसार, महिलाओं में कैंसर से मृत्यु दर में 1.2 प्रतिशत से 4.4 प्रतिशत तक वार्षिक वृद्धि हुई है, जबकि पुरुषों में यह वृद्धि 1.2 प्रतिशत से 2.4 प्रतिशत तक रही है। ये आंकड़े न केवल एक स्वास्थ्य आपातकाल की ओर संकेत कर रहे हैं, बल्कि सामाजिक और चिकित्सा व्यवस्था की कुछ कमियों को भी उजागर करते हैं। महिलाओं में कैंसर से बढ़ती मृत्यु दर एक जटिल समस्या है, जो केवल जैविक या चिकित्सीय कारणों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक, आर्थिक, जागरूकता और स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच की भी बड़ी भूमिका है।

भारत में हर पाँच में से तीन लोग कैंसर के निदान के बाद अपनी जान गंवा देते हैं। यह आँकड़ा इस बात की पुष्टि करता है कि कैंसर न केवल एक गंभीर रोग है, बल्कि भारत में इसका उपचार भी उतना प्रभावी नहीं हो पा रहा है। खासकर महिलाओं में यह स्थिति अधिक गंभीर होती जा रही है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में महिलाएँ अक्सर अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता नहीं देतीं। परिवार की जिम्मेदारियाँ, सामाजिक दबाव, और आर्थिक निर्भरता उन्हें समय पर जाँच और इलाज कराने से रोकते हैं। कई बार कैंसर के शुरुआती लक्षणों को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है, जिससे बीमारी तब पकड़ी जाती है जब यह अपने अंतिम चरण में पहुँच चुकी होती है। यह देरी कैंसर के इलाज को और कठिन बना देती है और मृत्यु दर को बढ़ा देती है।

महिलाओं में कैंसर की बढ़ती दर के पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं। सबसे पहले, जागरूकता की भारी कमी एक प्रमुख कारण है। स्तन कैंसर और गर्भाशय ग्रीवा (सर्वाइकल) कैंसर जैसे कैंसर, जो भारत में महिलाओं में सबसे आम हैं, यदि प्रारंभिक अवस्था में पकड़ लिए जाएँ, तो इनका इलाज संभव है। लेकिन दुर्भाग्यवश, महिलाओं में नियमित स्वास्थ्य परीक्षण की आदत नहीं होती। पैप स्मीयर टेस्ट, मैमोग्राफी, और अन्य आवश्यक जाँचें या तो करवाई नहीं जातीं, या फिर बहुत देर से करवाई जाती हैं। इस कारण बीमारी के बढ़ने के बाद ही इसका पता चलता है और तब तक इसका इलाज अधिक जटिल और महंगा हो चुका होता है।

इसके अलावा, भारतीय महिलाओं की जीवनशैली में हुए बदलाव भी कैंसर के बढ़ते मामलों के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण माने जा सकते हैं। आधुनिक जीवनशैली में शारीरिक गतिविधियों की कमी, असंतुलित आहार, धूम्रपान, शराब का सेवन, और अत्यधिक तनाव महिलाओं के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं। पहले के समय में महिलाएँ अधिक शारीरिक श्रम करती थीं और उनका खान-पान भी पारंपरिक और पोषक तत्वों से भरपूर होता था, लेकिन आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में यह सब धीरे-धीरे गायब होता जा रहा है। पैक्ड और प्रोसेस्ड फूड का बढ़ता सेवन, व्यायाम की कमी, और मानसिक तनाव ने महिलाओं में कैंसर के खतरे को कई गुना बढ़ा दिया है।

एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि महिलाओं में कैंसर के कई मामले अनुवांशिक और हार्मोनल असंतुलन से भी जुड़े होते हैं। स्तन कैंसर, गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर, और अंडाशय (ओवेरियन) कैंसर मुख्य रूप से हार्मोनल परिवर्तन और अनुवांशिक प्रवृत्तियों के कारण होते हैं। यदि किसी महिला के परिवार में पहले किसी को यह कैंसर हुआ है, तो उसके लिए इसका खतरा अधिक हो जाता है। लेकिन इस जोखिम के बावजूद, महिलाएँ अक्सर जाँच करवाने में देरी कर देती हैं, जिससे स्थिति और गंभीर हो जाती है।

महिलाओं में सबसे अधिक पाए जाने वाले कैंसरों में स्तन कैंसर, गर्भाशय ग्रीवा (सर्वाइकल) कैंसर, फेफड़ों का कैंसर, अंडाशय (ओवेरियन) कैंसर और कोलोरेक्टल कैंसर शामिल हैं। ये पाँच कैंसर भारत में महिलाओं की कैंसर मृत्यु दर का 44 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं। स्तन कैंसर सबसे आम है और इसकी मृत्यु दर भी अधिक है, क्योंकि यह देर से पहचाना जाता है। गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर एचपीवी (HPV) संक्रमण के कारण होता है और इसकी रोकथाम टीकाकरण और नियमित जाँच से संभव है, लेकिन भारत में इसको लेकर जागरूकता बहुत कम है। फेफड़ों का कैंसर धूम्रपान, वायु प्रदूषण और निष्क्रिय जीवनशैली के कारण बढ़ रहा है। इसी तरह, अंडाशय और कोलोरेक्टल कैंसर भी महिलाओं के लिए गंभीर चिंता का विषय बने हुए हैं।

इस गंभीर समस्या का समाधान केवल चिकित्सा उपचार तक सीमित नहीं हो सकता। इसके लिए व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है, जिससे महिलाओं को समय पर जाँच और इलाज कराने के लिए प्रेरित किया जा सके। महिलाओं को स्वयं अपनी सेहत को प्राथमिकता देने की मानसिकता विकसित करनी होगी। साथ ही, सरकार को भी इस दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता बढ़ाने के लिए मोबाइल हेल्थ वैन, निःशुल्क कैंसर जाँच शिविर, और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता है।

भारत में कैंसर की रोकथाम और इलाज को प्रभावी बनाने के लिए सरकार को स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करना होगा। सरकारी अस्पतालों में अत्याधुनिक जाँच और उपचार सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए, ताकि आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाएँ भी समय पर इलाज करा सकें। इसके अलावा, एचपीवी वैक्सीन को राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए, ताकि गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर को जड़ से खत्म किया जा सके। महिलाओं को स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना भी आवश्यक है। संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, धूम्रपान और शराब से परहेज, तथा मानसिक तनाव को कम करने से कैंसर के खतरे को काफी हद तक रोका जा सकता है। योग और ध्यान जैसी प्रथाओं को महिलाओं के दैनिक जीवन में शामिल किया जाना चाहिए, जिससे न केवल उनका शारीरिक स्वास्थ्य सुधरे, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य भी मजबूत हो।

महिलाओं में कैंसर से मृत्यु दर में हो रही वृद्धि एक गंभीर स्वास्थ्य संकट है, जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। यह केवल एक चिकित्सा समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक मुद्दा भी है। इस चुनौती से निपटने के लिए सरकार, स्वास्थ्य संगठनों, समाज और स्वयं महिलाओं को मिलकर प्रयास करने होंगे। कैंसर का शीघ्र निदान और समय पर उपचार मृत्यु दर को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। महिलाओं के जीवन को सुरक्षित और स्वस्थ बनाने के लिए हमें इस दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे, ताकि आने वाले वर्षों में इस बीमारी को नियंत्रित किया जा सके और भारत को एक स्वस्थ राष्ट्र बनाया जा सके।

और उन्होंने लिफाफे से दूरी बना ली

कटाक्ष

डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

प्रतिवर्ष देव जगने के पहले ही लखन जी जाग जाते हैं और विवाह, मांगलिक समारोह में जाने की तैयारी में जुट जाते। चातुर्मास कब खत्म हो रहा है, देव कब उठ रहे हैं, साल में कितने मुहूर्त हैं, कब तारा उदय और अस्त हो रहा है, किस माह में कितने कार्यक्रम आ रहे हैं अबूझ मुहूर्त कब है आदि के बारे में ज्योतिष, पंडितों से तारीख के मुहूर्त लेकर विवाह पत्रिकाओं का इंतजार करने लगते। यह उनकी मांगलिक कार्यक्रमों में जाने की प्रारंभिक कवायत की शुरुआत रहती है।

प्रोफेसर लखन जी पहले अनेक सालों से सरकारी मुलाजिम होने से विवाह आदि के निमंत्रण सीमा में आते थे। विभाग के साथी और कुछ मिलने जुलने वालों की पत्रिकाएं आती थी लेकिन जब से रिटायरमेंट के नजदीक आए और उन्होंने सार्वजनिक जिंदगी की रफ्तार बढ़ाई तो अनेक कार्यक्रमों के आमंत्रण आने लगे। जब निमंत्रणों की बाढ़ आई तो उनके बेटे नंदू ने इस बात के लिए राजी किया की शादी समारोह में जाए तो भेंट देने के लिए अच्छे लिफाफे छपाए, उन पर अपने पद, पदवी, डिग्री पता आदि छपवाए। 21वीं सदी के ए आय ट्रेंड बेटे की बात को स्वीकार कर लखन जी ने लिफाफे का वही स्वरूप दिया जो बेटे ने बताया।

खैर लिफाफे तो छप गए, उधर देव भी उठ गए तो शादी, मांगलिक भी कार्ड भी आने लगे। लखन जी और बेटे ने भी तय किया कि कितने रुपए लिफाफे में भरे।इस पर बेटा बोला कि पापा मेरा विवाह होना है।इसलिए रूपयो को लिफाफे में भरने में कंजूसी और कोताही मत करना।

लखन जी का ध्यान रिटायर होने के बाद इन लिफाफों पर ही होता क्योंकि जब नौकरी में थे और ऑनलाइन बे लाइन थी तब खाकी लिफाफे में उनके अनेक तबादले हुए इसके कारण वह लिफाफे की महत्ता अच्छी तरह से जानते थे की वह कहां से कहां फेंक देता है।लिफाफे के वजूद से वाकिफ लखन जी की समझ में तो गेट पर लगी उपहार पेटी थी जिसमें वे लिफाफा इसलिए घुसा देता की भेट में कितनी राशि दी है वह शादी में लगे उपहार वसूली के काउंटर पर लिख कर उजाकर नहीं करना चाहते थे।

शादी कार्यक्रमों में लखन जी लिफाफे के गणित में लगे रहते थे वह कहते थे एक जमाने में गांव के सत्यनारायण जी ने बान यानि उपहार की राशि के लिफाफे के भरोसे ही शादी मांड ली और उन्हें बान की राशि इतनी आई की शादी और उनकी आन बान, शान रह गई। लेकिन लखन जी के लिफाफे ने उनकी परीक्षा ले ली एक शादी में जाना था लिफाफा उसे जैकेट में रखा था , जिसमें अपने लेनदेन हिसाब किताब के कागज थे वही जैकेट पहनकर एक परिचित की बेटी की शादी में पहुंच गए और मंच पर जाकर लिफाफे के रंग का एक परचूनी की दुकान का पांच हजार का बिल दुल्हन के हाथ में थमा दिया।दुल्हन ने अपनी सहेली को थामने वाले लिफाफे को भी यह लिफाफा समझकर दे दिया। जब दूसरे दिन लिफाफे देखे गए तो लखन जी ने जो उपहार में लिफाफा दिया था सामने आया तो दुल्हन के पिता ने विवाह के खर्चे में समझ कर दुकान पर पेमेंट करने पहुंच गए दुकानदार ने बताया कि इसका पेमेंट तो हो चुका है तो पता चला है कि वह बिल उपहार के लिफाफे के रूप में आशीर्वाद का लिफाफा बनकर आया जब लखन जी को इस लिफाफे की मालूम पड़ी तो उन्होंने विवाह समारोह में जाने पर उपहार की राशि काउंटर पर लिखने की ठानी और लिफाफो को एक बड़े लिफाफे में बंद कर रख दिए।और बोले लिफाफा खुल जाए तो भेद खुल जाए इस कारण उन्होंने लिफाफा से दूरी बना ली।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सूर्यदीप कुशवाहा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

हे वसंत! बुरा न मानो फागुन आया है

चिंतालूजी कहते रहते हैं कि 'लोकतंत्र का वसंत' जा रहा है, राजतंत्र का फागुन धीरे -धीरे प्रवेश कर रहा है। यह लोकतंत्र की गंगा में प्रदूषित पानी है। पानी अशुद्ध तो लोकतंत्र बीमार होगा। पोखरा का पानी तो सुख जाता है। लेकिन अंतरात्मा की मर्यादा सुखा है। उटपटांग जवाब देना है। लेकिन जिम्मेदारी लेकर इस्तीफा का तौफा विपक्ष को नहीं देना है। अमर्यादित भाषा की आशा है। यह राजतंत्र की फागुन है बसंती बयार थोड़े ही है। चौथा खंभा में जंग लग चुका है। जुबान का सुर दरबारी हो चुका है। जब चौथा खंभा गाता है तो राग दरबारी ही गाता है, इसके सिवाय उसको अब कुछ नहीं आता है।हमें लगता, अब आया मताधिकार वसंत भी लौट चुका है। खाया पिया लोकतंत्र का अनाज नहीं पचाया तो क्या बचाया। हममें से बहुत से आम आदमी, बुद्धिजीवी और कवि चिंता बहुत करते हैं। वे चेताते कि राजतंत्र के फागुनी सरसराहट से सावधान! यह लोकतंत्र का दुश्मन है। कुछ आम लोग वसंत को भूलना अच्छा मानते हैं क्योंकि फागुनी बयार से मदहोश है। उसे वसंत से भी प्यारा अब फागुन लग रहा है। मुफ्त अनाज पर बहुत नाज है। वाह भाई ना कोई काम काज है। इसे मजहबी भावनाओं के आहत होने जाने का स्वर्णिम काल भी कहते हैं।यह अलौकिक भक्तिकाल है। जिसमें रोजगार का अकाल है। नतीजतन, यहां भक्तों की संख्या बढ़ती जा रही है। फागुन का विरोध करना पाप है।

अगर किसी को फागुनी बयार में कोढ़ खाज दिखे तो वे ऐसा देखने से बाज आएं। यहां कर्मों का लेखा-जोखा ऊपरवाला नहीं बल्कि फागुन की रहनुमाई करने वाले देंगे। अपना-अपना कर्म, अपना-अपना भाग्य सिर्फ आपके जुबान से है। फागुन का मजा लेते रहे, दूसरे विपक्ष की तरह बिलकुल ना रहे, जो सत्ता के आगे शर्मिंदा होते दिखते रहे हैं। करते भी क्या? जब आवाम ने उन्हें कुछ दिया ही नहीं, तो बेचारे क्या करते? वे स्वर्ग ला रहे, हम बेरोजगारी की चिंता में घुलते रहे। वे पाकिस्तान से खतरा बताते रहते, हम मंदिर में प्रसाद खाते रहते। बेरोजगारी की ऐसी-तैसी क्योंकि मंदिर-मस्जिद की ज़िद में जिंदगी फंसी है।चिंतालूजी को देश की पड़ी है, मुसीबतों का पहाड़ खड़ी है। नाकामी की तारीफ भी सीना ठोक करते हैं और अखबारों में इस्तिहार देते हैं। विपक्ष की असहाय मुद्रा देख गदगद फागुनी आहट है और लोकतंत्र आहत है। वो भरी सभा में तमाचा मार सकते हैं। मीडिया इसकी पैरवी करती है। न्यूज़ चैनल कुंभ से निकले बाबा को बुलाते हैं और हमाम में सब नंगे हो जाते हैं। बाबा को गुस्सा दिलाते हैं और बदनाम करने लिए वो बहुत नीचे गिर जाते हैं। फागुनी चुहलबाज़ी को बाबा समझ नहीं पाते हैं। हाथापाई के चपेट में आ जाते हैं....क्योंकि कुछ लोगों को उनकी प्रसिद्धि पच नहीं पा रही है। लोकतंत्र के वसंत में संत की पूजा होती है। यह तो फागुन है। यहां शगुन की वाट लगती है।

जब रंग उछाले जाएंगे तो असली -नकली सब रंगे सियार सा दिखते हैं।फागुन को लाने वाले खुश हैं। उनकी देखा-देखी में हम भी खुश हैं कि चलो, चापलूस युग में हमने चौथा खंभा को पिटते देखा। लेकिन नंबर तो सबका आएगा। अपनी बारी का धैर्य से इंतजार करें। चिंतालूजी को उलट दिखता है। हिटलर की सोच में मोच नहीं आ सकता तो फागुन के आने में लोच कैसे हो सकता है। चिंतालूजी का ऐसा सोचना था, लोकतंत्र में बेवकूफ बनाना ही जनसेवा है और स्वयं खाना मेवा है। फागुन मृगमरिचिका सा जुमला है। इसको साबित करते हैं कि तुम मुझे वोट दो, मैं तुम्हें विकास का स्वर्णिम भविष्य दूंगा। भक्तजन समझाते हैं कि हे वसंत! बुरा ना मानो फागुन आया है।

विक्रमादित्य पीठ

अजय बोकिल

लेखक पत्रकार हैं।

लोक मान्य विक्रम संवत् ही राष्ट्रीय पंचांग हो

संभव है कि संवतारंभ की तिथि के हिसाब से शक संवत् के पक्ष में ज्यादा प्रमाण हो, लेकिन इसी के साथ यह सवाल भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि प्रामाणिक होने के दावे के बाद भी शक संवत् जन पंचांग का हिस्सा क्यों नहीं बन पाया? आज भी हिंदुओं के सभी तीज त्यौहार, संस्कार व ज्योतिष गणनाएं ज्यादातर विक्रम संवत् के हिसाब से ही होती हैं न कि शक संवत् के हिसाब से। इसका भावार्थ यही है कि आज भी लोक मान्यता विक्रम संवत की ज्यादा है बजाए शक संवत् की। ऐसे में भारत सरकार को राष्ट्रीय पंचांग के रूप में विक्रम संवत् को स्वीकार करने की दिशा में ठोस अकादमिक प्रयास करने चाहिए ताकि इस संवत् के रूप में हिंदू संस्कृति के जयघोष के साथ-साथ सम्राट विक्रमादित्य की न्यायप्रियता के आग्रह की भी पुनर्प्रतिष्ठा हो। इसे और प्रामाणिक आधार देने के लिए नए ऐतिहासिक शोध और विद्वत चर्चा की मदद भी ली जा सकती है।

आजादी के बाद से ही यह बहस का विषय रहा है कि स्वतंत्र भारत का राष्ट्रीय पंचांग वो क्यों नहीं है, जो देश के अधिकांश हिस्से मे लोकमान्य है। अर्थात् लोकमान्यता उस विक्रम संवत् की है, जिसे महाकाल की नगरी उज्जयिनी के प्रतापी हिंदू राजा विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रांत हूणों को हराने की स्मृति को शाश्वत करने करने के ई ईस्वी पूर्व 78 में चलाया था। लेकिन भारत का आधिकारिक राष्ट्रीय पंचांग वो शक संवत् है, जो शक राजा रूद्रदमन ने 58 ईस्वी में भारतीयों पर विजय के उपलक्ष में चलाया जाता है। कहा जाता है कि शक संवत् के पक्ष में विद्वानों का पलड़ा सिर्फ इसलिए झुका, क्योंकि ऐतिहासिक प्रमाण शक संवत् के पक्ष में ज्यादा थे। संभव है कि संवतारंभ की तिथि के हिसाब से शक संवत् के पक्ष में ज्यादा प्रमाण हो, लेकिन इसी के साथ यह सवाल भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि प्रामाणिक होने के दावे के बाद भी शक संवत् जन पंचांग का हिस्सा क्यों नहीं बन पाया? आज भी हिंदुओं के सभी तीज त्यौहार, संस्कार व ज्योतिष गणनाएं ज्यादातर विक्रम संवत् के हिसाब से ही होती हैं न कि शक संवत् के हिसाब से। इसका भावार्थ यही है कि आज भी लोक मान्यता विक्रम संवत् की ज्यादा है बजाए शक संवत् की। ऐसे में भारत सरकार को राष्ट्रीय पंचांग के रूप में विक्रम संवत् को स्वीकार करने की दिशा में ठोस अकादमिक प्रयास करने चाहिए ताकि इस संवत के रूप में हिंदू संस्कृति के जयघोष के साथ साथ सम्राट विक्रमादित्य की न्यायप्रियता के आग्रह की भी पुनर्प्रतिष्ठा हो। इसे और प्रामाणिक आधार देने के लिए नए ऐतिहासिक शोध और विद्वत चर्चा की मदद भी ली जा सकती है।

शोध पत्रिका 'अधिगम' में प्रकाशित प्राचीन इतिहास के विशेषज्ञ डॉ. शिवकांत त्रिपाठी के अनुसार विक्रम संवत् भारत के अनेक संवतों में सर्वाधिक जीवनी शक्ति के रूप में उपस्थित रहा और आज भी प्रयोग में है। समूचे उत्तर भारत में तो यह जन्म से लेकर अंत तक प्रयुक्त होता है। डॉ. प्रशांत पुराणिक के अनुसार चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य द्वारा प्रवर्तित विक्रम संवत् ही हमारा राष्ट्रीय संवत् है। इतिहासकारों का मानना है कि विक्रमादित्य ने शकों को हराकर भारत को विदेशी शासकों से मुक्ति दिलाई थी। इसकी शुरूआत 57 ईसा पूर्व हुई। यह संवत् चंद्रमा पर आधारित है। अतः चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि से प्रारंभ विक्रम संवत् को ही हिंदू नव वर्ष का प्रारंभ भी कहा जाता है। यह संवत् बंगाल को छोड़कर पूरे भारत में प्रचलित है। डॉ.पुराणिक के अनुसार आरम्भिक शिलालेखों में इसका उल्लेख कृत संवत् और मालव संवत् के रूप में भी हुआ है। मोटे तौर पर मान्यता यही है कि सम्राट विक्रमाद्दि ने ईसा पूर्व 57 में इसका प्रचलन शुरू कराया था। कुछ लोग ईसवी सन् 78 और कुछ लोग ईसवी सन् 544 से भी इसका प्रारम्भ मानते हैं। फारसी ग्रंथ 'कलितौ दिमनः' में पंचतंत्र का एक पद्य 'शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनम्' का भाव उद्धृत है। कुछ विद्वान 'कृत संवत्' को 'विक्रम संवत्' का पूर्ववर्ती मानते हैं। अर्थात् विक्रम संवत् को पहले कृत संवत् के काम से जाना जाता था। लेकिन 'कृत' शब्द के प्रयोग की संतोषजनक व्याख्या नहीं की जा सकी है। कुछ शिलालेखों में मालवगण का संवत उल्लिखित है, जैसे-नरवर्मा का मंदसौर शिलालेख। इसमें 'कृत' एवं 'मालव' संवत् एक ही कहे गए हैं। हो सकता है कि कृत संवत् ही मालवा में मालव संवत् के नाम से जाना गया हो।

राजस्थान के बरनाला में मिले एक प्राचीन में 'विक्रम संवत्' का उल्लेख है। भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व के अनुसार उज्जैन के परमार वंश के राजा गंधर्वसेन के दूसरे पुत्र का नाम विक्रमादित्य था, जिनका जन्म 102 ईपू में हुआ था तथा देहांत ईसवी सन् 15 में हुआ। विक्रम संवत् का एक महत्वपूर्ण उल्लेख गुजरात के काठियावाड़ के ओखामंडल के पूर्व राजा जयकदेव के शिलालेख में मिलता है। इस शिलालेख के स्थापना वर्ष में विक्रम संवत् 794 का उल्लेख है, जो ईस्वी सन् के हिसाब से वर्ष 737 होता है। भारत में मुस्लिम शासकों के सत्ता पर काबिज होने तक देश में मुख्य रूप से विक्रम और शक संवत् ही प्रचलन में थे। बौद्ध साहित्य में भी इसका उल्लेख मिलता है। नेपाल के पूर्व राणा राजवंश ने 1901 में विक्रम संवत् को ही नेपाल के अधिकृत हिंदू कैलेंडर के रूप में मान्य किया था।

वर्तमान में भारत में ग्रिगोरियन कैलेंडर (जोकि अंतरराष्ट्रीय रूप से मान्य है) के अलावा शक संवत् और विक्रम संवत्। इनमें से भारतीय पंचांग के रूप में केवल शक संवत् को ही मान्यता दी गई है। इसके पीछे तर्क यही है कि इसके प्रारंभ की तिथि और इतिहास ज्यादा प्रामाणिक है। राष्ट्रवादी इतिहासकारों का मानना है कि भारत सरकार को शक संवत के बजाए केवल विक्रम संवत को ही आधिकारिक रूप से मान्य करना चाहिए। वैसे हिंदू धर्म में कई पंचांग (कैलेंडर) प्रचलित हैं, लेकिन जो सर्वाधिक मान्य है, वह विक्रम और शक संवत् ही हैं।

वैसे भारत में विक्रमादित्य नाम से और भी सम्राट हुए हैं, क्योंकि विक्रमादित्य एक उपाधि थी। इतिहासकार राजबली पांडेय, कैलाशचंद जैन आदि ने विक्रमादित्य को उज्जैन स्थित मालवा का सम्राट माना है, जिसने सिन्ध से घुसकर मालवा पर हमला करने वाले शकों को रोका। इस पराक्रमी विक्रमादित्य (चंद्रगुप्त विक्रमादित्य नहीं) का उल्लेख कई पारंपरिक कथा साहित्य में मिलता है, जिसमें 'बेताल पचीसी' और सिंहासन बत्तीसी' अहम है। 12वीं सदी में कल्हण द्वारा लिखी गई 'राजतरंगिणी' में उल्लेख है कि उज्जैन के राजा हर्ष विक्रमादित्य ने शकों को पराजित किया था। इसी विक्रमादित्य ने अपने मित्र मातृगुप्त को उस समय कश्मीर का शासक नियुक्त किया था।

विक्रम संवत् का प्रारंभ ईसा से 57 वर्ष पूर्व से माना जाता है। भारत के अलावा यह पंचांग नेपाल में भी मान्य है। बल्कि नेपाल का तो यह राष्ट्रीय पंचांग ही है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि जब नेपाल में राष्ट्रीय पंचांग माना गया है तो भारत में इसे राष्ट्रीय पंचांग स्वीकार करने में कौन सी बाधा है? विक्रम संवत का आरंभ गुजरात में कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से और उत्तर भारत में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है। माना जाता है कि वर्ष में 12 माह और 7 दिन का एक सप्ताह मान्य करने का प्रारंभ विक्रम संवत से ही हुआ। महीने का हिसाब सूर्य व चंद्रमा की गति पर आधारिक है। ये बारह राशियां ही 12 सौर मास हैं। जिस दिन सूर्य जिस राशि में प्रवेश करता है उसी दिन संक्रान्ति होती है। पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा जिस नक्षत्र में होता है, उसी आधार पर महीनों का नामकरण हुआ है। चंद्र वर्ष, सौर वर्ष से 11 दिन 3 घटी 48 पल छोटा है, इसीलिए प्रत्येक 3 वर्ष में इसमें 1 महीना जोड़ दिया जाता है। जिसे 'अधिक मास' कहते हैं। जिस दिन नव संवत् का आरम्भ होता है, उस दिन के वार के अनुसार वर्ष के राजा का निर्धारण होता है। उदाहरण के लिए 18 मार्च को विक्रम संवत् 2074 का प्रथम दिन था।

शुभोमय दास के अनुसार भारत में आजादी के बाद तक 30 अलग अलग हिंदू पंचांग प्रचलन में थे। ये सभी ज्योतिषीय गणनाओं और स्थानीय कालनिर्णायकों के हिसाब से बनाए जाते थे। ये कैलेंडर हिंदुओं के अलावा बौद्धों,जैनों और सिखों में भी मान्य थे। जबकि सरकारी कामकाज ग्रिगोरियन कैलेंडर के हिसाब से होता था। 1957 में भारत सरकार ने एक 'पंचाग सुधार समिति' गठित की। जिसने चांद्रसूर्य पंचांग, जिसमें हर चौथे वर्ष अधिक मास जोड़ा जाता है, को आधिकारिक रूप से मान्य किया गया। समिति की सिफारिशें मानते हुए शक संवत चैत्र प्रतिपदा 1879 अर्थात् 22 मार्च 1879 से इसका प्रारंभ माना गया। इसे ही भारत का राष्ट्रीय पंचांग भी स्वीकृत किया गया। वर्तमान शक संवत 1945 चल रहा है। लेकिन शक संवत् की जगह विक्रम संवत् के वरण का भावनात्मक महत्व भी है। यह हमे अपने राष्ट्रीय गौरव और हिंदू संस्कृति की महानता का बोध भी कराता है। ऐसी संस्कृति जो न केवल काल गणना में विश्व में सबसे प्राचीन रही है, बल्कि काल निर्धारण के साथ साथ राष्ट्रीय चेतना और न्यायप्रियता का आग्रह भी लिए हुए है।

पर्यावरण

डॉ. आरके पालीवाल

लेखक आयकर विभाग के सेवानिवृत्त अधिकारी हैं।

उद्गम स्थल पर सूखी बेतवा नदी को कौन बचाए?

जल स्रोत का विज्ञान और संरक्षण जटिल विषय है जिसे हमारे पुराने धर्माधीश और कम पढ़े लिखे पुरखे बहुत अच्छे से समझते थे। वर्तमान में ऐसा दिखाई नहीं देता है। वे गंगा और उसकी सहायक नदियों की पवित्रता बरकरार रखने का अभियान नहीं चलाते और संगम में मिलती नालों की गंदगी पर सरकार को नहीं घेरते। सरकार वोट के लिए मुफ्त के पानी की रेवड़ी बांटती है लेकिन जल संरक्षण के जमीनी काम नहीं करती। जलवायु और आबोहवा क्रमशः संस्कृत और उर्दू के ऐसे विलक्षण शब्द हैं जिनका किसी अन्य भाषा में कोई समानार्थी शब्द नहीं है। कहने का तात्पर्य है कि गंगा जमुनी तहजीब की इन दो भाषाओं ने संभवतः जल और वायु की सामूहिक अहमियत सबसे पहले सबसे अच्छे से समझी थी। सनातन परंपरा में इन दोनों को देवता की मान्यता इसी गहरी समझ की परिचायक है। जल स्रोत की पवित्रता बरकरार रखने के लिए हमारी संस्कृति में नदी, नौले, तालाब, झील और कुएं या बावड़ी के पास नंगे पैर जाने, उनमें मल मूत्र विसर्जन नहीं करने और उनके किनारे अंतर्वस्त्र नहीं धोने के नियम इसीलिए बनाए गए थे ताकि हमारे जल स्रोत आगामी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रहें।

तमाम वादों के बाद भी बुंदेलखंड की जनता को पानी देने वाली बेतवा नदी की धारा इन दिनों उद्गम स्थल पर ही सूख गई। यह कष्टपूर्ण है कि नदियों की पवित्रता बचाने का नारा देने वाले भी मरती हुई नदियों के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। मध्य प्रदेश में नर्मदा नदी पर नर्मदा लोक बन रहे हैं तो रेत का अंधाधुंध खनन भी हो रहा है। जगह-जगह पक्के घाट बन रहे हैं तो कचरा फैलाने वाला पर्यटन हो रहा है। विकास के नाम पर चल रही इन तमाम गतिविधियों में नदी और उसके साथ प्रकृति तिल-तिल दम तोड़ रही है। हमारी सरकारों द्वारा तय किए गए स्कूली और विश्वविद्यालय की शिक्षा के सिलेबस में प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के लिए कोई खास स्थान नहीं है। चारों तरफ सिर्फ धार्मिक भीड़ का अवैज्ञानिक उन्माद दिखाई दे रहा है।

जल स्रोत का विज्ञान और संरक्षण जटिल विषय है जिसे हमारे पुराने धर्माधीश और कम पढ़े लिखे पुरखे बहुत अच्छे से समझते थे। वर्तमान में ऐसा दिखाई नहीं देता है। वे गंगा और उसकी सहायक नदियों की पवित्रता बरकरार रखने का अभियान नहीं चलाते और संगम में मिलती नालों की गंदगी पर सरकार को नहीं घेरते। सरकार वोट के लिए मुफ्त के पानी की रेवड़ी बांटती है लेकिन जल संरक्षण के जमीनी काम नहीं करती।

जलवायु और आबोहवा क्रमशः संस्कृत और उर्दू के ऐसे विलक्षण शब्द हैं जिनका किसी अन्य भाषा में कोई समानार्थी शब्द नहीं है। कहने का तात्पर्य है कि गंगा जमुनी तहजीब की इन दो भाषाओं ने संभवतः जल और वायु की सामूहिक अहमियत सबसे पहले सबसे अच्छे से समझी थी। सनातन परंपरा में इन दोनों को देवता की मान्यता इसी गहरी समझ की परिचायक है। जल स्रोत की पवित्रता बरकरार रखने के लिए हमारी संस्कृति में नदी, नौले, तालाब, झील और कुएं या बावड़ी के पास नंगे पैर जाने, उनमें मल मूत्र विसर्जन नहीं करने और उनके किनारे अंतर्वस्त्र नहीं धोने के नियम इसीलिए बनाए गए थे ताकि हमारे जल स्रोत आगामी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रहें।

हमारी सरकार और राजनीतिक दलों को प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के लिए अपने मित्र और पड़ोसी राष्ट्र भूटान से भी सीखना चाहिए जिसने अपने नागरिकों की खुशहाली और अपने प्राकृतिक संसाधनों की अक्षुण्णता के लिए ग्रॉस डोमेस्टिक प्रोडक्शन (जीडीपी) की जगह ग्रॉस हैप्पीनेस प्रोडक्शन (जीएचपी) को अपना राष्ट्रीय विकास लक्ष्य बनाया है।

गंगा सहित तमाम नदियों की स्थिति बद से बदतरी की और बढ़ रही है। यमुना सफाई करने की तो अब कोई हिम्मत ही नहीं करता। यह स्थिति कमोबेश हर नदी की होने जा रही है। महानगरों को पानी उपलब्ध कराने के लिए सरकार शॉर्ट कट खोज रही हैं। दिल्ली में यमुना का जल स्तर घटता है तो गंग नहर के माध्यम से गंगा का जल दिल्ली लाकर तुरंत वाहवाही लूट लेते हैं। अहमदाबाद में साबरमती नदी सड़ती है तो नर्मदा के पानी से साबरमती का भूखा सूखा पेट भर कर अपनी पीठ थपथपा लेते हैं।

मध्य प्रदेश मूलतः प्राकृतिक संसाधनों का राज्य है जहां चम्बल, केन, बेतवा और नर्मदा जैसी अनेक छोटी बड़ी नदियों का मायका है। यहां भी स्थिति दिन ब दिन खराब होती जा रही है। कभी सदानीरा रही बेतवा नदी अपने उदगम स्थल पर ही मृत हो गई। इसकी सहायक नदी कलियासोत तो मंडीदीप के औद्योगिक कचरे से जहरीली नदी बन गई है जो बाल बेतवा को भी भयंकर प्रदूषण की चपेट में ले चुकी है। बेतवा के ईर्द गिर्द बसे गांवों के आदिवासी और ग्रामीण एवं कस्बाई समाज के लिए बेतवा ही गंगा है जिसे पुराण में मध्य भारत की गंगा कहा गया है। संस्कृति की दुहाई देने वाली सरकार के समय में नदियों की ऐसी दुर्गति माथे पर बड़ा कलंक है। व्यापक स्तर पर नागरिक जागरूकता अभियान ही नदियों को बचाने की दिशा में कुछ कर सकता है अन्यथा भयंकर विनाश हमारे सामने मुंह बाए खड़ा है।

दृष्टिकोण

अनिल त्रिवेदी

लेखक अभिभाषक हैं।

विचार बीज है और प्रचार बीजों का अप्राकृतिक विस्तार

विचार और प्रचार दोनों के बीच अन्तर्सम्बन्धों पर जब हम सोचते विचारते है तो यह सूत्र मिलता है कि विचार ही प्रचार का जन्मदाता है। विचार मूलतः चिन्तन प्रक्रिया का मूल या बीज ही माना जाएगा। यदि विचार न हो तो चिन्तन, मनन, लेखन और सृजन या विध्वंस कुछ भी उत्पन्न हो ही नहीं सकता। शून्य के विचार में शून्यता के अलावा कुछ भी नहीं हो सकता। शून्य में यदि कुछ भी अस्तित्व है तो वह शून्य तो नहीं शून्य से अलग कुछ और हो सकता है। विचार अस्तित्व है तो शून्य अस्तित्व का अभाव है। अस्तित्व साकार या सगुण हैं तो शून्य निराकार निर्गुण हैं।रेखा गणित में बिन्दु की जो परिभाषा मानी गई है कि जिसमें न तो लंबाई हो और न चौड़ाई उसे बिन्दु माना गया है।याने एक तरह से बिंदु काल्पनिक है क्योंकि बिन्दु की रेखागणितीय परिभाषा में कल्पना की गयी है कि जिसमें लंबाई और चौड़ाई न हो वह बिन्दु है। इस मान्यता पर ही समूची रेखागणितीय अवधारणाएं अस्तित्व में आई और मस्तिष्क में निराकार विचार विमर्श या चिंतन परम्परा का उदय हुआ या इसे यों भी कहा जा सकता है कि मान कर सोचने विचारने का एक विचार जन्मा।

विचार कुछ भी कहीं भी कैसे भी अचानक और सोचने समझने और समझाने के दौरान उठते बैठते, चलते फिरते, काम करते या शांत भाव से बैठे ठाले भी आ सकता है। विचार बातचीत या बोलने चालने और मिलने जुलने पर भी आ सकते हैं। कई बार बहुत सोचने पर भी विचार नहीं आते या आते हैं तो उनमें कोई सार नहीं होता फिर भी मनुष्य के मन मस्तिष्क में विचार की अंतहीन हलचलों का सिलसिला जारी रहता है। विचार यात्रा में मनुष्य को यह विचार आया कि विचारों को अपने आप तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए विचारों को फैलाना चाहिए इसी क्रम में प्रचार के विचार का जन्म हुआ। इस तरह हम मान सकते हैं कि प्रचार भी विचार का किसी निश्चित हेतु की दृष्टि से किया गया विस्तार ही है। विचार को प्रचारित करने के विचार ने मनुष्य समाज की चिन्तन प्रक्रिया को ही बदल डाला है और आज के कालखंड में प्रचार को लेकर नये नये प्रयोग करने का एक शास्त्र या मनुष्य के मन मस्तिष्क को प्रचार तंत्र के माध्यम से अपने अधीन कर ने का प्रचार साम्राज्य तो स्थापित हो चुका है।आज की दुनिया विचार से ज्यादा प्रचार की बावली होती प्रतीत हो रही है।आज सूचना प्रौद्योगिकी के काल खंड में मानव समाज में मौलिक विचार प्रक्रिया पर निर्भरता क्षीण होते जाने के साथ साथ प्रचार की अंतहीन भूख बढ़ती ही जा रही है । इस तरह प्रचार का अंतहीन सिलसिला सुनामी की तरह मनुष्य समाज की विचार प्रक्रिया को ही एक तरह से कुंद कर रहा है।

प्रचार के कृत्रिम साम्राज्य के अधीन मानव सभ्यता और समाज के सोच विचार और आपसी व्यवहार में अत्यधिक महत्वपूर्ण बदलाव आते दिखाई देते हैं। प्रचार तंत्र के अंतहीन विस्तार ने मानव संकल्पनाओं और दैनिक जीवन के आपसी व्यवहार और आचरण को ही पूरी तरह बदल डाला है। विचार मनुष्य की प्राकृतिक शक्ति है पर प्रचार के

लिए अप्राकृतिक संसाधन और आर्थिक, राजनैतिक, व्यापारिक और तकनीकी संस्थानों की शक्तियों का सहयोग और ऐजेण्डा चाहिए। अकेला मनुष्य अपने बल बूते विचार कर सकता है पर प्रचार अकेले बिना संसाधनों के संभव नहीं है।आज की दुनिया को यह लगने लगा है कि बिना प्राकृतिक विचारों के भी हम जी सकते हैं पर बिना प्रचार के हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं। हमारी व्यक्तिगत और सामाजिक, राजनैतिक, व्यापारिक, धार्मिक और आध्यात्मिक या निजी और सार्वजनिक गतिविधियों को बिना प्रचार के सफलता के साथ सम्पन्न करना संभव ही नहीं है यह चिन्तन प्रक्रिया तेजी से फैलतीं हुई दिखाई पड़ती हैं और आधुनिक काल के मनुष्य अपनी वैचारिक तेजस्विता के बजाय आभासी प्रचार तंत्र को आसान जीवन का पर्याय मानने की दिशा पकड़ते दृष्टिगत हो रहे हैं।

आज के कालखंड में प्राकृतिक जीवन श्रृंखला के बजाय आभासी अप्राकृतिक संसाधनों की बाढ़ मानव बसाहटों में मानव सभ्यता का आवश्यक हिस्सा बनती जा रही है। विचार विमर्श सहित लेखन चिंतन और सृजनात्मक शक्तियों जैसे प्राकृतिक मानवीय गुण अब अप्राकृतिक संसाधनों या शक्तियों के विशेष अधिकार सामान्यतः बनते जा रहे हैं। हमारा समूचा मानव जीवन अप्राकृतिक विस्तार पर निर्भर होता जा रहा है। राज्य, समाज और बाजार तीनों मनुष्यों को सृजनात्मक शक्ति का वाहक बना कर चैतन्य नागरिकों का समाज खडा करने की दिशा में बढ़ने के बजाय यंत्र आधारित अप्राकृतिक प्रज्ञा आधारित मनुष्य सभ्यता की दिशा में बढ़ते हुए मानवीय सभ्यता की विविधता को विलुप्त करने की दिशा में अग्रसर होने को ही विकसित सभ्यता का पर्याय बनने की दिशा में लगातार बढ़ रहे हैं। मानव मस्तिष्क में प्राकृतिक विचार और व्यवहार क्षीण हो कर अप्राकृतिक यंत्रों से चलने वाली दुनिया में मनुष्य यंत्रवत अप्राकृतिक संसाधनों के भरोसे जीने लगा है। मनुष्य जीवन को प्रकृति प्रदत्त वाणी,ज्ञानेंद्रियों और विचार विमर्श से ओतप्रोत चैतन्य नागरिक बनने के बजाय अप्राकृतिक संसाधनों पर आश्रित राज्य, समाज और बाजार का अदना उपभोक्ता बनता जा रहा है। आधुनिक दुनिया को अप्राकृतिक संसाधनों का अजायबघर जैसा बना रहा है। इस तरह सनातन समय से चली आ रही जीवन्त प्राकृतिक दुनिया को अप्राकृतिक संसाधनों पर आश्रित,जीवनी शक्ति विहीन उपभोक्ताओं का जीवन मानों एक बड़े कठपुतली के खेल में बदल रहा है।आज मानव समाज विचार की नैसर्गिक और जीवन्त दिशा को त्याग एक पूर्व निर्धारित योजना के तहत चलने वाली प्रचार साम्राज्य की आधुनिक दुनिया में मानव जीवन को बदलने की निरंतर कोशिश कर रहा है। मनुष्य जीवन का प्राकृतिक सनातन जीवन्त स्वरूप है। मनुष्य अप्राकृतिक संसाधनों पर जीने वाला यंत्र मानव नहीं है। प्रकृति प्रदत्त जीवन प्रचार से नहीं प्राकृतिक विचार श्रृंखला से ही सनातन काल से चलता आया है और चलता रहेगा अप्राकृतिक प्रचार साम्राज्य मनुष्य के प्राकृतिक विचार बीज को अप्राकृतिक संसाधनों से समाप्त नहीं कर सकता यही मनुष्य के विचार की मूल आधारभूमि है।

कुबेरेश्वरधाम पर उमड़ा आस्था का सैलाब, अंतिम दिन पहुंचे 10 लाख से अधिक श्रद्धालू

सीहोर (नप्र)। कुबेरेश्वर महादेव मंदिर में जारी शिव महापुराण कथा में लोगों की आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। लाखों की संख्या में श्रद्धालु कथा सुनने पहुंचे।

सोमवार को कथा के दौरान अंतराष्ट्रीय कथा वाचक पंडित प्रदीप मिश्रा ने कहा कि जिंदगी के तीन क्रम हैं। सबसे पहले लोग आपके काम पर हसेंगे, फिर आप जब आगे बढ़ने लगेंगे तब दुनिया के लोग आप पर ताने कसेंगे और जब आप उन्नति की सीढ़ी में चढ़ जाओगे तो लोग आपका हाथ जोड़ कर समान करेंगे। कोई भी कार्य करो तो पूरे भाव और निर्मल मन से करों आपके जीवन की सफलता यही है।

उन्होंने कहा कि भगवान शिव बहुत ही भोले हैं। आप स्वच्छ मन से याद करेंगे, तो ही हो प्रसन्न हो जाते हैं। आप पूजा पाठ भी नहीं करेंगे, लेकिन मन सुदंर है तो वह प्रसन्न हो जाते हैं। देवो के देव महादेव भगवान शंकर को औघड़दानी कहा जाता है। वह सबको साथ लेकर चलते हैं। वह व्यक्ति के मन की पवित्र व सुंदर सोच से ही प्रसन्न हो जाते हैं।

सोमवार को अंतिम दिन अंतर्राष्ट्रीय कथा वाचक पंडित प्रदीप मिश्रा ने संगीतमय कथा प्रारंभ की पंडाल भगवान भोले के जयकारों से गूंज उठा। परिसर के 55 एकड़ से अधिक मैदान में 10 लाख से अधिक श्रद्धालुओं के बैठने की व्यवस्था के लिए डोम और पंडाल लगाए थे। इसके बाद भी पंडालों के बाहर भी लाखों की संख्या में लोगों की भीड़ मौजूद थी, हर कोई श्रद्धालु पूरी आस्था के साथ गुरुदेव के भजनों लगा लो गिरा जा रहा हूं उठा लो उठा लो, हम सबके कल्याण कर दे भोले बाबा, हर मुश्किल आसान कर दे भोले बाबा, ये दुनिया वाले जलते हैं भोले बाबा के भरोसे चलते हैं, श्री शिवाय नमुस्तभ्यं आदि भजनों की प्रस्तुति उपस्थित श्रोता जमकर झूमें।

सभी पंडाल पूरी तरह से भरे हुए थे और पंडालों के बाहर भी लाखों की संख्या में लोगों की भीड़ मौजूद थी। तीन डोम के अलावा दो दर्जन अलग-अलग टेंट बनाए गए हैं। आधा दर्जन गेटों से श्रद्धालुओं का प्रवेश रखा गया है। 100 एकड़ क्षेत्र में एक दर्जन पार्किंग तैयार की गई थी।

भीमराव अम्बेडकर जयंती को लेकर शिवभूमि गार्डन में बैठक संपन्न

सुबह सवेरे सोहागपुर। 14 अप्रैल को डाक्टर भीमराव अम्बेडकर जयंती को प्रतिवर्षानुसार विशाल रुप से मनाने के संबंध में शिवभूमि गार्डन में बाबा साहब भीमराव अंबेडकर जन्मोत्सव समिति के तत्वावधान में बैठक संपन्न हुई।इस बैठक में पिछले साल से भी अधिक वृहद एवं विशाल बनाने के संबंध में विचार विमर्श किया गया। उल्लेखनीय है कि पिछले साल भीमराव अम्बेडकर की

जयंती में क्षेत्र के हजारों नागरिकों ने भाग लेकर अपनी सहभागिता निभाई थी। जिसमें समिति के सदस्यों ने ग्राम ग्राम जाकर कार्यक्रम में शामिल होने का आग्रह किया था। इस बैठक में नंदकिशोर खरे, हीरालाल उईके, देवीसिंह खुराना, हरिशंकर अहिरवार, सेवकराम अहिरवार ,मोनू मेहरा , मनोज बरगले , चंदनसिंह ,विनेश बौद्ध, उमाशंकर, उमेश उईके ,बलिराम अहिरवार, धरमूप्रसाद, लखनलाल, नंदकिशोर,गोपाल अहिरवार चीचली, चैनसिंह खुराना, कमलसिंह अहिरवार, उमेशकुमार,मदनलाल अहिरवार सुमित्रा देवी ताई,देवी सिंह खुराना, ज्ञानीप्रसाद अहिरवार समाजसेवी गणेश अहिरवार आदि उपस्थित थे। गणेश अहिरवार ने बताया कि इस साल भी भीमराव अम्बेडकर जयंती के अवसर सामाजिक बंधुओं के उद्बोधन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विशाल जुलूस निकालने को लेकर योजना बनाई गई है। आगामी समय में तीन मीटिंग बैठक पुनः की जाएंगी।

2 मई से होगा लक्ष्मीनारायण यक्ष, भूमि पूजन संपन्न

सुबह सवेरे सोहागपुर। क्षेत्र के विकास, उन्नति एवं समृद्धि के उद्देश्य को लेकर प्रति वर्षानुसार चतुर्थ यज्ञ का आयोजन शंकर मंदिर

मेला परिसर में होने जा रहा है।समिति के अधिवक्ता शिवकुमार पटेल ने बताया 2 मई से 12 मई 2025 तक श्री लक्ष्मी नारायण यज्ञ का आयोजन शंकर मंदिर मेला परिसर में होगा। 11 दिवसीय आयोजन में दिन के समय में श्रीमद् भागवत कथा व रात्रि में श्री राम कथा होगी।शंकर पार्वती मंदिर के मेला परिसर में 41 वर्षों के बाद यज्ञ होने जा रहा है। जिसका वैदिक रीति से आज भूमि पूजन कार्यक्रम संपन्न हुआ। पूजन में यज्ञ आचार्य विकास शर्मा,आचार्य अरविंद सहरिया ने संपन्न कराया। जिसमें मुख्य यजमान के रूप में धनसिंह रघुवंशी पटवारी ने सपत्नीक उपस्थित रहकर पूजा की।इस अवसर पर गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

आजीवन सहयोग निधि अभियान में पैसा नहीं, कार्यकर्ताओं का समर्पण भाव है लक्ष्य

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। आजीवन सहयोग निधि अभियान की भोपाल एवं नर्मदापुरम संभाग की बैठक भारतीय जनता प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा तथा संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा आदि की उपस्थिति में संम्पन्न हुई। इस बैठक में भोपाल

आजीवन सहयोग निधि अभियान के प्रभारी गोपी कृष्ण नेमा एवं नर्मदापुरम संभाग के प्रभारी, जिला अध्यक्ष आदि उपस्थित थे।इस बैठक को संबोधित करते प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा एवं संगठन मंत्री हितानंद शर्मा ने कहा कि आजीवन सहयोग निधि अभियान में पैसा लक्ष्य नहीं है। समस्त कार्यकर्ताओं का समर्पण भाव लक्ष्य है। आपने आगे कहा कि आजीवन सहयोग निधि अभियान के लिए जिले एवं संभाग के नेता मंडल स्तर तक प्रवास करेंगे।कार्यालय निर्माण और सुचारू रूप से चलाने के लिए एक एक कार्यकर्ता की भूमिका होनी चाहिए।सभी को समस्त जनप्रतिनिधियों से आजीवन सहयोग निधि का आग्रह करना है।संगठन की मजबूती के लिए प्रत्येक कार्यकर्ता की विशेष भूमिका होती है। इसलिए हर कार्यकर्ता से आजीवन सहयोग निधि लेना है। आपने अंत में पुनः कहा कि आजीवन सहयोग निधि अभियान में पैसा लक्ष्य नही है, सभी कार्यकर्ताओ का समर्पण भाव लक्ष्य है।

चौधरी व दौराया इन्दौर में सम्मानित

धार। इन्दौर में आयोजित सात दिवसीय एन जी ओ महासंघ के आयोजन में प्रदेशभर के एन जी ओ और सामाजिक संगठनों के द्वारा उत्कृष्ट कार्य करने वाले उनके कर्ताधर्ताओ का आयोजन के समापन अवसर पर इन्दौर के आनन्द मोहन माथुर सभागृह में सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अखिल भारतीय उपभोक्ता उत्थान संगठन नईदिल्ली के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अजय चौधरी व राष्ट्रीय सचिव सुनील दौराया धार का इन्दौर

सांसद शंकर ललवानी, बालयोगी और राज्यसभा सांसद उमेशनाथ, पूर्व राज्यमंत्री म. प्र . शासन योगेन्द्र महंत, जीव जन्तु संरक्षण बोर्ड के अध्यक्ष व केबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त रघुवीरसिंह रघुवंशी व म.प्र. एन जी ओ महासंघ के संस्थापक व अध्यक्ष शशि सातपुते द्वारा सम्मान कर प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया । इस सम्मान पर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष हरिशंकर शुक्ला, राष्ट्रीय महामंत्री ओम भारद्वाज (उज्जैन), प्रदेश अध्यक्ष संदीप सूरी, संभागीय अध्यक्ष डॉ. अशोक शास्त्री, धार जिलाध्यक्ष धमेन्द्र जोशी द्वारा बधाई दी गई।

बिना विस्थापन अतिक्रमण हटाने पहुंचे प्रशासन को कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने दी नसीहत

कांग्रेस जिलाध्यक्ष हेमंत वागद्रे के विरोध पर रुकी अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई

बैतूल। सोमवार को नगर पालिका राजस्व विभाग का अतिक्रमण विरोधी दल करबला क्षेत्र में अवैध निर्माण हटाने पहुंचा। टीम के साथ प्रशासनिक अधिकारी और पुलिस बल भी मौजूद था। जैसे ही कार्यवाही शुरू हुई, क्षेत्रवासियों ने कांग्रेस जिलाध्यक्ष हेमंत वागद्रे को सूचना दी। कांग्रेस जिलाध्यक्ष तुरंत मौके पर पहुंचे उनके साथ आदिवासी कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष रामू टेकाम भी पहुंचे और प्रशासन की इस कार्रवाई का विरोध किया। अतिक्रमण विरोधी दल द्वारा एक

मकान को तोड़ दिया गया था, जिससे स्थानीय लोगों में आक्रोश फैल गया। कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने अधिकारियों से चर्चा करते हुए कहा कि इस समय स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थियों की परीक्षा चल रही है, ऐसे में अतिक्रमण हटाने की इस कार्रवाई से उनकी पढ़ाई बाधित होगी। उन्होंने अधिकारियों से मांग की कि बिना पुनर्वास की प्रक्रिया अपनाएं मकानों को गिराना पूरी तरह से अवैध और अन्यायपूर्ण है।

कांग्रेस जिलाध्यक्ष के हस्तक्षेप के बाद क्षेत्रवासियों का आक्रोश बढ़ गया और वे भी मौके पर जुटने लगे। विरोध को देखते हुए प्रशासनिक अधिकारियों ने अतिक्रमण कार्रवाई को रोक दिया। कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने कहा कि वे जनहित के मुद्दों पर हमेशा खड़े रहेंगे और प्रशासन को बिना किसी पूर्व सूचना या विस्थापन की व्यवस्था किए, इस तरह की कार्रवाई नहीं करने देंगे।

सीमांकन के बाद भी गलत जगह बनाई जा रही सड़क

12 साल से अधूरी पड़ी थी बैतूल आमला मार्ग पर बरसाली के पास स्थित सड़क

बैतूल। बैतूल-आमला मार्ग पर पीडब्ल्यूडी की मनमानी के खिलाफ भारतीय सेना के हवलदार चंद्रप्रकाश यादव ने स्थानीय लोगों के साथ पहुंचकर कलेक्टर से शिकायत की है। उन्होंने आरोप लगाया है कि लोक निर्माण विभाग गलत जगह पर सड़क बना रहा है, जबकि राजस्व विभाग ने पहले ही सही स्थान पर सीमांकन कर दिया है। बैतूल आमला मार्ग पर बरसाली के पास स्थित सड़क 12 साल से अधूरी है, सड़क निर्माण अब भी सही नक्शे और खसरे के अनुसार नहीं हो रहा है, जिससे क्षेत्रवासियों को परेशानी हो रही है।

वर्तमान में जम्मू-कश्मीर में तैनात सेना के हवलदार चंद्रप्रकाश यादव ने बताया कि उनके परिवार ने इस मामले को कई बार अधिकारियों और सीएम हेल्पलाइन के माध्यम से प्रशासन तक पहुंचाया, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने अपनी शिकायत में स्पष्ट किया कि बैतूल-आमला मार्ग पर उनके गांव बरसाली के पास करीब 500 मीटर सड़क अधूरी पड़ी हुई है। यह वही हिस्सा है, जिसे पहले भी गलत तरीके से बनाया गया था। उन्होंने अपनी शिकायत में स्पष्ट किया है कि बैतूल-आमला मार्ग पर सड़क निर्माण में कुछ लोग जानबूझकर बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। ये लोग प्रशासन द्वारा तय किए गए सही नक्शे और सीमांकन के बावजूद निर्माण कार्य में रुकावट डाल रहे हैं, जिससे सड़क का निर्माण गलत दिशा में हो रहा है। उन्होंने मांग की है कि प्रशासन इन लोगों के हस्तक्षेप को रोककर सही स्थान पर सड़क का निर्माण सुनिश्चित करे।

पीडब्ल्यूडी और ठेकेदारों की सांठगांठ का आरोप- ग्रामीणों का भी कहना है कि इस सड़क के निर्माण में पीडब्ल्यूडी और ठेकेदारों की मिलीभगत है। बार-बार सीमांकन होने के बावजूद सही जगह पर निर्माण नहीं किया जा रहा है। यदि इस मामले को जल्द नहीं सुलझाया गया तो वे उच्च स्तर पर शिकायत दर्ज कराएंगे और जरूरत पड़ी तो न्याय के लिए कानूनी कदम भी उठाएंगे। उल्लेखनीय है कि बैतूल-आमला मार्ग पर इस सड़क को लेकर पिछले 12 वर्षों से विवाद चल रहा है। अनगिनत शिकायतों, सीमांकन और निरीक्षण के बावजूद अब तक सही जगह पर निर्माण नहीं हो पाया है।

सीएम राइज बैतूल-बाजार में रमन विज्ञान सप्ताह अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों का हुआ आयोजन

बैतूल। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025 की थीम 'विकासशील भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व के लिए भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना% के लिए मप्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (एमपीसीएसटी) के सहयोग से संस्था सी.एम.राइज़ शास. कृषि उ.मा.वि. बैतूल-बाजार में डॉ. रमन विज्ञान सप्ताह का आयोजन 21 फरवरी से 28 फरवरी तक किया है जिसके अंतर्गत प्रथम दिवस में विद्यालय में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के छात्रों ने विभिन्न प्रकार के मॉडल को प्रदर्शित किया। जिसमें आगर मालवा से आमंत्रित रिसोर्स पर्सन शैलेंद्र कसेरा द्वारा मॉडल का अवलोकन कर वैज्ञानिक सिद्धांतों को समझाया गया। विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन श्रीमती कौशिक मैडम एवं श्री पटेल सर द्वारा किया गया। श्री कसेरा द्वारा विद्यार्थियों को हैंड ऑन एक्टिविटी कराई गई जो स्टैम आधारित थी। जिसमें विद्यार्थियों ने अलग-अलग प्रकार की गतिविधियां सीखी एवं गतिविधियों का आनंद लिया। श्री कसेरा सर द्वारा कुरकुरे पैकेट की सामग्री बताकर होने वाले नुकसान से अवगत कराया। उल्लेखनीय है कि विगत 2 वर्षों से शैलेंद्र कसेरा द्वारा संस्था में छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास हेतु विज्ञान दिवस पर छात्रों से गतिविधियां कराई जा रही है। डॉ. रमन विज्ञान सप्ताह के द्वितीय दिवस के अंतर्गत विज्ञान प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। विज्ञान प्रश्नोत्तरी का आयोजन एवं संचालन रमेश पिंजारे, पुरुषोत्तम देशमुख, शहीद शाह, सुनीता पंडाग्रे, कीर्ति रघुवंशी द्वारा किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने विज्ञान से संबंधित प्रश्नों का रुचिपूर्ण तरीके से जवाब दिया। इसी क्रम में ऑनलाइन वार्ता वार्ता हेतु राजस्थान से सेवानिवृत्त शिक्षा अधिकारी हरिकृष्ण आर्य द्वारा आस पास के विज्ञान विषय पर एवं राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त ओमप्रकाश पाटीदार शाजापुर द्वारा बायोडायवर्सिटी विषय पर विद्यार्थियों से वार्ता की एवं विज्ञान की रोचक जानकारियों से रूबरू कराया गया। वहीं विद्यार्थियों द्वारा ऑनलाइन वार्ता में विषय विशेषज्ञ से सवाल पूछकर अपनी वैज्ञानिक शंकाओं को दूर किया। विज्ञान प्रदर्शनी एवं विज्ञान प्रश्नोत्तरी के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रमाण और उपहार देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य द्वारा विद्यार्थियों को शुभकामनाएं प्रेषित कर विज्ञान के प्रति अपनी जिज्ञासा बढ़ाने एवं रोचक तथ्यों के बारे में जानकारी प्रदान की। रमन विज्ञान सप्ताह की समस्त व्यवस्था समन्वयक दिलीप पटेल, सुधा कौशिक, पुरूषोत्तम देशमुख सहित समस्त शाला परिवार द्वारा की गई।

सेंट्रल बैंक आरसेटी बैतूल ने केसीसी को लेकर किसानों से की चर्चा

बैतूल। सेंट्रल बैंक आरसेटी बैतूल मे प्रधानमंत्री द्वारा पोस्ट बजट वेबीनार मे किसानों को संबोधित किये जाने के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम गत 1 मार्च को बैतूल क्षेत्र के किसानो को बड़ी संख्या में आमंत्रित कर किया गया। जिसमे किसानों के बीच वेबीनार में केसीसी से संबंधित विषयों पर विस्तृत चर्चा की गयी। जिसमे अग्रणी जिला प्रबंधक ए.के. सिह, आर सेटी निदेशक मंजूषा आठोले, फैकल्टी सोनम धोटे, बाबली गिनारे, कार्यालय सहायक अरविन्द देशमुख, मनोज माटेकर सहित बड़ी संख्या में किसान बंधु सम्मिलित हुए।

भवन नया, ढर्रा पुराना

जिला अस्पताल में नहीं सुधर रही व्यवस्था

सीहोर(नप्र)। जिला अस्पताल ना केवल सीहोर जिले के बल्कि आसपास के जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों के मरीजों के लिए इलाज का सबसे प्रमुख केंद्र है और अब तो इसे नया भवन भी मिल गया है लेकिन नया भवन मिलने के बाद भी यहां की व्यवस्थाओं में कोई सुधार नहीं आया है और यहां अभी भी पुराने ढर्रे पर ही सारा काम हो रहा है।

कभी यहां डॉक्टर ड्यूटी से नदारद रहते हैं तो कभी पैरामेडिकल स्टॉफ मरीजों के परिजनों से अभद्रता करता दिखाई देता है तो कभी यहां की सफाई व्यवस्था पर सवाल खड़े होते हैं और अभी तो एक मामले ने पूरे प्रदेश में रिकॉर्ड ही बना दिया जब ड्यूटी डॉक्टर के स्थान पर दो अन्य बाहरी डॉक्टर यहां मरीजों का इलाज करते पाए गए थे और मरीजों की जान से खिलवाड़ वाले इस मामले में भी अन्य सभी मामलों की तरह कोई कार्यवाही नहीं की गई जबकि मरीजों की जान को खतरे वाले इस मामले में ना सिर्फ बाहरी डॉक्टरों बल्कि उनसे ऐसा करवाने वाले उस ड्यूटी डॉक्टर पर भी मुकदमा कायम कर उन सभी का पंजीयन रद्द किया जाना चाहिए था।

अस्पताल प्रबंधन द्वारा ऐसा ना किया जाना

चिंताजनक और दुर्भाग्यपूर्ण है। ताजा मामले में भी जिला अस्पताल के नए भवन में उसी पुराने ढर्रे से काम होने की बात सामने आई है जिससे यहां की सफाई व्यवस्था की पोल एक बार फिर खुलती नजर आ रही है। सरकार ने करोड़ों रुपए लगाकर सीहोर जिला अस्पताल में नई बिल्डिंग तो बना दी लेकिन यहां के प्रबंधन के लापरवाहीपूर्ण और मनमाने रवैए के चलते ये नया भवन भी ज्यादा दिन नहीं चलेगा और रखरखाव के अभाव में जल्द ही ये भवन भी जर्जर हो जाएगा तथा शासन के करोड़ों रुपए बर्बाद हो जाएंगे। इस भवन के शौचालय में तथा अन्य सभी जगह साफ सफाई के अभाव में गंदगी के बड़े बड़े ढेर लग गए हैं जिससे मच्छर पनप रहे हैं। यहां आने वाले मरीज और उनके परिजन स्वस्थ होने के बजाय और अधिक बीमार हो जाते हैं। अब देखना ये होगा कि नए भवन में प्रबंधन नए तरीके से काम करते हुए सफाई व्यवस्था में बदलाव लाता है या उसी पुराने ढर्रे पर चलते रखकर मरीजों तथा उनके परिजनों की परेशानियों को और बढ़ाने का कारण बने रहता है।

तिवारी की सेवानिवृत्ति पर दी विदाई

सेवाकाल के दौरान तिवारी ने कई उपलब्धियां अर्जित कर मानवता की मिसाल प्रस्तुत की

धार। जिला भोज चिकित्सालय में पदस्थ रेडियोग्राफर चंद्रशेखर तिवारी की सेवानिवृत्ति के अवसर पर चिकित्सालय के स्टाफ ने उन्हें विदाई दी। सिविल सर्जन डॉ मुकुंद बर्मन ने शाल तथा श्रीफल देकर उन्हें सम्मानित किया । शासकीय कर्मचारी संघ ने भी उन्हें शाल तथा श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया । डॉक्टर संजय जोशी ने अपने उद्बोधन में श्री तिवारी के सेवाकाल पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 41 साल की लंबी अवधि तक चिकित्सालय में अपनी सेवाएं देना इतनी लंबी अवधि की सेवाओं के बाद भी उन्हें आज तक कभी भी किसी प्रकार का नोटिस या सूचना पत्र विभाग द्वारा नहीं दिया गया यह उनकी समर्पित कार्यशैली को दर्शाता है। कोरोना काल के दौरान अपनी जान की परवाह न करते हुए जिस प्रकार से श्री तिवारी ने तथा उनके समस्त अधीनस्थ

कर्मचारियों ने जिस जज्बे के साथ कार्य किया कलेक्टर पंकज जैन के द्वारा भी उन्हें सम्मानित किया गया। सेवाकाल के दौरान उन्होंने कई उपलब्धियां अर्जित की तथा मानवता की एक मिसाल प्रस्तुत की। सिविल सर्जन डॉ.मुकुंद बर्मन ने कहा कि शासन तिवारी को सेवानिवृत जरूर कर रही है पर हम चाहेंगे कि यह आगे भी अपने अनुभव से विभाग को अपनी सेवाएं देते रहे अपने जूनियर का मार्गदर्शन करते रहें। हम समय-समय पर उनकी सेवाएं लेते रहेंगे इस अवसर पर उनके साथी कर्मचारी स्टाफ बहुत भावुक हो कर आत्मीयता के साथ स्वागत कर ससम्मान अस्पताल से घर तक उन्हें उन्हें विदा किया । इस दौरान उनके साथी कर्मचारी, सिविल सर्जन डॉक्टर बर्मन तथा चिकित्सक तथा कर्मचारी मौजूद थे। श्री तिवारी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि सार्वजनिक सेवाओं में बहुत अधिक धैर्य के साथ काम करने की आवश्यकता होती है। बीमार व्यक्ति की मानसिक स्थिति को समझ कर कार्य करना होता है ।

अयोध्या सियाराम किला झुनरी घाट पर चल रही श्रीमद् रामकथा, द्वितीय दिवस में शिव पार्वती विवाह हुआ

धार। अयोध्या सरयू तट किनारे स्थित श्री राम किला प्रभजन भवन पर 18 महापुराण समिति सावरिया सेठ मंदिर धार के तत्वावधान और उड़ीसा निवासी घासीराम अग्रवाल, राधेश्याम अग्रवालअग्रवाल परिवार और परम पूज्य गुरुदेव पंडित रमाकांत जी व्यास के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले धर्मप्रेमी भक्तजनों के सहयोग से चल रही श्रीमद् रामकथा के द्वितीय दिवस व्यास पीठ पर विराजित भागवताचार्य पंडित रमाकांत जी व्यास ने व्यास पीठ से श्री रामकथा द्वितीय दिवस में पार्वती जन्म,सती की परीक्षा और सती के पूर्व जन्म की कथा के साथ शिव पार्वती विवाह संपन्न होने तक की कथा को विस्तार पूर्वक सुनाते हुए बताया कि इस कलयुग में सरयू तट किनारे स्थित चल रही रामकथा में वो ही भक्त जन सम्मिलित हो पाते है,जिन्होंने पूर्व जन्म में कुछ ऐसे कर्म किए होंगे जिसके कारण वे आज इस धाम में सरयू तट किनारे श्री राम कथा

को सुन रहे है । व्यासपीठ पर विराजित गुरुदेव ने कथा में विस्तार से बताते हुए बताया कि रामकथा में सती और शिव की कथा एक महत्वपूर्ण प्रसंग है, जिसमें सती की तपस्या और शिव के साथ उनके विवाह की कहानी सुनाई है।

सती भगवान शिव की पहली पत्नी थीं। वह दक्ष प्रजापति की पुत्री थीं और उन्होंने शिव को अपने पति के रूप में चुना था।

उक्त जानकारी 18 महापुराण समिति प्रमुख अशोक मनोहर जोशी के द्वारा दी गई कथा में आज शिव का रूप पंडित अशोक मनोहर जोशी एवं मां पार्वती का रूप सोनिया जोशी धार निवासी के द्वारा धारण किया गया था। जानकारी राम कथा आयोजन के आचार्य पंडित राहुल व्यास के द्वारा दी गई।

संक्षिप्त समाचार

नेशनल लोक अदालत में अधिक से अधिक प्रकरणों के निराकरण के संबंध में बैठक आयोजित

सीहोर (निप्र)। प्रधान जिला न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री सतीश चंद्र शर्मा के निर्देशानुसार 08 मार्च 2025 को आयोजित होने वाली आगामी नेशनल लोक अदालत में मोटर दुर्घटना दावा क्लेम के अधिक से अधिक प्रकरणों के निराकरण के लिए एडीआर भवन के सभाकक्ष में बीमा कंपनियों के अधिवक्ताओं एंव अधिकारियों की प्रिसिटिंग बैठक एवं विधिक साक्षरता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान नेशनल लोक अदालत में रखे गये राजीनामा योग्य प्रकरणों एवं मोटर दुर्घटना दावा प्रकरणों को अधिक से अधिक संख्या में चिन्हित कर निराकरण के सम्बंध में चर्चा की गई एवं 09 प्रकरणों में अंतिम सहमति बनी। बैठक में प्रधान जिला न्यायाधीश श्री सतीश चंद्र शर्मा, विशेष न्यायाधीश श्री हेमंत जोशी, प्रथम जिला न्यायाधीश श्री संजय गोयल, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री एमके वर्मा सचिव, विधिक सहायता अधिकारी श्री जीशान खान, इफको टोक्यो न्यू इंडिया इंश्योरेंस और यूनाइटेड इंश्योरेंस बीमा कम्पनी के अधिवक्ता व अधिकारीगण एवं क्लेम आवेदक अधिवक्तागण उपस्थित रहें।

01 मार्च से 18 अप्रैल तक किया जाएगा गेंहू उपार्जन

सीहोर (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार रबी विपणन वर्ष 2025-26 में समर्थन मूल्य पर गेंहू उपार्जन कार्य के लिए उपार्जन नीति जारी की गई है। जारी उपार्जन नीति के अनुसार 01 मार्च 2025 से 18 अप्रैल 2025 तक गेंहू का उपार्जन किया जाएगा। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने संबंधित अधिकारियों को जारी उपार्जन नीति के अनुसार उपार्जन की कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं।

दिव्यांग पुनर्वास केंद्र में चिन्हांकन शिविर आयोजित

सीहोर (निप्र)। जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र एवं अलिमको द्वारा दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण प्रदान करने के लिए चिन्हांकन शिविर का आयोजन किया गया। चिन्हांकन शिविर में 60 सहायक उपकरणों के लिए विभिन्न दिव्यांगता वाले 38 दिव्यांगजनों का चिन्हांकन किया गया, जिन्हें वितरण शिविर आयोजित कर सहायक उपकरण प्रदान किए जाएंगे।

अश्वगंधा की खेती के संबंध में कार्यशाला आयोजित

सीहोर (निप्र)। राज्य औषधि पादप बोर्ड के निर्देशानुसार जिला आयुष अधिकारी कार्यालय के सभाकक्ष में एक जिला एक औषधीय उत्पाद कार्यशाला एवं कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कृषि अधिकारियों द्वारा किसानों को अश्वगंधा की खेती के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इसके साथ ही विभिन्न किसानों ने विगत वर्षों के अश्वगंधा खेती करने के अनुभवों के बारे में बताया। कार्यशाला में जिला आयुष अधिकारी डॉ नरेंद्र सिंह लोधी, कृषि विस्तार अधिकारी डॉ. दीपक कुशवाहा, नोडल अधिकारी डॉ. अरुण सिंह सेंगर सहित किसान उपस्थित थे।

2600 रूपये के समर्थन मूल्य पर अब 15 मार्च से उपार्जित किया जायेगा गेहूं

हरदा (निप्र)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया कि रबी विपणन वर्ष 2025-26 में समर्थन मूल्य पर गेहूं का उपार्जन इंदौर, उज्जैन, भोपाल एवं नर्मदापुरम् में 1 मार्च से तथा शेष संभाग में 17 मार्च से खरीदी के निर्णय में बदलाव करते हुये राज्य सरकार ने किसानों की मांग पर पूरे प्रदेश में एक साथ 15 मार्च से ही खरीदी करने का निर्णय लिया है। श्री राजपूत ने बताया कि वर्तमान में गेहूं की फसल कटाई पूर्ण नहीं होने तथा मंडियों में आ रहे गेहूं में समर्थन मूल्य उपार्जन हेतु भारत सरकार द्वारा निर्धारित नमी के प्रतिशत से अधिक होने के कारण किसानों को असुविधा से बचाने यह निर्णय सरकार द्वारा लिया गया है। विगत वर्षों में भी समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन 15 मार्च के बाद ही प्रारम्भ किया जाता रहा है। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि रबी विपणन वर्ष 2025-26 में भारत सरकार द्वारा समर्थन मूल्य में 150 प्रति क्विंटल की वृद्धि करते हुए 2425 रूपये प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य घोषित किया गया है।

सम्बन्धों पर आधारित विकास परिषद का ध्येय है : मोहन नागर

बैतूल (निप्र)। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद की समृद्धि योजनान्तर्गत स्वैच्छिक संगठनों की एक दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ भारत भारती संस्थान के सभागृह में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ मुख्य अतिथि केंद्रीय जनजाति राज्य मंत्री श्री दुर्गादास उइके, मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष (राज्य मन्त्री दर्जा) श्री मोहन नागर ने भारत माता के चित्र समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर जी ने केन्द्रीय मंत्री जी का स्वागत किया।

इस अवसर पर परिषद के टास्क मैनेजर श्री सैयद शाकिर अली जाफरी सीए एवं वरिष्ठ समाजसेवी श्री सुनील हिराणी उपस्थित थे। अपने उद्बोधन में केंद्रीय राज्य मंत्री श्री उइके ने कहा कि समाज कार्य मे स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के माध्यम से मध्यप्रदेश में एनजीओ बड़ी संख्या में सरकार की योजनाओं का क्रियान्वयन कर सेतु का कार्य कर रहे है। शासन की योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे इसका प्रयास कर रहे हैं। आज जन अभियान परिषद अपने कार्यों से जन-जन का अभियान बन गई है। परिषद के

जन अभियान परिषद जन-जन का अभियान बन रही है: केंद्रीय मंत्री श्री दुर्गादास उइके

उपाध्यक्ष श्री नागर ने इस अवसर पर कहा कि एनजीओ के माध्यम से समाज की उन्नति के दो मॉडल चल रहे हैं। उसमें एक मॉडल पाश्चात्य मॉडल है जो अनुबन्ध आधारित विकास के आधार पर कार्य करता है। योजना के पूर्ण होने पर वे समाज से नाता तोड़ देते हैं। किन्तु हमारा भारतीय मॉडल सम्बन्धों पर आधारित विकास है, जो योजना पूर्ण होने के बाद भी समाज से सम्पर्क बनाकर रखते हैं व इनके सुख दुःख में सहभागी बनते हैं। मध्यप्रदेश इसी भारतीय मॉडल के आधार पर कार्य करने वाला संगठन है। स्वयंसेवी संगठनों की संरचना और प्रबंधन एनजीओ रजिस्ट्रेशन 1973 धारा 27 व 28, 80 जी, 12 ए के अलावा वार्षिक प्रतिवेदन साधारण सभा की बैठक, प्रबंधन कार्यकारिणी बैठक एवं अन्य दस्तावेजीकरण, सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के बारे में चार्टर्ड अकाउंटेंट एवं वरिष्ठ समाजसेवी श्री सुनील कुमार हिरानी एवं नमन सेवा समिति से श्री शिशिर चौधरी द्वारा स्वैच्छिक संगठनों की संरचना एवं प्रबंधन विषय पर विस्तृत जानकारी दी।

संभाग समन्वयक नर्मदापुरम श्री कौशलेश तिवारी ने सामाजिक अंकेक्षण एवं उसके प्रभाव आकलन पर विस्तार से जानकारी दी। कार्यशाला की रूपरेखा जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी ने प्रस्तुत की व सत्र का संचालन श्री अरविन्द माथनकर ने किया।

इस कार्यशाला में प्रशिक्षण में विकासखण्ड समन्वयक श्रीमती जयप्रकाशी परते, श्रीमती राधा बरोदे, श्रीमती मधु चौहान, श्री संतोष सिंह राजपूत, श्री विकास कुमरे, लेखापाल श्री रूपेश भूमरकर ,डाटा एंट्री ऑपरेटर श्री दिनेश पंवार एवं बैतूल जिले के 80 स्वैच्छिक संगठन सहभागिता कर रहे हैं। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

मातृत्व वंदना योजना तहत की गई शिकायत का शिकायतकर्ता के घर पहुंचकर कराया गया निराकरण

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह के द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में सीएम हेल्पलाईन तहत दर्ज एक-एक शिकायत के प्रभावी निराकरण की दिशा में लगातार कार्य किये जा रहे हैं। 50 दिवस से अधिक एवं ग्रेडिंग माह की शिकायतों का लक्ष्य टीएल बैठक के दौरान सभी विभागों को दिया गया है। जिसके अंतर्गत महिला एवं बाल विकास विभाग के परियोजना अधिकारी द्वारा शिकायतकर्ता के घर जाकर उन्हें समझाईश देकर शिकायतों को संतुष्टि पूर्वक बंद कराया गया है। शिकायत कर्ता श्रीमती आरती चैरसिया के द्वारा सीएम हेल्पलाईन पर प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना के तहत राशि नहीं मिलने की शिकायत की गई थी।

दूरभाष पर संपर्क कर बात करने पर संतुष्टि नहीं मिलने पर परियोजना अधिकारी श्री संजय सिंह द्वारा शिकायतकर्ता के घर पर्यवेक्षक एवं कार्यकर्ता को लेकर पहुंचे और उन्हें मोबाईल पर लॉगिन कर पोर्टल पर उनके खाते में 3000 रुपये की राशि प्रदाय की स्थिति बताई गई तथा 2000 रुपये की राशि पेमेंट इन प्रोसेस लिखा दिखाया गया एवं पोर्टल की स्थिति समझाई गई जिसके फलस्वरूप शिकायतकर्ता द्वारा संतुष्टि से शिकायत वापिस ली गई है।

सम्राट अशोक सागर बांध से कालिदास स्टाप डैम में पानी पहुंच व्यवस्था क्रियान्वित

विदिशा (निप्र)। जल संसाधन विभाग के कार्यपालन यंत्री श्री रमेश चैहान ने बताया कि सम्राट अशोक सागर बांध से आरबीसी नहर में 22 फरवरी की शाम से बेतवा नदी पर स्थित कालिदास स्टाप डैम भरने के लिए पानी छोड़ दिया गया है। जिससे बेतवा नदी में निरंतर पानी पहुंच व्यवस्था क्रियान्वित है। वर्तमान में बेतवा नदी में लगभग एक मिलियन क्यूबिक मीटर पानी सम्राट अशोक सागर डैम से भर चुका है। सम्राट अशोक सागर डैम द्वारा छोड़ गया पानी बेतवा नदी में पहुंचे की व्यवस्था की निगरानी कार्यपालन यंत्री श्री चैहान सहित अधीनस्थ अमले के द्वारा की जा रही है और अवरुद्ध उत्पन्न करने वाले संसाधनों को हटाये जाने कार्यवाही की जा रही है।

15 मार्च से 05 मई तक किया जाएगा गेंहू उपार्जन

सीहोर (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार रबी विपणन वर्ष 2025-26 में समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन कार्य के लिए उपार्जन नीति जारी की गई है। जारी उपार्जन नीति के अनुसार 15 मार्च 2025 से 05 मई 2025 तक गेहूं का उपार्जन किया जाएगा। पहले उपार्जन की तिथि 01 मार्च 18 अप्रैल निर्धारित की गई थी, पर अब शासन द्वारा इसमें संशोधन करते हुए उपार्जन की तिथि 15 मार्च से 05 मई निर्धारित की गई है। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने संबंधित अधिकारियों को जारी उपार्जन नीति के अनुसार उपार्जन की कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं।

गेंहू उपार्जन के लिए उपार्जन संस्थाएं नियुक्त

कलेक्टर श्री बालागुरू के. के आदेशानुसार गेहूं उपार्जन के लिए जिले में एमपीडब्ल्यूएलसी स्वनिर्मित गोदामों को जिला उपार्जन समिति की अनुशंसा एवं निर्णय के उपरांत विभिन्न तहसीलों में सेवा सहकारी विपणन समितियों को गेहूं उपार्जन के कार्य के लिए नियुक्त किया गया है। कलेक्टर श्री बालागुरू के. द्वारा जारी आदेशानुसार आष्टा तहसील के लिए आष्टा स्थित सहकारी विपणन संस्था मर्यादित को नियुक्त किया गया है। इसी प्रकार भैरूंदा तहसील के लिए भैरूंदा स्थित सेवा सहकारी समिति राला, रेहटी तहसील के लिए बोरी स्थित सेवा सहकारी समिति, सीहोर तहसील के लिए सीहोर स्थित सेवा सहकारी समिति बिजोरी तथा सीहोर नगर के लिए तकीपुर स्थित सहकारी विपणन संस्था को नियुक्त किया गया है।

अन्य निर्देश : कलेक्टर श्री बालागुरू के. द्वारा जारी आदेशानुसार कृषकों से गेहूं उपार्जन का कार्य सप्ताह में 05 दिवस (सोमवार से शुक्रवार) प्रात 8:00 बजे से शाम 8:00 बजे तक किया जाएगा तथा कृषक तौल पर्ची शाम 06 बजे तक जारी की जाएगी। इसके साथ ही किसानों से एफएक्यू नॉर्म्स अनुसार ही गेहूं का उपार्जन किया जाएगा। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने उपार्जन केन्द्रों पर सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। शासन द्वारा जारी उपार्जन नीति अनुसार सभी पंजीकृत किसान एफएक्यू गुणवत्ता की गेहूं ही उपार्जन केन्द्रों पर लेकर आयें। किसानों को अपनी सुविधा के अनुसार स्लॉट बुकिंग कर बुकिंग दिनांक से आगामी 07 दिवसों के भीतर फसल विक्रय कर ऑनलाईल (पक्का) बिल बनवाना आवश्यक है, बिल की तारीख निकलने के बाद पोर्टल पर बिल नहीं बनेगा। जिन किसानों के ऑनलाइन स्लॉट बुक होंगे सिर्फ उन्ही किसानों से फसल की खरीदी की जायेगी। उपार्जन केन्द्र पर प्रत्येक वारदाने में निर्धारित मात्रा अनुसार गेहूं की तौल की जाएगी।

मातृ-शिशु स्वास्थ्य के सुधार में कारगर साबित हो रही मातृवंदना योजना

सीहोर (निप्र)। केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा गरीबों के लिए कल्याण के लिए अनेकों जनकल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही है। प्रधानमंत्री मातृवंदना योजना भी उन्हीं योजनाओं में से एक है। इस योजना के तहत गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है, जिससे वे गर्भावस्था और प्रसव के दौरान उचित पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठा सकें एवं जन्म लेने वाले शिशु में पोषण संबंधी किसी भी प्रकार की कोई समस्या न हो। सीहोर निवासी श्रीमती विद्या कुशवाहा श्री उन महिलाओं में एक हैं, जिन्हें प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना का लाभ मिला है। श्रीमती विद्या कहती हैं कि इस योजना के तहत मिली सहायता राशि से उन्होंने अपने और अपने शिशु के स्वास्थ्य की विशेष देखभाल की। श्रीमती विद्या कुशवाहा ने बताया कि उन्होंने गर्भावस्था के दौरान आंगनवाड़ी केंद्र में अपना पंजीयन कराया और योजना के तहत उन्हें कुल 5000 हजार रूपये की राशि प्रदान की गई। इस आर्थिक सहायता से श्रीमती विद्या ने अपने पोषण पर विशेष ध्यान दिया, जिससे उनकी गर्भावस्था स्वस्थ रही और शिशु का जन्म सुरक्षित तरीके से हुआ। प्रधानमंत्री मातृवंदना योजना से श्रीमती विद्या कुशवाहा जैसी अनेक माताएं लाभान्वित हो रही हैं। श्रीमती विद्या ने इस योजना के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं प्रदेश सरकार को धन्यवाद दिया है।

कलेक्टर-एसपी ने किया कुबेरेश्वर धाम की व्यवस्थाओं निरीक्षण

सभी व्यवस्थाएं सुचारू रूप से संचालित करने के दिए निर्देश

सीहोर (निप्र)। कुबेरेश्वर धाम में शिव महापुराण कथा के सुचारू संचालन तथा श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए प्रशासन द्वारा अनेक व्यवस्थाएं की गई हैं। इसके साथ ही कलेक्टर श्री बालागुरू के. तथा एसपी श्री दीपक कुमार शुक्ला कथा स्थल एवं आस पास के स्थानों का निरंतर निरीक्षण कर सभी व्यवस्थाओं की सतत मॉनिटरिंग कर रहे हैं। इसी क्रम में कलेक्टर श्री बालागुरू के. तथा एसपी श्री शुक्ला ने कथा स्थल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि इस आयोजन के दौरान पेयजल आपूर्ति तथा विद्युत सप्लाई निर्बाध रूप से संचालित रहे। उन्होंने निर्देश दिए आयोजन के दौरान सफाई व्यवस्था निरंतर चलती रहे ताकि स्वच्छता बनी रहे। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी अधिकारी-कर्मचारी अपनी ड्यूटी पूरी मुस्तैदी से करते रहें तथा किसी भी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न होने पर संबंधित अधिकारियों के संज्ञान में लाएं तथा तुरंत वैकल्पिक समाधान करें। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए पर्याप्त इंतजाम किए जाएं। विशेष रूप से भीड़ नियंत्रण और सुरक्षा के मद्देनजर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात करने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देश दिए कि सुरक्षा और अन्य व्यवस्थाओं को चाक-चौबंद रखा जाए।

शासन की विभिन्न योजनाओं में 381 हितग्राहियों को 4 करोड़ 77 लाख का ऋण स्वीकृत एवं वितरित किया

रोजगार मेला में 135 आवेदकों का चयन हुआ

विदिशा (निप्र)। युवाओं को निजी कंपनियों के विभिन्न पदों पर चयन करने तथा शासकीय योजनाओं के माध्यम से स्वरोजगारमुखी बनाने के उद्देश्य से जनपद पंचायत कुरवाई में विधायक श्री हरिसिंह सप्रे के मुख्य आतिथ्य में रोजगार, स्वरोजगार एवं अप्रेंटिसशिप मेला आयोजित किया गया था। मेले का शुभारंभ विधायक श्री हरिसिंह सप्रे, जनपद अध्यक्ष कुरवाई श्रीमती ममता महाराज सिंह दांगी, श्री सीताराम सैनी, अध्यक्ष जनभागीदारी समिति, श्री दीपचन्द सप्रे, जनपद सदस्य, एसडीएम श्री नितिन जैन, जनपद सीईओ श्री आयुष अग्रवाल, तहसीलदारश्री संदीप शर्मा द्वारा दीपप्रज्वलन कर किया गया।

इस कार्यक्रम में विभिन्न सेक्टरों की कुल 14 कंपनियों द्वारा पंजीकृत 246 आवेदकों में से 135 आवेदकों का चयन किया तथा शासन की विभिन्न योजनाओं अंतर्गत कुल 381 हितग्राहियों को 4 करोड़ 77 लाख का ऋण स्वीकृत एवं वितरित कियेगये। जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र के महाप्रबंधक श्री अशोक श्रीवास्तव द्वारा युवा संगम कार्यक्रम के उद्देशों को रेखांकित करते हुये विभागीय योजनाओं की जानकारी दी गई। इसी प्रकार अन्य विभागों द्वारा भी उनके द्वारा संचालित स्वरोजगार योजनाओं की जानकारी दी गई। कार्यक्रम का आयोजन संयुक्त रूप से जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र, विदिशा, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान एवं रोजगार विभाग द्वारा किया गया था। इस अवसर पर श्री अनुराग श्रीवास्तव, प्राचार्य आईटीआई विदिशा, श्री एनसी जैन, प्राचार्य आईटीआई कुरवाई, जिला अग्रणी बैंक अधिकारी श्री बघेल, श्री अनूपदुबे, प्रबंधक जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र, विदिशा श्री अनुरूप चतुर्वेदी रोजगार कार्यालय सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का आभार श्रीमती जंयती कुमारी, सहायक प्रबंधक ने व्यक्त किया।

आगामी ग्रीष्म ऋतु के दृष्टिगत पेयजल आपूर्ति के करें पर्याप्त प्रबंध : कलेक्टर श्री बालागुरू के.

सभी कार्य गुणवत्तापूर्ण एवं समय सीमा में पूर्ण करने के दिए निर्देश

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरु के. ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में जिले के सभी नगरीय निकायों की बैठक आयोजित कर नगरीय निकायों में चल रहे विकास एवं निर्माण कार्यों तथा हितग्राही मूलक योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। बैठक में उन्होंने आगामी ग्रीष्म ऋतु को ध्यान में रखते हुए पेयजल के पर्याप्त प्रबंध करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जल अभाव वाले क्षेत्रों को चिन्हित कर पेयजल आपूर्ति की वैकल्पिक व्यवस्था की जाए। उन्होंने कहा कि आमजन को पेयजल के लिए परेशान ना होना पड़े इसके लिए अभी से आवश्यक व्यवस्थाएं कर ली जांए। कलेक्टर श्री बालागुरु के. ने नगरीय निकायों में संचालित अमृत 2.0 योजना के अंतर्गत पूर्ण एवं प्रगतिरत कार्यों की समीक्षा करते हुए शेष सभी कार्यों को निर्धारित समयसीमा में गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूरा कराने के निर्देश दिए। इसके साथ ही उन्होंने नगरीय निकायों में चल रहे विभिन्न विकास एवं निर्माण कार्यों के संबंध में अधिकारियों को निर्देश दिए की सभी कार्य गुणवत्तापूर्ण तथा समय सीमा में पूर्ण किए जांए। प्रधानमंत्री आवास योजना नगरीय की समीक्षा के दौरान उन्होंने संबंधित सभी मुख्य नगर पालिका अधिकारियों को निर्देश दिए की आवास का कार्य समय सीमा में पूरा कराया जाए तथा आवास पोर्टल पर जानकारी अपलोड की जाए। उन्होंने आगामी स्वच्छता सर्वेक्षण को ध्यान में रखते हुए नगरों में साफ सफाई व्यवस्था दुरुस्त करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि नियमित सफाई तथा अपशिष्ट का निष्पादन किया जाए। उन्होंनें नगर पालिकाओं के संबंधित अधिकारियों को 08 मार्च को आयोजित होने नेशनल लोक अदालत में उपस्थित होकर अधिक से अधिक प्रकरणों का निराकरण कराने के निर्देश। इसके साथ ही उन्होंने कायाकल्प अभियान, संजीवनी क्लीनिक, प्रधानमंत्री स्वनिधी योजना (शहरी) की समीक्षा की तथा अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

फरशी पत्थर के अवैध खनन पर दो ट्रक पत्थर पोकलेन मशीन से नष्ट किए

विदिशा (निप्र)। जिला प्रशासन द्वारा अवैध खनिज के परिवहन तथा भंडारण करने पर लगातार कार्यवाहियां की जा रही हैं। इसी कड़ी में कलेक्टर श्री रौशन कुमार सिंह के द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुपालन में आज पठारी तहसील क्षेत्र में खनिज विभाग की टीम द्वारा आकस्मिक निरीक्षण कर जांच के दौरान पठारी ट्राईबल हॉस्टल के पीछे हाथी घोड़ा खदान पर फरशी पत्थर के अवैध खनन पर टीम द्वारा कार्रवाई करते हुए तकरीबन दो ट्रक पत्थर पोकलेन मशीन की मदद से नष्ट किए गए हैं और अवैध खनन में लिप्त आईशर ट्रैक्टर ट्रॉली क्रमांक एमपी 40 एए 0261 द्वारा गौण खनिज भसुआ का अवैध परिवहन करते हुए पाए जाने पर जप्त कर पुलिस थाना पठारी प्रांगण में पुलिस अभिरक्षा में सुरक्षार्थ रखा गया है।

॥ मंदिरम् ॥

48

परली वैजनाथ मंदिर, महाराष्ट्र

परली वैजनाथ मंदिर या श्री वैद्यनाथ मंदिर भारत के महाराष्ट्र के बीड जिले में स्थित एक प्राचीन शिव मंदिर है। माना जाता है कि यह मंदिर लगभग 3000 साल पुराना है। वैजनाथ मंदिर एक छोटी पहाड़ी पर पत्थर से बना है और चारों तरफ से दीवार से घिरा हुआ है। यह मंदिर दो प्रसिद्ध किंवदंतियों से जुड़ा हुआ है। वैजनाथ मंदिर लिंग के अन्य नाम धनवंतरी और अमृतेश्वरी हैं। लिंग बनाने के लिए शालिग्राम पत्थर का इस्तेमाल किया गया है, जिसकी सतह बहुत चिकनी है। मंदिर का निर्माण पहाड़ी पर पत्थरों से किया गया था। मंदिर ज़मीन से लगभग 75-80 फ़ीट ऊपर है। इस मंदिर को महाराष्ट्र का एक ज्योतिर्लिंग मंदिर माना जाता है।

भोपाल कलेक्टर ने हाईकोर्ट के आदेश का नहीं किया पालन

हाईकोर्ट ने कहा-याचिका पर 10 दिन में जवाब दें, नहीं तो व्यक्तिगत रूप से उपस्थित हों

भोपाल। भोपाल कलेक्टर ने रेरा से जुड़े मामले में समय पर आरआरसी का निष्पादन नहीं किया, जिसके चलते मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने आदेश दिया है कि अगर 10 दिनों में यह कार्य पूरा नहीं होता है तो उन्हें व्यक्तिगत रूप से कोर्ट में उपस्थित होकर जवाब देना होगा। यह दूसरी बार है जब भोपाल कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह के खिलाफ अवमानना याचिका पर सुनवाई हुई, जिस पर कोर्ट ने नाराजगी जाहिर की है। जस्टिस ए.के. सिंह की अदालत में भोपाल कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह के खिलाफ दायर अवमानना याचिका पर सुनवाई हुई। मामले की अगली सुनवाई अब 12 मार्च को होगी। दरअसल, एक बिल्डर के खिलाफ दो लोगों ने भोपाल कलेक्टर को शिकायत दी थी, जो रेरा से संबंधित थी। इस मामले में रेरा ने 2020 में भोपाल कलेक्टर को आदेश दिया था कि वह आरआरसी (राजस्व वसूली प्रमाण पत्र) के तहत इस केस का जल्द से जल्द निष्पादन करें, लेकिन कलेक्टर ने कोई कार्रवाई नहीं की। इस देरी के चलते शिकायतकर्ता अरविंद वर्मा ने हाईकोर्ट में अवमानना याचिका दायर की थी, जिस पर हाईकोर्ट ने भोपाल कलेक्टर को 60 दिनों में आरआरसी

निष्पादित करने का निर्देश दिया था, लेकिन उन्होंने फिर भी कोई कार्रवाई नहीं की। इसी तरह, भोपाल निवासी भानु प्रताप ने भी बिल्डर के खिलाफ रेरा में शिकायत दर्ज कराई थी, जिसमें भोपाल कलेक्टर को कार्रवाई करने का आदेश दिया गया था, परंतु यहां भी कोई कदम नहीं उठाया गया। याचिकाकर्ता के अधिवक्ता कपिल दुग्गल ने बताया कि बिल्डर हिमांशु इन्फ्रास्ट्रक्चर के खिलाफ दो शिकायतें दर्ज करवाई गई थीं। अरविंद वर्मा और भानु प्रताप ने शिकायत में बताया कि बिल्डर के पास उनका लगभग 50 लाख रुपये फंसा हुआ है। रेरा ने इस शिकायत पर भोपाल कलेक्टर को आरआरसी के माध्यम से निष्पादन करने का आदेश दिया था। जब आदेश का पालन नहीं हुआ, तो दोनों याचिकाकर्ताओं ने हाईकोर्ट में अवमानना याचिका दायर की। हाईकोर्ट ने कलेक्टर को समय पर मामला निपटाने का आदेश दिया था, लेकिन उन्होंने इसका पालन नहीं किया। जब कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने बिल्डर के खिलाफ समय पर कोई कार्रवाई नहीं की, तो दोनों याचिकाकर्ताओं ने हाईकोर्ट में अवमानना याचिका दायर कर दी। पहली याचिका भानु प्रताप सिंह की थी, जिस पर 25 फरवरी को सुनवाई हुई। इसमें पाया गया कि भोपाल कलेक्टर ने कोर्ट के समक्ष अनुपालन रिपोर्ट पेश नहीं की थी, जिससे नाराज होकर हाईकोर्ट ने उनके खिलाफ जमानती वारंट जारी किया और 12 मार्च को उपस्थित होने का आदेश दिया। दूसरी याचिका अरविंद वर्मा की थी, जिसमें हाईकोर्ट ने भोपाल कलेक्टर को 10 दिन के भीतर मामले का निपटारा करने का निर्देश दिया है। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो उन्हें व्यक्तिगत रूप से कोर्ट में उपस्थित होना पड़ेगा।

अब देश का 'फूड बास्केट' बनेगा मध्यप्रदेश : मुख्यमंत्री

कहा-जीआईएस निवेश संगम से तेज होगी हरित और श्वेत क्रांति

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश की समृद्ध कृषि परंपरा और सतत विकास की नीति अब वैश्विक निवेशकों का ध्यान आकर्षित कर रही है। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट भोपाल में निवेशकों ने कृषि, खाद्य प्रसंस्करण और दुग्ध उत्पादन क्षेत्र में 4,000 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्रस्तुत किए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इसे प्रदेश की हरित और श्वेत क्रांति के लिए मील का पत्थर बताया। उन्होंने कहा कि जीआईएस भोपाल में प्राप्त निवेश प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के भारत को वैश्विक 'फूड बास्केट' बनाने के संकल्प को साकार करने में मध्यप्रदेश अहम भूमिका निभाएगा। मध्यप्रदेश पहले ही देश का सबसे बड़ा जैविक खेती वाला राज्य बन चुका है। देश की कुल जैविक खेती में 40 प्रतिशत योगदान देने वाले राज्य ने अब इस क्षेत्र का विस्तार कर 17 लाख हेक्टेयर से 20 लाख हेक्टेयर तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा है। सरकार किसानों को निःशुल्क सोलर पंप उपलब्ध करा रही है ताकि वे पर्यावरण अनुकूल तरीकों से उत्पादन कर सकें। राज्य में उद्यानिकी क्षेत्र में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। बीते वर्षों में बागवानी फसलों का रकबा 27 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 32 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है। इससे राज्य के फल-सब्जी उत्पादकों को भी सीधा लाभ मिलेगा।

मध्यप्रदेश बनेगा दुग्ध उत्पादन का हब

प्रदेश दूध उत्पादन में देश के अग्रणी राज्यों में शामिल हो चुका है। वर्तमान में देश के कुल दुग्ध उत्पादन में 9 प्रतिशत योगदान देने वाला मध्यप्रदेश अब इसे 20 प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि सांची ब्रांड ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अपनी मजबूत पहचान बना ली है। प्रदेश में वर्तमान में प्रतिदिन 591 लाख किलो दूध का उत्पादन हो रहा है। इससे प्रदेश देश में तीसरा सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक राज्य बन गया है।

जीआईएस-भोपाल से रोजगार के नए अवसर

जीआईएस-भोपाल में खाद्य प्र-संस्करण क्षेत्र में आये 4,000 करोड़ रुपये के निवेश से प्रदेश में 8,000 से अधिक रोजगार के अवसर सृजित होंगे। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के बढ़ने से किसान सीधे अपने उत्पाद का बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकेंगे, जिससे राज्य की आर्थिक मजबूती को और बढ़ावा मिलेगा। जीआईएस-भोपाल में हरित और श्वेत क्रांति को लेकर मिले निवेश प्रस्तावों ने मध्यप्रदेश को देश का 'फूड बास्केट' बनाने की दिशा में मजबूत कदम बढ़ाने का अवसर दिया है। कृषि, जैविक खेती, खाद्य प्रसंस्करण और दुग्ध उत्पादन में हुए ये निवेश प्रदेश के विकास की नई इबारत लिखने को तैयार हैं।

नवाचार और खाद्य प्र-संस्करण में निवेश की बाढ़

जीआईएस-भोपाल में 'सीड-टु-शेल्फ' थीम पर केंद्रित एक विशेष सत्र आयोजित किया गया, जिसमें निवेशकों ने प्रदेश की अपार संभावनाओं को पहचाना। राज्य में 8 फूड पार्क, 2 मेगा फूड पार्क, 5 एग्रो-प्रोसेसिंग क्लस्टरऔर एक लॉजिस्टिक्स पार्क स्थापित किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्र-संस्करण योजना के तहत 930 करोड़ रुपये की सहायता राशि स्वीकृत की गई है। यहां 70 से अधिक बड़ी औद्योगिक इकाइयां और 3,800 से अधिक सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाइयाँ पहले ही सक्रिय हैं। इनके जरिए कृषि उत्पादों की प्रोसेसिंग को बढ़ावा दिया जा रहा है। प्रदेश में सिंचित रकबा तेजी से बढ़ा है। वर्ष 2003 में केवल 3 लाख हेक्टेयर भूमि सिंचित थी, जो अब 50 लाख हेक्टेयर तक पहुंच चुकी है। सरकार ने वर्ष 2028-29 तक इसे 1 करोड़ हेक्टेयर तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा है। नर्मदा, चंबल, ताप्ती, बेतवा, सोन, क्षिप्रा, कालीसिंध और तवा जैसी सदानीरा नदियों पर बनी सिंचाई परियोजनाओं से यह लक्ष्य संभव हो सकेगा।

एविएशन और सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में निवेश करेगा दक्षिण कोरिया

सीएम से मिले ईसीडीएस ग्रुप के सदस्य,मेडिकल डिवाइस में भी दिखाई रुचि

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि साउथ कोरियन ज्वाइंट वेंचर ग्रुप प्रदेश में बने बेहतर औद्योगिक वातावरण को देखते हुए से मेडिकल उपकरणों, मेडिकल एआई, नैनो टेक्नोलॉजी, बायो पॉलीमर और नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में निवेश का इच्छुक है। आज मंत्रालय में साउथ कोरिया के ईसीडीएस ग्रुप के निवेशकों और शोधार्थियों ने भेंट की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव से चर्चा में प्रतिनिधि मंडल ने बताया कि उनका समूह उज्जैन के मेडिकल डिवाइस पार्क में शोध और निर्माण पर केंद्रित इकाई स्थापना की दिशा में पहल कर रहा है। इस इकाई में यूरिन परीक्षण से कैंसर के लक्षणों की पहचान करने के लिए किट निर्मित करने की योजना है। इससे प्रारंभिक अवस्था में कैंसर की पहचान कर तत्काल इलाज आरंभ करने में मदद मिलेगी। समूह प्रदेश में एविएशन सेमीकंडक्टर आदि क्षेत्र में भी निवेश का इच्छुक है। इसके साथ ही समूह ने कौशल उन्नयन के लिए तकनीक और विशेषज्ञता साझा करने में भी रुचि दिखाई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव से डॉ. वुंग कवांग यांग, डॉ. युंगहून लिम, डॉ. सिओक किम, श्री जोंग शिओल जंग, श्री जेली शिओन, श्री वू सिओक शुंग तथा श्री राजेश भारद्वाज ने भेंट की। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, प्रमुख सचिव औद्योगिक नीति एवं निवेश संवर्धन श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह उपस्थित थे।

सीएम बोले-भोपाल में आज लघु सिंहस्थ जैसा नजारा

मुख्यमंत्री ने किया 42वीं नेशनल रोइंग चैंपियनशिप का शुभारंभ

भोपाल। भोपाल में 42वीं नेशनल रोइंग चैंपियनशिप का मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शुभारंभ किया। बड़े तालाब पर 3 से 7 मार्च तक प्रतियोगिताएं चलेगी। जिसमें देशभर से 500 से अधिक खिलाड़ी हिस्सा ले रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा- भोपाल का यह नजारा इस गेम में चार चांद लगा रहा है। आप कई जगह गए होंगे लेकिन यहां की जैसी खूबसूरती कम ही जगह मिली होगी। पूरे देश से अलग-अलग प्रकार के खिलाड़ी आए हुए हैं। यहां आज लघु सिंहस्थ का नजारा

दिखाई दे रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा- मध्यप्रदेश ने थोड़े दिन पहले ही राष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं में देश में तीसरा स्थान हासिल किया है। कुल 9 मेडल जीतकर हम लाए थे। 2014 से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं, तब से वे सभी क्षेत्रों की प्रतिभाओं को बढ़ा रहे हैं।

सारंग बोले- सभी विधानसभा में एक खेल परिसर बनाएंगे- खेल एवं युवक कल्याण मंत्री विश्वास सारंग ने कहा- वाटर स्पोर्ट्स के मामले में हिंदुस्तान में मध्य प्रदेश का एक अलग स्थान बना है। मुझे इस बात की बहुत प्रसन्नता है कि यहां खेलों का उन्नयन हो रहा है। जब कांग्रेस की सरकार थी तो खेल का बजट केवल 6 करोड़ रुपए हुआ करता था। अब 600 करोड़ का बजट है। हम 11 एकेडमी चला रहे हैं। हम खिलाड़ियों के लिए नई-नई योजनाएं ला रहे हैं। इस बार नेशनल गेम्स में मध्यप्रदेश ने तीसरा स्थान प्राप्त किया है। वाटर स्पोर्ट्स में भी हम ओवरआल चैंपियन बने हैं। आज लगभग 600 करोड़ रुपए का बजट है। प्रदेश की सभी विधानसभा में कम से कम एक खेल परिसर जरूर बनाएंगे। खेल विभाग के माध्यम से युवाओं के कल्याण के लिए भी बहुत सारी योजनाओं पर काम कर रहे हैं। इस प्रतियोगिता में 23 राज्यों के खिलाड़ी शामिल हुए हैं। प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश वाटर स्पोर्ट्स अकादमी के खिलाड़ी रोइंग, कयाकिंग-केनोइंग, सेलिंग और स्लालम खेलों की विशेष प्रस्तुति देंगे, जिससे खेल प्रेमियों को जल क्रीड़ा का रोमांचक नजारा देखने को मिलेगा। इससे पहले सोमवार को प्रतियोगिता मे शामिल हुए खिलाड़ियों ने बड़े तालाब में प्रस्तुतियां दी। प्रतियोगिता का सीधा प्रसारण बोट क्लब सहित शहर के प्रमुख चौराहों पर एलईडी स्क्रीन के माध्यम से किया जाएगा।

विधानसभा में विधायक पूछेंगे सौरभ के राज

मध्य प्रदेश विधानसभा के बजट सत्र में भी परिवहन विभाग के करोड़पति पूर्व आरक्षक सौरभ शर्मा के कारनामों की गूंज रहेगी। कांग्रेस पार्टी के कई विधायकों ने बजट सत्र में सौरभ शर्मा और उसकी टीम को लेकर प्रश्न लगाए हैं जिनके जवाब देने में राज्य सरकार के अभी से पसीने छूट रहे हैं। सूत्र बताते हैं कि सामान्य प्रशासन विभाग के अधिकारी सौरभ शर्मा को लेकर विधानसभा में विधायकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का जवाब तैयार करने में व्यस्त है। उच्च स्तर से अधिकारियों को निर्देश भी है कि विधानसभा में ऐसा जवाब दिया जाए जिससे सरकार को मुश्किलें खड़ी ना हो। प्रश्नकर्ता विधायकों ने सौरभ शर्मा की नियुक्ति से लेकर उसकी पोस्टिंग, कनेक्शन और जांच में मिले कैश और गोल्ड को लेकर प्रश्न पूछे हैं। सामान्य प्रशासन विभाग और गृह विभाग दोनों ही विधायकों के प्रश्नों से जूझ रहे हैं। अब देखना है सरकार विधान सभा में सौरभ शर्मा केस पर कितना प्रकाश डाल पाती है या फिर उत्तर के नाम पर विधायकों को झुंझुना बता दिया जाएगा।

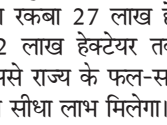

मोहन का मंत्रालय

आशीष चौधरी

बढ़ सकती है मंत्री की मुश्किलें

डॉ यादव सरकार में एक मंत्री की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। सूत्र बताते हैं कि मंत्री ने हाल ही में एक विवादित बयान देकर सरकार को कटघरे में खड़ा कर दिया। विधानसभा का बजट सत्र है और मंत्री के बयान को कांग्रेस मुद्दा बनाकर सरकार को सदन में घेरने का प्रयास कर सकती है। हांलाकि मंत्री जी सफाई भी दे रहे हैं। इधर मंत्री के विरोधियों ने इस बयान की वीडियो क्लिप दिल्ली तक पहुंचा दी है। केंद्रीय आलाकमान ने भी वीडियो क्लिप को लेकर संज्ञान लिया है और जल्द ही मंत्री महोदय को दिल्ली तलब किया जा सकता हैं।

बिजली कंपनी की कमान संभाल सकते हैं आईएएस

एक पूर्व वरिष्ठ आईएएस की स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति को लेकर अब कयासों का दौर चल रहा है। स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति को लेकर एक धड़े में वरिष्ठ आईएएस के प्रति सहानुभूति है, वही उनके भविष्य की सम्भावित योजना को लेकर भी खास चर्चा है। सूत्र बताते हैं कि सेवानिवृत्ति के बाद वरिष्ठ आईएएस अधिकारी किसी बड़ी ऊर्जा कंपनी में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी संभाल सकते हैं। इसकी वजह भी है जब मध्य प्रदेश में बिजली संकट था तब वरिष्ठ आईएएस ने ऊर्जा विभाग की जिम्मेदारी संभालते हुए प्रदेश को बिजली में सरप्लस स्थिति में ला दिया था।बिजली कंपनियां वरिष्ठ आईएएस की प्रशासनिक क्षमता का लाभ लेना चाहेंगी। बता दें वर्ष-2025 में पावर सेक्टर को लेकर कई प्रस्ताव भी निवेशकों के सामने आए।

प्रमोशन की राह और हुई आसान

पदोन्नति की राह ताक रहे हजारों अधिकारी और कर्मचारियों के लिए एक राहत की खबर है। विधि विभाग ने हाई कोर्ट के निर्देश कुछ कर्मचारियों को पदोन्नति देकर प्रदेश के अन्य विभाग के कर्मचारियों के लिए भी प्रमोशन की राह को कुछ आसान किया है। आदेश के तहत विभाग ने भृत्य से सहायक ग्रेड 3, भृत्य से दफ्तरी और दफ्तरी से सुपरवाइजर प्रमोट किया है। यह पदोन्नति दिनांक से 30 नवंबर 2024 तक पदोन्नति काल्पनिक है और 1 दिसम्बर 2024 से पदोन्नति के आर्थिक लाभ मिल सकेंगे। यह पदोन्नति न्यायालय में लंबित याचिका के अंतिम निराकरण के अधीन रहेगी।

जहरीला कचरा निष्पादन चिमनी लाइव

देश के इतिहास में संभवत यह पहली बार हो रहा है कि कचरे के निष्पादन का लाइव टेलीकास्ट हो रहा है। जी हम बात कर रहे हैं यूनियन कार्बाइड के जहरीले कचरे के निष्पादन की। मुख्य सचिव अनुराग जैन की पहल पर राज्य शासन ने पहले ही दिन से जनता के बीच किसी प्रकार का भ्रम ना रहे, इसलिए पीथमपुर के पास तारापुर गांव में जहां यूनियन कार्बाइड के जहरीले कचरे का निष्पादन हो रहा है, उस फैक्ट्री की चिमनी की लाइव टेलीकास्ट की व्यवस्था की। शासन ने स्थानीय स्तर पर बड़ी स्क्रीन के जरिए चिमनी से निकलने वाले धुएं और उत्सर्जित विभिन्न गैसो के मानको का भी लाइव टेलीकास्ट किया।

अंबेडकर जी की तस्वीरें

डॉ बाबा साहेब अंबेडकर की उपेक्षा को लेकर कांग्रेस और भाजपा एक दूसरे पर तीखे आरोप लग रहे हैं । वहीं राज्य की भाजपा सरकार ने एक कदम आगे बढ़कर वल्लभ भवन की तीनों बिल्डिंग के प्रत्येक तल पर डॉक्टर अंबेडकर जी की तस्वीर लगाने का निर्णय लिया है। वल्लभ भवन की बिल्डिंग-दो जहां मुख्यमंत्री का कार्यालय स्थित है, के प्रत्येक तल की दीवारों पर डॉक्टर अंबेडकर जी की तस्वीरें भी लग गई है और अब मंत्रालय की तीनों बिल्डिंग में अंबेडकर जी की तस्वीर लगाने की तैयारी है। हालांकि तस्वीरों को लेकर एक संगठन की भूमिका भी सामने आयी है जिसमें एक सीनियर आईएएस प्रमुख हैं।

महाकुंभ की हर्षा रिछारिया पर आ गई नई 'आफत'

भोपाल में 55 फेक आईडी पर कराई एफआईआर

भोपाल। प्रयागराज महाकुंभ से चर्चा में आईं हर्षा रिछारिया ने भोपाल साइबर क्राइम थाने में फर्जी सोशल मीडिया अकाउंट्स के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है। इन अकाउंट्स से उनके नाम पर धोखाधड़ी, स्कैम और एआई की मदद से आपत्तिजनक तस्वीरें और वीडियो बनाए जा रहे हैं। इससे परेशान हर्षा रिछारिया ने आत्महत्या की भी धमकी दी थी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। हर्षा रिछारिया को सबसे अधिक प्रसिद्धि प्रयागराज महाकुंभ से मिली है। यहां से वायरल होने के बाद वह इंटरनेट सेंसेशन बन गईं। अब वह ऑनलाइन उत्पीड़न का शिकार हो रही हैं। कई फर्जी सोशल मीडिया प्रोफाइल उनके नाम से बनाई गई हैं, जिनका इस्तेमाल धोखाधड़ी और स्कैम के लिए किया जा रहा है। इन प्रोफाइल से फर्जी विज्ञापन बनाकर पैसे मांगे जा रहे हैं। वहीं, हर्षा रिछारिया ने कहा कि मेरे नाम से फर्जी अश्लील वीडियो बनाए जा रहे हैं। इसकी वजह से उनकी छवि खराब हो रही है। हर्षा ने भोपाल साइबर क्राइम पुलिस स्टेशन में लगभग 55 ऐसे फर्जी अकाउंट्स की जानकारी देते हुए शिकायत दर्ज कराई है। हर्षा ने बताया कि महाकुंभ के बाद से ही

उनके नाम से फर्जी अकाउंट्स बनाए जा रहे हैं। इन अकाउंट्स से तरह-तरह के स्कैम और फ्रॉड किए जा रहे हैं। हर्षा के मुताबिक कई विज्ञापनों के वीडियो बनाए जा रहे हैं और पैसे की डिमांड भी की जा रही है। इसके अलावा एआई का इस्तेमाल कर गंदे फोटो, वीडियो बनाए जा रहे हैं। उन्होंने पुलिस से अपील की है कि दोषियों के खिलाफ जल्द से जल्द कार्रवाई की जाए। हर्षा को उम्मीद है कि उन्हें जल्द ही न्याय मिलेगा। इससे पहले, हर्षा ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो जारी कर आत्महत्या करने की धमकी दी थी। उन्होंने आरोप लगाया था कि कुछ लोग उनकी बढ़ती लोकप्रियता से जलकर उन्हें बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं। हर्षा ने कहा था कि मेरे करीबी लोगों ने ही यह काम किया है। मैं सुसाइड नोट में उन सभी लोगों का नाम लिखकर जाऊंगी। उन्होंने कहा कि मैं बता दूं कि मैंने कभी ऐसा नहीं बोला कि मैं साध्वी हूं, मेरा एक प्रोफेशन था, जिसमें मैं काम करती थी। ये लोग इस हद तक उतर आए कि एआई से फेक वीडियो एडिट कराए। पिछले 10-15 दिनों से सर्कुलेट करा रहे हैं। रोज 25-30 मैसेज आ रहे हैं। हर्षा ने यह भी कहा कि वो अपने धार्मिक कार्यों को जारी रखेंगी। उन्होंने कहा कि मैं अपने फैसले पर अडिग हूं, जब तक मेरी सांसें चलेंगी, मैं सनातन धर्म के लिए काम करूंगी, लेकिन कुछ लोगों को एक लड़की का आगे बढ़ना नहीं देखा जा रहा, इनके नाम मेरे पास आ चुके हैं।